



सत्येन जोशी

# कंवल् पूजा

(राजस्थानी भासा मे पनढो इतिपासिर उपयास)

ललित प्रकाशन  
जोधपुर-७

लेखक सारू प्रकाशक  
ललित प्रकाशन, जोधपुर-७

पत्नी छापी बि०स० २०३१

कोरणी गोविंद कल्ला

# कंवल पूजा

(राजस्थानी भासा)

सत्येन जोशी

(सारा अधिकार लेखक री)

**KANWAL POOJA**

(Rajasthani Novel)

*Satyen Joshi*

**Lalit Prakashan**

JODHPUR-7

मोल दस रुपिया

Price Rs 10/-

छपाइ

हिमालय प्रिण्टस जोधपुर

सन् १९६१ में पलखी बार जसलमेर गयी भर तद सू लगोलग जुलाई १९६५ तक उठई रैयो । जैसलमेर री घोगा धरती रो हवा भर पाणी में जाणु काई जाडू हो कै म्हारो मन उठई रमग्यो । जसलमेर म्हारो रग रग में अजू रम, भर ता उमर म्हार रु रु मे जैसलमेर री सोरम भावनी रवैली । सोन जड पीळ भाट री हवेलिया मिन्दर, भूरतिया भर रवासिया रो निरमळ भर साबी सनह गडमीसर रो पाणी, गोरा चौक भर मोटा मोटा घोरा रो घूड, म्हार मन न मोय लियो । लागै क म्हे जलम-जलम सू जसलमेर रो ई रैवासो हूँ । छोट सू भोगी, हर जात धरम रो, दूकानद र सू लेय सरकारी मुलाजिम भर सामाजिक कायकर्तावा सू फोळछाण, मोद भर मुळक मरी बाता भर लाड कोड रो मनवारा कद भूल मकू ? नी भूलू ।

राजस्थानी भासा में लिखण री प्रेरणा मन भइसा (जन कवि उस्ताद) सू मिळी, वारै ई अडियोडी माटी हूँ ।

सन् १९६३ में जैसलमेर हाई स्कूल में, इतिहास रा अध्यापक सरगवासी श्री भभूतिमलजी परमार सू फोळल -ही । वे ई साव पूछ तो मन इतिहास री अलेका कथावा मे रम फोळर पायो । वे ई मन इ उपन्यास लिखण री प्रेरणा दी । इ बिच्च मास्टर साव भवाणचक देवलोक व्हेगा पण वारी दियोडी भभून भनू म्हारे कन सम्भाळियोडी ही ।

इ उपन्यास न भेकर लिखियो, बेलिया न सुणायो । वा री समझावण भर मोळावण सू केई कुमिया पूरी हो भर उपन्यास री काया पलटगी । कुमिया अजु बी -हे सकै भर हैला, पण अ भागै बघण में मददगार -हैला ओ ई विस्वास है ।

उपन्यास रो भाव भोम भाये सरुपात में की कवणी अबली रैवला, पण इतिहास री आधार लेय नै उपन्यास लिखण र कारण, इतिहास री चरचा करण मे भणूताई निजर नी भाव ।

सू तो इतिहास री साव, नुवी नुवी खोजा सू बगळती रव, इ वास्तै इतिहास री आधार कूडी पड जावै, पण इ कथा मे जित्तो बा कूड निजर घा सक वो कल्पना री साव है । इतिहास नै कूडी बतावण रो हठ नी ।

गजनवी री मुलतान मंगूद, ईसवी सन १००४ में भाटी राजा विजयराज मापै हमलो कियो । इतिहासकार, भाटी राजा विजयराज न भाटिया भाटा भीरा

घर भाटियानगर री राजा बनायो है । ममूद र सम र भाटी राजा री राजधानी 'तम्रोटे' हो । इ बात री प्रमाण जसलमेरु री तवारीख जेम्स टाड घर मुहता नणसी री हयान इत्याद सू मिले । इ सारू म्हारो श्री कौल है क श्री हमली तम्रोटे माथ दिहो ।

प्रो० मोहम्मद हबीब (मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ में इतिहास घर राजनीति शास्त्र रा प्रोफेसर) आपरी बोबी 'सुलतान महमूद आफ अजमी' में इ हमल रा कारण दरमाया है ।

अलतबी घर प्रो० हबीब री बखसो है क राधा, हारग्यो घर दुस्मण र हाथ पडण री जागा कटार साय मरग्यो । उसो भागि बँवै, क सुलतान जद पाछो जावण लागो तद बी न बीत फोडा पडिया, बी री सारी फौज नष्ट-हेगी घर अकलै सुलतान रा प्राण बचिया । जसलमेरु री तवारीख घर मुहता नणसी री हयात में लिखियो है 'राव विजयराम माथ सिध बानी सू मोटी फौज भाई । राव बडो अताहा सिद्ध हो । बी ऊपर देवीजी री पूरण किरपा ही । वो मन म सफल कियो क फौज पाछो जाव तो बबलपूजा कट । बात कियो नै अताई नी । देवीजी रघ भाया । वेठ हुई । विजयराम जीतो मुसल भागा । जद राव कबल-पूजा करण सारू तलवार काँधनू माण्डो तो देवीजी बोलिया, मा मां । इहे पूजा मंती । घर देवी आपरी भूड दी । राव चूडाला कहाया ।'

यां सारी बात न सोचिया समझियां जकी नतीजी मिलियो, वो इ उपवास नै पटिया सू ई हाथै लाग सकै ।

कथा में राव घर ममूद री इलावा दूजा नाव घटनावा घर बताए, उपवास री जरूरत सू पदा दिहा, वयू क इतिहास, अपण भाव मे बीत ई खुली बिष है, घर जद तक इ न बीजणो नी कियो जाव तद तक श्री रुच कोनी ।

विश्वास कट क श्री उपवास राजस्थानी भासा री पढाकडा, इतिहासकारा, आलोचना घर चायेतो न दाय आ सकता ।

जोशियां री खटकल'  
जोधपुर १०

सत्येन जोशी

कान खड़ा रहेगा । नए कानों में घुमगा । सुरता, श्रवण रें सरणें पड़गी ।

पग, काना रें हलाया हालण लाग । भीणी भीणी चाँदणी बादला  
सागें भाँख मिचूणी रमण म मस्त हियोडी । काळजें म अक उजब तिरस री तूठणी  
रहेगी । मिनखा रा कान, पूर सरीर अर मन न मि तर सक, आ वात भाज बी नें  
पलपोत समझ मे आई ।

ननी सुई रें नाक मे सूँ निकलनोड पतल डार ज्यूँ, भीणी राग मे गावणे  
री सुर, जाणे किए दिमा सूँ आग र काना न बाघ नियो । बावला कान बी सुरीलो  
राग री पोछी करण सार पगा न हुकम हलायो । पग आग बधला सर हिया ।  
रात री पलो पोर है ।

उबासी तर उबामी । दो दिन र ओजक री घाडग । वो दो-यूँ हाथा न ऊचा  
उठाव, सरीर नें ताणियो, अक भटकी दियो अर पाछो समझियो । थाकेल न बाधिया  
भावतो जाए ओ अक घोर माथ बठग्यो । च्याहँ कानी भीठ बीडाई अर घोरा री  
मुलमली गादो माथ पसरग्यो । मुठिया में रेत भरन वासूँ पाछी रेत नें रलफावण  
लागी । सूँ सूँ करती बायरिय री अक भीली आयो । रमत मे घा दी पड़ग्यो । सरीर  
में घोड़ी सी धूजणी छूटी । वो ठठ'र आलस मोड़यो । उबासी, भागल खुडकाई,  
बपडा न भटक र वो ऊनी हयो । अक दिन मारु रैण मूटिया । आह्या खोनी ती  
थी कन अक दूजो ऊभो हो ।

‘बोल भाऊ !’

‘ठाकरा ! लूट री माल यूँ कोनी पच ।’

‘हूँ ?’

‘हाँ ।’

‘मा तलवार देखी ?’

‘ही थीं ही ।’

‘पणो दाँता सूँ तोड़ दी ।’

‘हूँ ?’

‘हाँ ।’

‘मा ताड़'र बताव, जे जवान री पाकी रहे ।’

‘तड तड ।’

धी न चतो आयो जद बी रें हाथ म तलवार रा दो टुकड़ा हा । वो साव  
भरली हो । वो दूजोड नें जोवण री गरज सूँ पछी-उछी निजरा दोडाई, पण कठई

सूँ बास नी भाई । नीचै मुकुर, वो पजा रा सनाए हेरण लागी । बीं न ऊँधी दिसा में पगरखिया रा सनाए निजर भाया, पण भ सनाए ती वो री खुदरी पगरखिया रा हा ।

इ पैसा व, वो की सोच, बीं र काना न कोई सुर बेघम्पी । वो बावळी बतूळिये दाई बीं उवाज री दिसा में नाठण लागी । जो तिसा में वो दोह्यो जावती, सौमबी दिसा सूँ बादळा रा मूण्ड चंदरमा न डाक र सपाट दौड रया हा । बीं र सरीर माय बारी बारी सर चानणी घर छिया र र न ध्तेती । अक छिन साह बीं न भावरी भसवारी री चेतो भायो ।

प्राज वो घणकरी मास लूट'र लायी है । साण्ड माघ सोन रा प्राभूमण चांदो री टिकलिया घर मोतिया री बेसुमार जकीरो । दो मोटा बोरा में लादियोडी । प्राज वो अक चवदै बरस र छोर री गरदन सड़ाई, अक मरद री टांगा तोडी दो मिनली न तलवार सूँ घायल किया । अक बीस बरसा री बिघवा नै राण्डापै री जूए सूँ मुगती दिराई । सिइया पडया पला वो बीव में घुमयो । अक मुलतान रा सिपाई राज र परवाणे बिना नी भा सक । वो हमें बेफिकर है ।

हा म्हा बीस बरसा री जवान है पूरी साकी छ पुन री, सीनी घस्ती प्रागळ, हाथ मोडा तक डीगा, रग रातो डोल लौठी । ढकणे में बीडियोड काच मे मूण्डी देल मुळकियो । इ बी खोल, अक किरचो बाक मे पातियो मूछा माय हाथ फर, बट लगावण साह भांगळी घर भगीठरै बिन्हे मूछा रा नैना बाला न लम र भगोठ री अक रगडकी लगायो ।

गावणे री भीणी घर मदरी सुर ठेठ काना कन भाय पूगी । हमें बी रा कान घणा उतावळा हेगा । बी न लागी हमे जे वो इ सुर न बच नी कियो ती बी री काळजी काट जासी । बी री अक हाथ काळजे री जागा जा पूगी । बीं री काळजी जोर जोर सूँ घक घक करती हो । बीं न पसरियोडा, डीगा घोरा र सारल पास सूँ लाय री लपटा उठतो सो दीखी । लाय र माय सूँ चिणगारिया फूटती घर वा र फूटण र समच ई चीसाळचा निकळती । वो दौड न घोर र ह्मर माय चढयो । छठ हमे लाय री लपटा कोनी हो । वो बीजोड पाम री ढाळ उतरण लागी । बीं न लखायो वो समन्तर र माय उतर भायो है । बी री कण्ठ सूख रयो है । वो दो मू हाथ नीचा लेजा र घोबी भरियो । घोबी भर मूण्ड भ सबडकी लियो । रेत सूँ जोम भरगी । मू धू कर वो रेत न मूकण लागी । इतर में बी र काना मे कोई मग्घी पुनी सराजी ।

‘पूनम ।

है ।’

‘माव, म्हार लार भाजा ’

बी र भाग कोई भी ही, पण बी न लागती क वो क्खिणी रो पीछी करती बाल रयी है ।

भागली एक मि र रा हिवाड सटसटाया । माप सू भ्रम भ्रम भाभरिया रा बोल सुणीज्या । वो हिवाड खुलता ई भ्रम वार रो पीछी करती भाग बघण लागी ।

मोजडिया बार खोल, वो पग उबराणी न्हंगी ।

‘वाणी ।’

‘घठ वाणी रो काई काम ? दाघ पीवी ।’

वो सुप सुप सात घाठ चुल्ला खसोड लिया । हम की साम में सांस भायी । नणा मे भ्रम धमक बापरगी । हम स की ऊजळी घर साफ बीसण लागी । दस पदरा अपसरावा रो भ्रम झूलरो भाव बी न घेर लियो । वो भाग बघण लागी । घेरी बी र साग साग भाग बघण लागी । सामे सिचासण माथ भ्रम बोल ई फूटरी अपसरा बीणा बजा रयी है । वो सुर न झोळल लियो । वो अपसरा रो राग खीर दाई बी कानी लपकी । बी न लागी क वो बळ रयी है । वो बी अपसरा कानी दो यू हाथ पमारया । झूलरो भ्रमोठगी । अपसरा बी र बाधा म झूलगी । बी न लागी, बी र सरीर मे लाघ झुळगी है । वो पाछो झूलरें सू चिरगी । फेर भाग पावण्डा घग्घा । भ्रम अपसरा पीछी न्हंगी । भीत माथ भ्रम पूतळी मग्गी, हाथ म बीणा लियोडी, भागळिया तारा न झभोड रयी है । नैण भावा मूर्दिघोडा, वा नीचो धुन कियोडी मगन है । वो हाथ लगायी । भागळिया हेम सू ठरगी ।

‘भा तो भाट रो मूरत है ?’

ही ही कर झूलर माथ सू भ्रम अपसरा हँसी घर मूरत र बाजू जाय चिचगी । भ्रम पग र भ्रम भ्रमोठ माथे पूर सरीर रो भार सभाळ, बीज पग न लारली कानी घोडी ऊचो कियोडी, द पग रो पजो बीजोड पग रें गोड रें लारल हिम सू भ्रमोठो भ्रम हाथ सारस रें पल दाई फलियोडी हवाळी, कळाई सू ऊपर उठियोडी । भ्रमोठ घर बी र पासती री भागळी रें मेळ सू भ्रम छल्ली बलायोडी । बीजोड हाथ री भ्रम भागळी नीचल होट नै हूव बाकी भागळिया भ्रमोठ माथे भ्रम बीजो सू चिचियोडी । चिनवन घोडी लागी । कमर मे घोडी सी घांट नणा में उमाद, होटा माथे मोठी सी मुळकण । गूथियोडा नैसा री चोटी सांग ज्यू घाटा बायोडी कमरबाद सू घोडी नीची । पेट म दो सळ । सूटी फांक री सकल घारण कियोडी ।

भ्रम अपसरा पगा मे भाभरिया बाधण लागी । भ्रम दोयू पपा रा पजा



छोड़ा कर सार सू धेड़िया न ऊँची उठाय घागस में बिपौती । हाथ दोनू, माथ सू थोड़ा ऊपर जाव । अगोठा घागस म बिडियोहा । पूरी ऐनी माथ घागळिया घाव रो जोड़ावत सू नुझा घडायोडी ।

‘ई न छुद र रूप रो कीं धणी गुमान है ? व पछ धा खु ऊपर छुई है ? व सू दरवण में मूण्डो देव रयो है । भेक हाथ सू मांग भर । अझ मांग नो मरीजी ? आ सरीर न सू क्या कर मोड ऊभी है ?’

वो घटल सू काच निकाल छु री मूण्डो की मे देलियो । डबी रात र अरु बिरचा बाक मे घनी । की सवां लानी । अरु बिरचो बिनरनी । सीरी घायणी । वा न ललायी थो हलकी रहेगी है । जीव म साराई घायणी ।

ठीक ! तो ई र गल म मग्न लटकायोडी है ? की री हाथ मग्न माथ घाव दवण साह लरकियो । घागळियो म अरु भन्नाटो चालायी । भाट री भूडी सागी । वो घागळियाँ १ बाक में पत चुस मो । बाग बाड दो चार भन्ना टिया । अझ भन्नाटो चातौ हो । वो घागळियाँ पाछी बाक म पतली ।

वो बिगनी करी पूरी सोळा घवसरावां ही । गोठा री सोठा जाणे भीना म बीडियोडी । भेक अडिया ऊँची कर, पजा र गल गोडा कुहाय नीची रहेगी ही । हाथ जोड़ र बियो र ध्यान म मग्न । अरु री अरु टांग पूठ रानी ऊँची उठायोडी । की टांग र अगोठ न कीं री भेक हाथ घपड राखी । बीजी हाथ माथ ऊपर हपाळी न मुगट बलायोडी । भेक केई भेक टांग ऊँची उठाय गोड माथ टक रानी । हाँ आ बसरी बजा रयी है । अरे ? आ इ री अरु माथण कमर ऊपरवे सरीर न लागी कर दोनू हाथ ऊपर उठाय मजीरा बजाय रयी है । अरु गरुड री मुद्रा बलायोडी ती अरु मोर नाक मे मग्न । अरु र हाथा म आरती री गाल । हाँ ओ पूजा निरत है ।

वो चमकायो । आ कुण ? सांवी माँ जायी ऊँची है । अरु देखो हमे मरम कर नैणां न हाथां सू ढाप लिया है । वो आपर अरु हाथ सू खु रा नण ढाप लिया । आगे बघायी । वो री हाथ नला सू रिगम सीन माथ घायणी । वो खु र सी ? १ मुठ्ठी म भरण री मसखरी करी । वो र मुण सू भेक बिमकारी निबळगी । वो दोनू होटा १ घायनरी म दबाय वा ऊपर जीम फेरी । वो १ लागी कीं र होटां सू सत चुव ।

हमे वो माँयती घेर म जाय पूगी । वो सोचियो—लोण का री कित्ती घन हो ? कित्ती फुरसत हो ? कडो चरही हो ? वो मन म मकळव लियो वो अरु मिंदर चुणवासी ।

वरकमा म बी भेक अरु भाट माथे पूरगी गढन कियोडी, भाँत भाँत रा बेल

बूँटा । अक्क अक्क भाट ऊपर अक अक जोडो लुगाई मरद री, मदगीलाई में अलू भिण्डो । वो निरणी बियो—आगला लोग कितरा बेमरम हा । मिंदरा में अँडो मूरतिया लगवण री काई काम ? वो गिणनी करो, कोई चार बीसी ऊपर चार मूरतिया री, मुतलब अक ई निकलनी । वो अमल री अक किरवी बाक मे घरी । डब्बो रै काच सू अक मूरत माघ पल्लकी करण लागी । इनर म दो लूठा सरीर बी री दोयू हाथा ी काठा कस'र पकड़ लिया । बी ी घीस'र अक कोटडो में नैयग्या घर जोर सू घक्री देव आगणे पटक दियो । सरीर अदीठग्या ।

इ कोटडो मे सामोसाम देवी री अक मूरत । जागती दो जोता । धूप घर केसर री घोरम घोर मक । थोडो सी धुअी कजळोचती । अक्क मडद काळो भस जेडो डोल, डरावण ीण, मोटी मोटी काळा कसा री सटा बिलाड माथे तेल ओपडियोडो । होट अडा राता आणे रगत घेषडियो । उमर घघगावळी । पतीस—चाळीस री डी । सामो अक सोळा सतरा बरसा री काचा कोमळ नार उघाडै डोल ऊमी है । इ ी कोई लाज सरम बी कोनी ? वो मरद दाह री अक तासळी बी ी धामियो । वा गट गट पीयणी । ीणा मे उजव समाव भर, वा ई नुवाडै पुरस ी इचरज सू निरलियो ।

तू तू ।'

है ! अर तू पू न म ।'

तू म्यारळी नांव क्यान पाणे ?'

नांव काई म्है त्यारळी पूर खानदान ी जाणू ।'

'पण तू थोई मुण ?'

'क्यू ? तू मी उठावण री सोवन नी खानी ? ले उठाली हम ।'

'पण ओ मिनख ?'

इतर म पावती ीठी मिनख अक तलवार वा दोयू र बिची ताणुनी ।

'बळ सू जीनी भोगी, उठावी । पण याद राख, अेष आगोडो जीवती पाछी कोनी जा ।'

मोघजी तलवार ?

'नामरद ।'

'यू ।'

'पूनम !' वो आँख्या बार काड तलवार पूनम सांभी तोणी । पूनम अक लात री मारी अर तलवार नोचै पडणो । पूनम तलवार माथे पग घर बो'थी नामरद । बळ म्है ती उठा पण, घर ले ल तलवार ।

वो पूरी तागत लगाई पण पूनम री पग टस सू मस नी हिथी ।

ठीक म्हे फसलो करू ।' नारी मुर बोल्ची ।

'मज्जर ?'

'हां ।' दो-यू हैकरी दियो ।

'कंवळपूजा कर सो मी पा ।'

कंवळपूजा ? म्हे की नी जाणू । पूजा म्हे किणी रो नी करू । पूजा तो लोग कर म्यारळी ।' पूनम बोल्ची ।

म्हे करू कंवळपूजा । मी धोंई पूरी विसवास ।'

'भू-दो ीण ।

'मू दिपा ।'

पलक भयक्ता ई बी भेंस रो मूण्डकी घांगणे खिरगी । नारी बी रं ठोकर मारी ।

पूनम रो हाथ पकड नारी बी न बार ल्याई । झ घारं म जाणे कितरा पागो तिघा चढी, उतरी, फेड चढी : भग्यारो अणुबाण सूझ नी, हाथ न हाथ । पूनम न लागी, कोई बी न काठी भीच लियो हे । बी न कठई सू निवास मिळ रयो हे । बी रो पूरी सरीर अक सज्ज तणाव में टूटण लागी । बी बाबळो 'हे ज्यू जोर-जोर सू बकण लागी, 'यसोधरा यसोधरा' ।

'पूनम ।' नारी कडक र बोली ।

'काई ?'

'हू यसोधरा नी, चम्पा धोंई चम्पा ।'

तो यसोधरा ?

'मुळतान रो राजकवरी ? बावळी हमे देवदासी बणगी धोंई ।'

पण म्हे तो सुणीं क वा ?

हां म्हे बी बी र बार म सुण राकी धोंई अर काल न लोग म्यारळ बार म बी घगकरी बाता करेला । खर । तू मिळवी था । यसोधरा मू ?'

'हां, काई वा ?

'हां, धोंई । पण तू देख न बीच तो नी ?

'म्हे काळ सू बी डर कोनी ।'

'काला काळ मू तो स कोई डरे ।

हू कोनी बीवा ।'

तो पछ भाव भाव तन मिळाय दू काळ मू ।'

चम्पा पूनम न नावा घोरां माथे ले पाई । वा अजु उघाडी ई ही । पूनम रो चानणी मे वा न निरख पूनम रो घांख्यां फाटी रंगी । घोरं घोर वो चम्पा र रूप नै नैणा सू पीवण लागी ।

‘तन सामत परमातमा खुद बैठे’र घड़ी हती?’

जम्पा खुद री सोभा गुण सरमायगी भर नए नीचा कर लिया । नए नीचा करता ई, बी न चेतो आयो के बा लाज छिपावए सार की कोनो हो । वा पूनम रँ सरीर भू ढाप लीवी खुद री सचाढी देही ।

धाम धीमे पिघलए लागी हेम । अचाणचक बतूळियो बावडियो ।

## ( २ )

तनोट छूट रँ समन्दर मे बसियोशो है ।

छठे भू बीस पच्चीस कोस दक्खण पूरब में मगरा भर छोटा-मोटा झगर हए बात री साल भर के कोई जुग म अठ अघाम समन्दर हबोला लेती हो ।

भाटी राजपूता र हए दुरगम गढ तनोट न पास पाडोस रा रवासी ‘नगर’ भर सुनतान भैरूद गजनबी भर उलबी भाटिया मगर र नाँव भू भोळलै । तनोट गढ री निरमाण, राजा केहर आपरी कुल देवी तन्नोराय रँ माव माघे सर कराये एए गढ री निरमाण पूरी भिया पैसा ई वो देवलोक हेगी । बी रँ सारे बी री बेटो राव तन्नो, इ गढ री निरमाण पूरी कियो । त नी री पाटनी बेटो राव विजयराज हो । तनोट र पच्छिम मे सिन्धु नदी बौवनी, भर उठ ई सि घ प्रवेश हो जठ वाराहा री राज हो । दक्खण पूरब मे मुस्तान री राज हो । वाराह राजरी सोबा, तनोट राज भू मिलनी हो, इ वास्त छोटी मोटी छटपट रात दिन व्हेती ई रैती । वाराह, भाटिया री बादुरी भर बुतराई भू मन ई मन में बलता । वे भाटिया रा पुतनी व्हेगा । वाराहा री भी बील हो क तनोट री जमी बारी है भर भाटी छठे माहाणी कबजो कर राखियो है । ई सार वाराह, भैरूद री पूरी इमदाद देवए री बचन दियो ।

मुस्तान मे सगा राजपूता री राज हो । सगा री भी तनोट माघे भाल बलनी । बा री बी भी ई कवणो हो बी भाटी राजा वा रँ राज री घणकरी जमी दावनी है । विजयराज रँ बाप तनो रँ जोवता यका भी वाराह भर सगा मिल’र मुस्तान कानी भू तनोट माघे हमलो कियो हो । चार दिन तक घमसाए सहाई थानी । सगा साथे म्लेख यवन खिची, खोरर जोड़या, जुद घर सध्य इत्याद बी घोडा माघे गीठ तकरीबन दस हजार री पीज लेय री पावो कियो । ई में वे खास रूप भू हुगेन शाह री इमदाद सी घर बी री अगाही कर दियो । बीये दिन राव तनो आपर बेटे विजयराज रँ साथे दुरग भू बारै घाय जुद्ध कियो । बाप-बेटा मिल नँ दुममणो री भूछा रणदोळिया । सबभू पैसा वाराह भागिया । वा पछ सग यवन,

म्लेच्छ लगा इत्याद जान बचाय उल्टा पगा भागा । ई जुहू मे भाटिया री जीत सू डरी भूटा (बूग) राजपूत, विजयराज साह नारळ भेजियो घर भापरी बेगे परणाय बेलीवे जियो ।

तनो पाछ राव विजयराज निघासण सम्भाळियो । की बरसा पाछ मुल्तान माघे भरब रा करमाते मुसलमान चढ घाय। घर लगा री जहा खो दी । राजा मारघो गयो ।

तनोट र उत्तर मे शाहीवस री राजा जयपाल राज करती । वा री राज पच रथ [पजाब] नाव सू थोळखोजती । अठ री राजा धनगपाल भोमू गजनवी री बीन बीरता सू मुफावलो कियो पण जीतण साह वो की फौज घर साधना री कमी हो, ई वास्ती दुखी होय र वा बळी मरग्यो । बी र सार बी री बेटी जयपाल गादी माघ ीठी । वा भापर भापरी बढळी लेवण साह बीत मोटो फौज खडी करी घर नि दू राजावा सू मदद मांगी पण भोमू री फौज र मुकाबले वो बी नी टिक सक्तियो ब्यू क हि दू राजा बी री मरत करी कोनी । वो गजनवी ी चौय दवली बबूल कर, पिढ छुडायी । भाटी राजा ई जयपाल रा मातत हा ई वास्ती बान बी गजनवी ी चौय चुकावली हो पण वे चौय दवण सू नटग्या । ई वास्ती गजावी भाटिया माघे हमनी करण री तेवडी ।

तनोट र दवलण मे लोद्व वस रै परमार राजावा री राज हो । ई री राज घानी लोदवा हो जठ सू होय र काक नदी गैरती । श्री इलाकी मगर रो है घर खडाळ र लागती ई है ।

पूरब दिस कानी भाटिया री राज खूब फलियोडी हो घर छलगी प्रलगी जय मण्डावर [मण्डार] राज री सीवा तक पूगती । मण्डावर राज फळोदी तक भायोडी हो ।

भारत सू घरब घर मध्य एसिया सू जुग पुराणी बीपार री खातो हो । या देसा री भारत सू बीपार, काबुल क घर अफगानिस्तान सि ब मुल्तान घर भाटी राज र मारग र जरिये हेतो । घरब देसा रा केई मोटा-मोटा सोगगर भारत में बीपार खातर जावता जावता रता । मध्यभारत मे जावण री सुभीते री मारग सिब भाटिया घर अठ सू बाहड रो हो । बाहड पूग्या पछ अक मारग गुजरात कानी जावतो तो दूजो पूरब घर उत्तर दिस कानी । ई मारग मे तनोट री खाम मोनव हो । घोरा र अघाग दरियाव में धो स्थान अक टापू दाई हो । जानरा सू पाकिमोडा, भूखा तिरसा सीदावग ी गठ आय सुस्तावण री फुरसत मिलतो । अठ री जळ इम रत दाई हो अर ई घरती री नह वारी सारी पाकेली मिटा दतो । अ लाग अठे दो-चार दिन माराम करी पछ मागे जावता । राजा सू इजाजत लय अ लोग दो तीन रण बसेरा अठ बणवाया ।

राजा री इण सहूलियत भर दरियादिली र बदळीं श्री मोग राजा री नेग चुकावता भर भरव री केई कीमती चीजा, गलोचा, फानुस मेवा, मुखमन जरी इत्याद राज र मोट घरता । हरेक मोट र सारीं श्रीक असफिया सूर भरयोही चा दी री पाळ बी व्हेती या री बोली भर बरताव बीत मीठी भर अपणायन भरयो हो, ई वारतो या लोगा सूर परजा री बी बीन मेळ जोळ बघयो । या लोगा र परताप सूर ई भाटी राज इत्ती नेमवसाळी हो । रता रैता की सोनगर अठ ई बसग्या । वे लोग घठ बडा-बडा गोगाम बरणाप । बगीचा लगायो घर केई कुवा घर तळाव धुनया । वाने द घरती सूर घडो लगव दिहयो क व अठ टाळ खुन्नर मुखक मे बी पाछा जावण माह राजी वाने हा ।

### ( ३ )

वृत्त राणी, लाडला भगी निजरा सूर पापरी मानेवण डावडी गुलाब कानी देस मुळक दी ।

गुलाब ! आज तो तन देखिया ई नमो चढे ई ।"

पछ एक ऊणी सास लवना वका महाराणी केरु बोली—

"जे तू महल व्हेगी ?"

"हया करी महाराणी सा ।"

गुलाब, राता मन्माता नेरा माथ पळकां री घाघी पडनी करता वका बोली ।

आज समस घणो घोई, गुलाब ।

गुलाब लिहकिया री रिवाड खोल दिया भर चवर दुलावण लागी ।

"गुलाब ! तिस लागी ।"

भारी माथ सूर केवड जळ री गिलास भर गुलाब महाराणी न निजर करी ।

'तू घजू कानी घोई ।"

गुलाब सन न सुकडगी ।

'तू नाह घोई मणसमझ, डोकी ।"

गुलाब री नगा री रावड भर चर री गोरी रग, पल भर न उडग्री ।

लिहकिया व व करड ।

गुलाब लिहकिया व द वरदी ।

'अप घा म्हाज ननी ।"

महाराणी गुलाब नें खुद री नजीक सांच, बी री भासा ऊपर नाक लगार घक साम्बी सास लावी ।

'हूँ, गुलाब ! तू साच माच गुलाब घोई वो ई रग, वो इ रूप वा ई मृगत ।"

मुरभायोडा गुलाब री वळा केरु लिहगी ।

"म्पारळी काचळी रा व घणा दीसा कर, पाव घबरीज ।"

दो हाथ महाराणी की कमर कानी बधिया, आंगठियां र परस मू महाराणी  
र सरीर मे झरणाटी चालग्यो ।

गुलाब ! तयारलो आंगठियां मू तो लाय लिळ्य ।

आंगठियां बाब मे घत गुलाब बांन ठण्डी वरण री कूडी कोसिस करी ।

‘उमिया ! दूजो डावडो कानी देस महाराणी बोली ।

‘घमदाता !’

तू म्यारलो मूण्डो काई देस ? जा चमेली री छोटी पकड त्याव ।”

उमिया चबर आंगलीं भल भोय मू घदीठगी ।

किस्तूरी !’

इग्या हे तो पलका बिछाळें ;’

“बी म्यारली तु बी घोडली में तारा झड्या व नी ?’

‘व दरमा री कसर भीई ।”

‘जा त्याव देला’

किस्तूरी उठगी ।

दासू !”

‘घमदाता, कोई वसूर रहेगी काई ?’

‘मध केला मे झणूती तेल मत सपोळ जा श्हावण री सार कर ।

दासू दांत काठती दडबडीजगी ।

‘सुंदर !’

माई बाप हयाळिया में चुकी ।”

‘इव पन आंगली घली रहेगी । देख ! इ डाव पन न घली दाब दिया ।

सर जा दाता र मला मे मीठ नाख ।

तार रगी गुलाब डावडो, महाराणी री सास मानेतल ।

‘गुलाब ! अय आ म्यारली नैडी । अरे ! घाब तू कुम्भट्टायोडी क्यू

भीई ?’

‘नी केत ? ऊ है कोनी ।”

‘गुलाब ! तयारळ सरीर मे काई वेप भीई जीव नी रहे क तन छोड ।’

‘छोड दो महाराणी सा, म्हे, म्हे ”

‘तू मन तोड द गुलाब ! भाव द, मन मरोड नाख ।”

‘महाराणी सा ।’

‘गुलाब ! आणी क्यू मन मखावे तू लुभाई नीं मडद भीई’

“महा ”

‘गुलाब ! तयारळ सरीर में उजब सुगन भीई नणो मे उजब मरनी, परस

में उजब झरणाटी ।”

“है, है—”

“हा, गुलाब ! जाणें वयू तयारळें परस मू म्है बावळी व्हे जावू ? म्यारळी काचळी ”

‘कसतू ?’

नी खोलदें घर हा म्यारळी घोटणी ?’

‘डोल ऊपर ’’

‘नी बोलत पत घोंद, डोल उघाडी ई सवावें ।’

महाराणी सा’

‘है

‘सायळा ती —’

‘है, काली निणी री दळी घोंई सायळा मडी ? केळ री पम्ब दळी ?’

‘है ।

‘हां देख, हा की देख’ ।

जाण वयू गुलाब न सहायी न वा सुगाई नी मदद घोंई बी र सरीर मे घेक भरणाटो, सरीर मे घेक सुगन नणा म मस्ती, परस म बिलगारी घोंई । वा, महाराणी न काठी पकड र बी सू कुस्ती करण री तेवदली । महाराणी मुखमल रा तरम गिई माथ लुटण लागी । गुलाब री पाखडिया बिलरगी । घघाणवक मेर बाणण सू रामत म घादो पडमो । सग डावडिया दहबडावती आय पूगी । डोल उघाडी महाराणी सरम सू बास्या भीपली ।

## ( ४ )

घरा मे घुसियोडा गैला, दिन ऊगता ई आठू दिसावां मे निकळया । रात री ठस्योडी मून बतळ री गेडिया रें सा र पाळी चासण लागी । डागर, दुवारया ह्दा पाण छोड गळिया सू बजार घर बजार सू रोई र मारय चराई घर पेट भराई री जुगाड मे जुडया । बामण, भोळी लटकाय, पेटियो पकावण री घुत मे भळूभम्यो । घट्टिया सू घमोडा खाय, घरवाळिया, पिछयारिया री रलटन बणाई । बेर ऊपर झाली घडा री घरणाट, ढंकली री डोठाई न पटकारण लागे । बाणियो बोवणी री बिळिया सू बघियोडी कलेवी साथ घात ल्यायी । बाळन, बजार मे पगत जमाय बिकण री बारी बाघण लायी । डेरा रा डोढोदार, घमलवाणी कर ह्याळी री रग पाकी कियो । ग्रिस्थो रें घरम मू घापियोडो, मदकल मुकनी, मांडाणी मन न मार, बजार री नाड पकड भावा रें भवरजाळ मे भवम्यो । बान बेंडोडो बनडी मू छा छटवाय दरपण भाय दोरी व्हेण लागी । रूपाळी मदगल मे भाभरिया रा भिणकारा सू मर्योडा काना, पिचकियोडा गाला घर चूघी ग्रंथियां



न मोली नेवनी रमत मे लागी । हळर नुव नारा री जोड री पूछा मरोड, हळ हाकण नागी ।

रण भर ठागे सून मुन्डीजता चला र नख सून निवास भर नाक सून, धूँवो ऊण लागी । छोरिया गोबर री उडीक म गळो गळो री परकमा मे पाद सून घण री सोगना तोडण लागी । फूमियो छागा न हाकल करी । साणा री टोळी लेव घीसियो घोरा मे घमा चौकडो माण्डो ।

स की बो ई है । रात नै जकी काम भपूरी छोटयो ही वो घाज पूरण करणी है । काल र उधार का आज भुगतावणो है । घावण बाळ काल री जुगत घाज रै सवाल सून सै घी है आडा आटा, पूजा पाठ लेण देण याव समपण निरावण व्याणू अमल गार, गेर गोठ, आगडा सम्प सुख दुख डार मिनल त्विस रैण, लुगाई मडद छोरा छोरिया, जड चेतन, राजा रक समा री अक पडपच । धक बी न चकाबी की चुणावी की घुडावी । की घडी, की भागी । मरी मारी । जलमी मरी । परणी अक सून दोय दोय सून चार भर घाज जितरी सरधा उतरी समा । उमाव पोमाव याव, हयाव बलाव, देलाव साड प्यार आगडा भर सम्प सग वे ई खेल । पीडिया रमनी आई भाषा रमा, भावण बाळा रमनी । ओ ई रासी ओ ई पासी । ठाळी ठाळ बवत पाणी र रल दाई है जीवण इ नगरी री । सग भापर हान मे मस्त काम म कळीजता । आळस उडावण सारु अमल दुख बिसरावण मंगल उपजावण सारु जूण मुधारण सारु दान, पुन भजन भाव पूजा पाठ । बस्ती काई है नरसिंगा री यात जुम्भारा री ब्यात मिनल जूण री भाग, बीजा रा ठाठ ।

इतिवास घणी पुराणी कोनी पण पाणी परलियोडी तलवारा री पळकी अडू आलिया म चिलकी कर । बसता इ तनोट न जूभणी पडयो पाडोसिया म । पाडोसी, जका प्रीत पाळण री जागा ईड बाधी सम्प री जागा साकी माण्डयो । ओ ई कारण है क तलवार र जक कोनी लागी । बाया मे बाटा खातर घोष नी रयी ।

चालती गाडी र पचाणचक अक धक्की लागी । पड्ड म बळ पडरयो बळण रा नथूला कुनभ्या, पिण्डलिया में मछिया चढणी । सीगडा जमा म घुमोड वे जोर सून हाक मारी । ऊपर बठी सग सवारिया हिचक सून हडबडाययो । गीत री लार रपोडी कहिया, लटकणी । मूछा र बट दवता तिरछी निजरा सून गोरडया न निरखता मतवाळा मोठ्यारा रै मूछा र बाला म ताण आययो । नणा मे मदरी जागा भी अचम्बी भर लोई उतरयो । वेर रै ठेठ मूण्ड भाग आयोडो डेरली गिड गिडी र गणल गणल घूमल र साग ई पाछी गटो बीडियो । हाथा सून रास छूटणी । नारयो मिडक र भागयो । बागण रै हाथ सून पेटियो पडयो । दो गुलरिया बोऊ बोऊ कर एक दूज माथ दूट पडया । बीच बिसरियाडी बाजरी न पाखनी ऊभी अक

गाय 'चाटगो । एक बी र सीरीं सू भिडकण लागी ती बीबोनी-बी री पूछ खावण रै लोभ मे जबाब मायै लात खाव खानदानी सुर म घषापण लागी । पिणयारघा रै माथ रा घडा घडाघड घुड माथ दुठम्या । हडबडाट म आची मूती चर, भागण री फिर मे भूरियो भाबो घोटिय री लाग देवणी भूनग्यो । बोगी, बाणियो ऊचकूक व्हेन दो रा, चार घडा गिणया । लिया बी मू, हुला गिपिया गिरायक न पाछा पकडा दिया । चोपा र हाथ सू सीजियोडी घाट री हाडी हूटगी । सुरमनी मोगरै री जागा, बलनी ऊगळी भाल लियो । बढियो तिणखला री जागा खुरी चारै घागळिया बाढली । रमभूडी ढका भगियोई टावर न खाक में दाव मग गाबा, गोबर सू लपोळ लिया ।

दम दम, दम दम घड, घड, घड, घड, घड घडाघड, घडाघड गम घड घडाघड घडघड, घम । पू पू अ पू, पू पू पू पू अ, घड घम घड घम रक रक र थोडी थोडी ताळ सू च्याक मर भूजगी । बस्ती रा मग योग हाथ रा काम छाड घडवहाय घरा र बारण आय ऊभा । सगा री निजरा गढ र बी दुरज माथ घटकगी जठ सू आभातै गुजावण वाला ततीडा ऊटना हा । स कोई बगना विपोडा अक बीज न धूरण लागी । उजब सौ घवरा ट सू काळजी थक थक करण लागी । सूधी बढती गगा म बिना काई हडबडाटै र अचाणुकक आय ह ताकाण सू च्याक मर गार गेर मचगा । जीवण अनिष्ट म भूलग्यो । आवण वाले काल र भौ सू उजब घणलगावली आवण लागी । समझारा री जुम्मी बघग्यो । घण समझा खातर आणे हगी टावरा र रासत पण मादत सारू आफन आ पडा । लुगाया घुड मायै घडी घडी हाथ फेर ऊची घटावण लागी । तीर, तनवार भाला खाण्डा री साळ सम्भाळ व्हे । देखता देखता चौबट में लोक अणुमावती भेली 'हेगो । पलक भपता च्याक मेर ऊटा माथ माथी तलवारा लियोडा अस्तवारा री ताती लाग्यो । मग अक दूज र सामी जोवण लागी । आ भेर क्यू बाजी भाऊ ?" अक घघगावळी उमर री सोठ्यार, पालती ऊभ अक दूज मोठ्यार न पूछ्यो ।

कोव ओई , '

क री ?

जु री ।

'साकी ?'

'हू '

भात्री हगी अक तीजी मिनख बिच्च बोल पडची ।

'कृण ओई घाडवो ?' पनोडो मिनख पूछिगी ।

" है कुण ? घापा रा पाडोसी, क लगा क वाराह ।' तीजीडी मिनख पाडो उधयो दियो ।

है । वा री बापडा री काई होमत ? घागलो बी खामाडी कोनी छूटी" दूजोडी मिनख बडवी नियो ।

राण्होली 'हेगो' पून रा लीरा, सूना धांगणां सू मसधरियां करण लाग्ता । भूलरिया पाणी सारू बिलसण लाग्ता । विणघट र पोचो विंगथी । डाळा सूना 'हेगा' । नागा रुख, सूख र ठूठ हेगा । अक रात भर जाय रयी बीजी रात, वामी बाता री बतळ, तीजी रात, बारिया बघगी, चौथी रात हई अणस'री पाचमी रात कवारी, बीतगी । छठी रात सातमी रात, आठमी रात अर नना रात अर गिणती भूलियोडी अक रात ।

## ( ६ )

राव विजयराज रा दम हुंजर मिथई अस्तर मस्तर सू लैस तयार हा । गढ र माय छ खण्ड बणियोडा हा । गढ र परकोट सू बिपती पठियाळा ऊपर पठियाळा बणियोडी हो । नीच सू या पठियाळा ॥ ऊपर पोंचण री मारम परकोट र मायनी कानी वा अक त्यार जियोटा पकोटा रें बिच्च हो । ऊपर नीच रा वागोनिया भीत मे अक मोट भाट न अळगी सरकाया सू ई लादना । अक अक पठियाळ कम सू कम बीस हाथ लाम्बी, मात हाथ चवडी अर पाच हाथ ऊचा ही । आग सू अ पठियाळा कवूतरा रा खाना व्हे ज्यू निजर भावती । पण अ सारी पठियाळा अक ई माप री कोनी ही । सवा री यारी यारी माप अर काम हो कोई कोई पठियाळ मे ती हुंजार सिवाई खडा है सक, जिनरी जागा हो । सबसू ऊची पठियाळ, धरती सू तीस हाथ ऊची ही अर सबसू ऊपरली आगण सू कोई तीन सौ हाथ ऊपर । गट री बेरी कम सू कम टेड दा भोल र माप ही । या पठियाळा मे जाय जाय मोटा मोटा बगरा जियोडा हा अर बार पावनी अक भत र बरोबर रा बीजा बगरा माय सू लीवियोडा हा । यारी डाळ, बारनी कानी ही । या बगरा मे गट री मायली कानी सू कोई बीज मेवता ई वा सीधी गढ र बार जाय पकती । यारा मूण्डा, मायली कानी चवडा पण बारली कानी साकडा हा । या र नडा फेह तीणा, बार दुसमण माय भीठ राकण साह हा । या पठियाळा में मोटी मोटी चार पाच भट्टिया खुदियोडी ही अर पावती लकडिया रा डेर लागोडा हा । भट्टिया माय पाणी अर तेल रा कडाव धडायोडा हा । पासती रा बगरा गरम तेल अर पाणी कूढण साह हा । इ भात कोई चार सौ कडाव अर कूडिया आठू दिसावा मे राखियोटी ही ।

अक अक कडाव सार तीन तीन र हिसाब सू भाटियाणिया तयार ही । या रे साग ई अक अक मटद सिवाई मदत मे हो । साग ई छोटी मोटी केई डोलिया अर डाला पडिया हा ज्यासू तल अर पाणी बार ऊगायो जातो । ई काम साह दो मोटा सिरदार, दस नपसिरदार अर केई मर्दानी लुगाया भुकर हो । भट्टिया, ई दग सू खुणियोडी ही क काम पटिया अ ओहर र काम में बी आ सक हो ।

तल री पठियाळा सू ऊपरली पठियाळा मे तीर-दाज हा । या तीर-दाजा रा

तीर कम सू कम पाच सो हाथ रो मार करण वाली सगती रा हा । अठ बा निचली पठियाळा दाई भीता मे तीणा कियोडा हा ज्या म सू तीर बार कानी छून्ता । अठ तीणा इ ढग सू कियोडा हा के या में सू छोडयोडा तीर गन् सू ताई तीन सो हाथ भाग ऊभी फीज र सिपाइया रे सोना न बोध देता । पण नीच सू चलायोडा तीर या तीणा माय सू गढ माय नी पुग सकता नयू क दाई तीन सो हाथ भाग सू या म तीर पुगावण वाळा तीर गज सुलतान री फीज मे गिणली रा ई हा । पठियाळा मे हजार बाण भर तरकसा रा ढेर लाग्योडा हा । या मे अग्निबाण बी भेळा हा । तिसूल रे धाकार रा, अरघदराकार, भर काटीला नुका वाळा नात भात रा बाणा रा ऊपर ऊपरी ढिगला लाग्योडा हा । तीर दाजा री फीज रा पाच सो सिपाई दा सिरदार भर पाच टोळी रत्नाळ अठ तनात हा ।

सबसू ऊपरली पठियाळ माथे डगळ भर गोळा रा तर हा । अ गोळा ऊपर सू गुहाया जाता, जका के सोषा दुसमणा माय पडता इ बारी नगनाळ सोन देता । पण या न परकावण री घडी तद भाती जद दुसमण खाई न पाट गन् री भीता ऊपर चढण री मती करती । गोळा र अकारी खाण्डा रा ढिगला लाग्योडा हा । अळवान हाथा सू फकयोडी खाण्डो शेक बार मे कम सू कम पाच दुसमणा री माथो काटण री क्षमता राकनी । खाण्डा फकण सारू अर हजार सिपाइया न खाम रूप सू सिखावण दी गई । सिखावण मे या सोषा मू भमा बन्दाया । भमा नै काट, जद खाण्डो जमी मे घुस जातो तद सिपाई न प्रवीण मानियो जातो । प्रो काम शेक ई हाथ सू भर शेक ई बार मे करणी पडती । खाण्डाधारिया रा नगेर मोव रा बणियोडा हा । अर खाण्डाधारी री खुराक, कम सू कम चार बगरा री मांम हो । या री तोल, चार सू छ मण र बिच्च ही । केरु बी या में इती फुलती हो क प्रे लोग घोडा री लगाम पकड्योडा कम सू कम दम कोस खीड सकता । खाण्डा फकण री जागा मोटी सुरवा दाई बगरा हा ज्या मे शेक साग चार भास्मी खड्या र सकता । पण इता मोटा बगरा राकण री धेय प्री ई हो के शेक सिपाई घठी सू भाराम सू खाण्डो फक सक । गोळा री भार बी चार मण सू लेर दम मण रे बिच्च ही । बगरा ताई यान पुगावण सारू घाटिया बणायोडी ही । कम तागत सू ई या न ऊपर खिसकाण री जरूरत ही । बारली ढाल सरू व्हेता ई गोळी अणण भाग बारली कानी लपकती । घड्डी निया सू धेग बध जातो भर बार खाली जावण री कम गुजाइस रती ।

प्रो गढ इतो मोटी हो क कम सू कम पचीम हजार मिसल शेक साग समो सकता । गढ म बीत सारा मन, समा अवन राजमिधासण साम फेलियोडो अणणी सिपाइया भर चाकरा र रवण खातर घर बी बणियोडा हा । बीचोबीच में देवी

तमो रो जमी व राजा रो कुल्लेवो ही । विसाल भूमी की बारीकरी रो बेजोड नमूनी,  
मिन्दर हो । मिन्दर र भाष सू ई सुरङ्ग रो मारग हो । सुरङ्ग त नोट सू घणी  
भाषी जाय ठंठ लडाळ भाष पूणती । देवी रो श्री मिन्दर की जमीन ई भाष धुतिपोडी  
वै ज्यू बणायोडी हो । गरमग्रह तो वा सू जीवो घायोडी हो ।

राव विजयराव जुद्ध सारू पुरी त्पारी वर चुका हा । सार्के रो तडो जाता ई  
जाणा जाणा सू भाव रा तिरदार भाव भापरी सरदा सारू घोटा ऊन धन धान  
सस्तर इत्याद ल र कदका ई तम्रोड पून चुका हा । छत्तीस भातरा घोडा भेडा हिया?  
मबीहू जका निरभ हा । बिना कोई हिकर ई य घोडा मिडणी जाणना २ ग्रहराव,  
जका सापा रा राजा दाई चाल चलता । ३ घाफू जका नितराचार पाच तोला घमल  
खाय जाता, घोडो छु मर जावती पण सवार न रखेतेत सू बाढ घळणी ले जायन  
ई प्रण त्याजती । ४ मजोका, ज्यान मेक दिन रो चन नी पडती । ५ मष्टपीर  
जीण कसियोडा घसवार न उवाया रखेतेत में मडिया रता । घेराकिया खास करन  
जुद्ध सारू त्पार करयोडा हा । ६ किरणाला, घणा फूला घर किरणाल दाई दिव दिव  
करण वाळा ७ कोडीघर, जका रो मक मेक रो मील करोडा रिपिया । ८ खबर,  
जका जद दोडता ती घडी सलावती व घोडो जमी भाष नी घममान मे सड रयो  
है । ९ चक्षलला ज्यारा नण गता जाण सोई वार नैला मे मष्टपीर उतरयोडी  
ई रव । १० चबळ घोडा ११ लोत्तार, १२ पमग १३ मुसकण इत्याद घणा ई  
घोडा भेडा हिया । १४ पणघर, ज्यारी घाटकी घर किलङ्गी नैपनाग  
दाई १५ वपसकडवाळा ज्या सू भूसाकडकी बी मभीत व्हे जाव । १६ मलफाणी  
घोडा सेर दाई उछळ न दुसमण भाष दूट पडता १७ मुनकणजात रा मुस्की छोडा  
१८ हेरू, जका दुसमण न हेरन वार करता, १९ सपतास जका सूरज ई सात  
घोडा री सगती वाळा । बीजी भात रा घोडा म २० विडवा २१ हेवर २२ साकुर,  
२३ लगा, २४ भासग २५ उरिवा, २६ मालाणी, २७ सि धबळ २८ मुलतानी  
२९ चितकबरा रो ती कोई छे हो न पार । भात भात र गुणा वाळा घोडा रो  
जमघट लाग्योडी हो । ३० पाणीपवा जका पाणी में तिरता ह्या घसवार न  
ऊवाया मोरवी लेता । ३१ गनेटिया, गणापार री तळटी रा ३२ हसजादर, ३३  
उडणभ्रमर, ३४ ऊपरस्या फोरणा (ऊघा फिरन वार करणवाळा) ३५ चपल चरण  
विस्तीण घर गालिहोनि प्रतिष्ठा सिद्धा घोडा बी विजयराज रो फौज मे सामल हा ।

या घोडा न गवा सिनान कराया । गीठ ऊपर चन्दन रो लेप कियो घर पाच  
वर्ण वाळी जीणा या ऊपर कसी । जीणा मे रखपघर जीण पघर गुडिपघर,  
लोहपघर घर कातनीयानी पापर अणगिखन ।

नोट घोडा, जीणा घर पत्ताणा रो बखान का हड द प्रबन्ध सू लियो गयो है ।

ऊटा भर साण्डा ऊपर पल्हाण कसियोडा हा । पल्हाण बो पांव भात रा । कुली कुकूरोल, बोहोयानागपण बाजती वज्जाली, वेसरा बहिरणा भर पलपळोरा गू छा ।

चार हजार सिपाई गढ री हस्ताली घर बचाव साह माय तनात कर दिया गया । गढ र परकोटे सू चिपती बारली कानी कोइ सी हाथ चवडी खाई ही । आ साइ चाळीस पचास हाथ ऊण्डी ही । खाई मे उतरण साह भर तळ मू ऊपर चढण साह कोई आसार कौनी ही । खाई री एक कानी गढ री परकोटी हो ती बीज किनार मोटी मोटी धम्बळिया गाडियोडी ही ज्यासू लगता ई घोरा रा हू गर छाती फुनायोडा ऊवा हा । या रै नडा ई खेजडा भर बावळिया रा गुच्छा हा । इ खाई म भेक खासि यत आ बी ही कै इ मे धूड भेळी नी ह्ती । बी नै बतूळिया उडाव न पाछी किनारा माथ लाय जमा कर दता । खाई म धर्मे जिनावरा रा सडियोडा हाडका बासता । अठ गिद्दा री भेक छत्र रा न हो । जोत्रती कोई मिनय माय पड आवती ती अ गिद्दा कागला बी न चूट चूटन खा जाता । अजाण पहिया मिनया नै रम्सा री निसरणिवा किल र परकोटा मे किणोडा निणा माय सू नटरायन बडा मुक्कल मू बधायी जाती पण जिनावरा न बचावण री ती सवाल ई कोनी ही । मेकर इ म धक माथो ऊ पडायो । बी री दुरगत दसन मोगा री काळबी घणी ई कळरियो पण सग लाचार हा । दुसमण साह आ खाई मोन र कुव सरली ही ।

गढ मे दो बरस लग सावण गीवण री माममी री भापूर मण्डार ही । यू रमद मगावण साह गढ री सुरग री मारग बी आपत री री । इ सुरग म बळ्णा गाडी आराम सू आ जा सकता । सुरग अंक पळ्ळी नर समान बणिमोडी ही घर मारग म जागा जागा हवा भर चान्णे साह बिला दाई छाटा छोगा तीणा कर, वा मे भू गळिया घालदी । सुरग मे घोडा दोड लग सक इती खुनासी ही । यू आ ई सुरा बिरवा रत में नर री काम देती । सुरग री, मारग मे घावण वाळ हरेक गाव मे अंक द्वार ही । पण लोगा नै आ ई ठा ही क तळा म पाणी भरण साह नर बणा योडी है, क्यू क म द्वार तळा र किनार ई झूना घर जे कोई अज ए माममी ई द्वार में घुस बी जाती तो हू गर ऊपर जायन पाछी बार निकळ जातो । क्यू क मुटय द्वार तो ई नर मे भाजू बाजू म हता । या द्वारा री काटका उणी रग र भाट री हेती भर इ डग सू धरिमोडी हेती क भेक दा मिनख या न टिलाय बो नी सकना । सबसू मोटी बात ती आ क किणी न यम न्है ई क्यू क नैर र माय घर कोई नर क सुरग है । इ सुरग री निरमाण कई बरसा मे पुरी हिंयी ही भर राज रा खास भादमिया र सिवाय इ री किणी न वेशी ई कोनी । धूड मगी घाघिया र मोमम म सुरग र मारग ई धमोर उमरावा री घाणी जाणी रती । बिस्वा रत म आ नर री काम देती भर जुद्द री बिळिया रसद इत्याद पोचावण में गुप्त मारग री काम देता ।

## ( ५ )

यमापरा घर दहमणी देवी न माष्टीन दहोन की । पद स्वामी श्री ग  
 वारण परत न घापरा हाथ घागिया घर माथ ऊपर मगाया । सगीत रा गुर गूज  
 उठिया । स्वामी श्री गुर मकरा गीतयाव गूज काळ गू घीमी लय ॥ घमाव रै  
 सागे एठियो । घमाव गी गूज सू बगळ घर घा-बू ब- रहेगी । घ्या- भर तात्र  
 घर सगीत रो घगर पवगयो । स्वामी श्री र कठ म घोत्र मिठाम दर घर पदाव  
 हो । गुगल बाळा री घानमा मगेत र समर म हिनोरा मवणी सह कर रेवनी ।  
 त्रिताळ रा बोम मग म प ताव ताव तिरकिट घिन ता ता गुलीजना । घर र ती  
 यमापरा घचये म पहियोही घरघ भरी नित्रां गू स्वामी श्री न निहारण लागनी ।  
 सगीत र मुरां गू ई निरत रो ताळमस हो । निरत ॥ विरवण मुगावा, भाव, घमि-  
 मय घर घग सपाळन सगीत रो लय घर ताळ सू जुटियोहा रहे । सो मग माप  
 पन्नी थाप र सागे ॥ जाभरिया री भणवार बी बोला नै प्रगटावनी । सहना घर  
 तुरई सू निवळियोहा । मुद् बोमल घर मोह न भवण कर घानमा घान- विमोर रहे  
 जाती । विष्व विष्व मुरविया, मुरग जड सुग रो अनुभव करावनी ।

गुद् सिवा निरन थास हो । सिवजी समायो ये सोन हा । बी र तान रूप  
 सू राग मुगप हा । निरत रो लय रै साथ ई सिवजी रो रूप बदलियो । साभ प्रवस्था  
 न त्याग सिवजी प्रसवकारी ताण्डव सह कर नियो । सगीत रो लय दूली रहनी ।  
 ताना रा पसटा, मुद्ग में ताळ रा तोडा घर निरत म सिवजी रो सहारव रूप निरस  
 न घहधही छूण लागनी । यमोपरा ऊपर सारी समा मण्ड मुगप घर घासत  
 रहेगी । घर यमोपरा — ? राव विजयराज भाज घणा समाव भरियोहा हा ।  
 ये भवचित रहे, स्वामी श्री र सगीत घर यमोपरा रै निरत रो रस थाव हा । सगीत  
 रो लय दूली सू चौगुली रहेगी घर इ र सागे ई निरत रो गत बी घपनी । लय  
 चौगुली सू छ गुली तक बघनी । जाभरिया री भणवार घडू बी माफ साफ मुद्ग र  
 बोला र परवाण मुलीजती । इ साह सपळा रा जान नए घर चिन र सागे ई सास  
 बी घा जागा ठरनी । यमोपरा री देही घर घर घुजनी सी दोमण लागी । मग र  
 बोला री तनकार हम साफ साफ कोनी मुलीजनी । सहनाई सारसतत माथ गू जण  
 लागनी । स्वामी श्री री कठ हम रुकियो हम रुकियो इ प्रवस्था तक पूग चुकी हो ।  
 वा री कठ बार नीसर चुकी हो घर गळ री नसां भुजग ज्यू पलवी । यमोपरा री  
 देही पसीन सू सिनान कर चुकी ही । बी री सारी परवास भोज चुकी हो घर बी रै  
 माप सू बी री काची चिटक ज्यू भाकती देही माथ बोदा री हळकी सो उलाह साफ  
 निजर घावनी । गावा सरीर सू चिप चुका हा । रगत जह बी र रात मुस घर  
 सक्षर री मुद्रा न निरस भडी लवावनी क सिवजी सम्प घरती माप उतर न हम

सिंघी रो नास करण वाला है। यमोपग या सग बाता सू अणुनाए, बगेवर जाभरिया सू भगकार निकालनी। वीरा पय पवन सू बी तेज घर लगोना चानता हा। मृदग बजावण वाली नद सू ई समय लावण साह तडफा तोड रैयी हो। घचा राचक यसोधरा री नेहो घरती माथे लुत्कनी लुत्कनी बची। जाणे भेक दम कठ ई सू बिजळी कहकी व तारो दू। जाणे अजाण नोद म सूना लोना माथे घापी छिटक पड्यो जाणे गितार री तार ससक म धावता ही दूट पड्यो। अणुचेन लाग आणचक चमक पड्यो। क्यू वी टोक बी बिलिंग भेक गुणे सू उवाज पाई 'सुमान भल्लाह'।

'सुमान भल्लाह री गूज सू स्वामी श्री री ध्यान चुकग्यो, मदन बजावणिय रा हाथ रुकग्या। संगीत रुकग्यो घर यसोधरा री देही घरती माथे लोथ दाई पड्यो। हाहाकार मचग्यो। 'जय देवी तनो', 'जय स्वामी श्री' 'जय देवी यसोधरा' सू मण्डप गु जायमान हेयी। यसोधरा री देही माथ भेक साग चार चार पला सू हवा करी जखी सर ग्हेगी। गवाजळ रा छाटा देथ बी न चेत मे लाया। बीरा सारा गाथा पसीने सू भाला तडबा हिहयोडा हा। भुल मण्डळ माथ पसीने रा टोपा भडा घोपता जाणे मोती झडियोडा है। जाणे कछणारस साक्षात प्रयट ङ्हियो है। राव विजयराज स्वामी श्री घर यसोधरा न बघाई दी। यसोधरा नीची नाड किया मन ई मन जाणे की रस री सवाद लेती रमी। बी रा नख आवा निजालका मा लागता। स्वामी श्री यसोधरा र बार मे राव विजयराज न दखण ओण आणकारी दी।

दूजी कानी ज्यू ई लोना री निजरा बी उवाज समचै धूमी घर वे फाटी री फाटी रयगी। उठै तो दूजी ई खेल हो। भेक बीस इहिस बरसा री मोठ्यार भेक हाथ मे रगत सू भरियोडी तलवार घर दज हाथ म भेक कटियोडी भायो लियोडी हो। भेक लोथ पागती पडो ही। जाणे आणचक काळी नाग समा री बिण्ण घाय-ग्यो है। लाग डर न आगा-हगा। बी लोथ घर मोठ्यार र उवाज कानी मण्डळ बराग्यो। मण्डळ र बिचव भो घादमी इ भान ऊभो हो जाणे की हिहयो ई नी। बी र चरै ऊपर किली तर रा माव निजर नी धावता। पण बी रो मूण्डो निप दिप करतो। नणा म उजक चमक हा, डोल भरियो पूरो। कद, दाई तीन पूजता हाथ। रग गोरो घर वस सिरदारग वालो। काना मे मुग्किया, गळ म मातिया री कण्ठो घर ऊजळा घुराक गाबा।

घोडी ताल वा यू ई ऊभो रयो। पछ वो घापरै दोळे मण्डय मण्डळ कानी निजरा पुमाई घर बी जागा च घूमर पाळो साग दिना कानी मूण्डो कर लियो। बी रै घूमण र साग ई लोग सारै भिमकण लागा। हम वा मुलकियो। हाथ मापलै कटियोडे माथ न वो जमी माथ फक दियो घर रगत सू भरियोडी तलवार न धोतिय



माथ पूछ'र म्यान में घुसेहदी । हमें वो उठ सू -हीर व्हेण लागी । लोग आ गा  
लिसक'र वो सारु भारण कियो । वो चार पावण्डा ई भागै बधियो ंढेला क दो सिपाई  
वी सू थोडा भलगा साम आय र ऊभग्या ।

‘ठरजा ।’

वो ठैरग्यो ।

‘राव रो इग्या सू तू ब'दी भीई । अथ सू भागण रो उवाव सोचणी  
विरया भीई’ ।

वो बिना की कया, या साथी जोयो भर मुलक गियो । सिपाई आपसरी में  
शेक दूजै साथी देखण लाग । वे थोडा सार लिसकग्या भर हाथ सू अक गिता में  
इसारी कियो । वो बी दिसा कानी मुडायो । सिपाई बी र सार हेग्या । ज्यू ज्यू  
भाग बघती गयो भीड वी रो भारण छोडती गई । हमें वो अडो जागा पूग्यो जठ  
राव भर स्वामी श्री ऊमा, वो कानी ई देखता हा । वो दो'यू हाथ जाड र गरदन  
भुकाई । वो मूण्ड सू की बोलणी आबती पण वो रा होट फुरक'र रगया । वो दो'यू  
हाथ कमर र नारली कानी ले जाय'र बाघ लिया घर गरदन नीच लटकाय'र ऊमी  
व्हेयो ।

सिपाई राव न भरज की क श्री मिनख अवार अथ शेक मानव रो घाटकी  
उतारली हे ।

‘काई नांव हे रयारली ?’ राव थोडा कडक र बोल्या ।

‘पूतम ।’

‘‘कुण साक्षिमी ?’

‘‘भाटी’

‘‘भाटी । की रो ?

‘ जेतसी रो ’

‘काई दिह्यो ? क्यू ’’

‘वो भेडू हती’

‘भेडू ?’

हां वो इया उवा निजरा दोडाय हाथ सू इसारा कियो । वो ऊमी कानी  
इमारा कियो वे मिनख उठ सू लिसकण लाग पण वा र पाखती ऊमा मिनख वारा  
हाथ भाल र वा न पकड लिया । पण अक मिनख धणी अलगा कमर भुकाया जमी  
माथ की सोधती हो । वो सगळा सू निजर बचाय मि'दर सू बार निकळ्यो ।

राव र इसारै ऊपर सिपाई यां भासियोडा मिनखा न राव र सोमा लाय देत  
किया । या लोया रा मूण्डा घबळा पढग्या ।

वो या मगा कानी निजर घुमाय देखियो, घर धेर हाथ भटकता थका बोल्थो  
‘भाग्यो’

“कृण ?” राव सवाल कियो ।

‘सिरदार यारो’

‘बात खोलन साफ साफ बनाव, घणूनी माफन बणणु री हुसियारी मत  
जता’

‘घनदाता ! घ दसू माणस म्हेछ घोंई । गजनी घोंई घनदाता ”

‘ही’

‘वी गजनी मे एक योनी धाडेत बस’

‘मैमूद’

‘हा घनदाता वीं रा भेदू घोंई

“काई प्रमाण ?”

‘पूछ’र देखनी घनदाता ! जे नट जाव ”

वो बात पूरी कर बी पैला ई घ दसू मानखा माघी भुका र हामळ भरली ।  
राव हुकम दिथो ‘या न रोक लिया जाव । मि दर सू कोई बार नी निकळें, जद  
तक म्हे इया नीं दू’ ।

हुई राव या कानी घूम’र बोल्या “तू देवी र मि दर में छेक माणस री वध  
कियो घोंई घर वध करणु री दण्ड काई म्हे ?”

“घनदाता जाणू । प्राणा रै बळ प्राण’ ।

‘तन सफाई मे की कबली घोंई ?’

“नी घनदाता ! हूँ बळी चढ़ण न तयार घोंई ।

यसोधरा पुळकर बी कानी देखियो । छेक छिन साह दो या री निजरा  
मिळी । यसोधरा लाज सू देखी । वो अचम्ब मे पढायो । कोई जाण पचाण नी ।  
कवई पला देखी नी पण जाण नसू अही लाग, जाण बरसा री घोळण है ।

अक दिन साह व्याह मेर सप्ताटो छायथी । राव स्वामी श्री सू हवळें स  
शातर्चन करी घर इया सुणाई ।

‘पुनम माटो जेलती री, त देवी र मि र मे या सव खोवां साम छेक माणस  
री वध करणु री चूक करा घोंई घर तू खुद बी इन हाथर चुकी घोंई । इ  
बात मा तनो री इया सू ताअजे वध री इया दी जाव । बोल तन की कंदली  
घोंई ?”

वो माघी घुण’र नटयो । “हूँ मरण न तयार हों’

भीड में सू घणकरी भेली धुनियाँ भावण लागी 'नी नी नी !'

यसोधरा री आस्था भाडी अघारी भायगी । वा रुग्णशी री बाय पकड र माथी बी र हाथ माथ टिकाय दियो घर नख भूँ लिया । लोग भावस री म फुसफुसावण लागी ।

सिपाई राव सामी देखण लागी । हम राव अक'र चौकेर निजर घुमाई । यसोधरा कानी देख'र वे ठीमर बहेया । स्वामी थी र सामी देव वे नैण भुकाया घर घोडा मुलकिया । राव बोल्या भाटी राज री परम्परा परधानी वध र बदल वध री दण्ड ई हिया कर । पण स्वामी थी री हग्या घर परजा री मसा देखता धका इ घडी पूनम जड बीर रा प्राण सेवणा ठीक कोनी । इ वास्त साकी भेणी तक पूनम न मुगत कियो जाव । पण साकी निमटिया पाछ पूनम खुँ देवी र मि'दर म हाजर होय दण्ड री भुगताण करना । इ बात री जुम्मी ' । 'हूँ हूँ हूँ ' भीड म सू अणगिणत बोल सुलीजण लागी । या में अक उवाज यसोधरा री बी हो । पूनम न दूज दिन मिळण री हग्या देव राव घर स्वामी थी उठै सू म्हीर हेवा । सिपाई पूनम नै मुगत कर वा दसू भिनसा न बदी बलाय लयम्मा । भीड पूनम न हाया ऊपर उठाय ली । ज तप्री मा री, ज राव बिजराज री अर ज पूनम बीर री धुनियाँ सू आभी गूजयो । यसोधरा देर ताई मुळनता नणा सू पूनम न दलती रयी । बी री नस नस धिरकण लागी । ★

## ( ८ )

राव बिजयराम देवी र मि'दर सू पाछा मोल कानी भाया ती रात पड चुकी ही । राणी र मोल म आज म घारी ही । राव र पधारता ई हाजरिया बीडणा सरु भेगा । राव, राणी र मोल मे अघागी हेणी री म्यानी पूछियो ती रमिया अरज करी—

'मन्नदाता' आज महाराणी सा खुद रै हाया सू पकवान बलाया सो धाकम्मा भीई । सितान करण पधार्या ' ।

ठीक भीई जद ती म्हे आज महाराणी सा र हाथ सू परोसियोडी ई पाळ अरोगा सा ।'

मन्नदाता ! हुडी कर ।'

नी, उतावळ कोनी ।'

इती मे महाराणी खुद हाजर बहेगी ।

'जीवण घन ! आज तो ।

‘हा अन्नदाता ! पाछे मिलणी है नी धै । खुन्न हाथा सू ?’

‘चि ता व्हेणै रो वारण ?’

‘राजपूतणिया भव असल रैयो केत अन्नदाता ! अबे ती गोलणिया रैयो भीई ।’  
महे, समझ्या कोनी ?

‘भाटी राज री महाराणी खुन्न प्राण र मोह नार राव न छोड, पीयर जाव,  
है सू अधिक साज री वाई बात है सर्वई ?’

‘राजा रो हुकम तो सगळा सारू सरखी है । भाप ऊपर बी सागू व्हे ।’

‘जदेई तो भरज करू अन्नदाता व’

‘भापन तो महे राजकवार देवराजरा ह्वाळ सारू’

‘है, प्रो मिस तो बीत मोनो भीई’

‘भाप इ न मिस मानो ।’

भापर सामी बोळू या ती सुपन ई नी सोच सखू । पण भाप का क्यू भूलोई  
ह्वाळ क महे मातर घेन मा इज नी पिएण भेव घरनार बी होई ।

‘राजा रो घरम हेई प्रजा री ह्वाळो रो । घर प्रजा मे भाप बी भेळा ।  
राजकवार देवराज प्रजा री पेट भीई इ सारू वा री ह्वाळ री भीमज ऊपर जास  
जुम्मी भीई ।’

‘राजकवार देवराज री ह्वाळ करण रो भापरो घरम भीई, इ न महे बी  
मानू, पण राजकवार री घाड म, महे भापन छाड घेय सू पीयर जावू परी, ई  
न भीमजी मन नी मानै ।’

‘भव भापन बयान समझावा ?’

‘हू मझ ममभियोडी भीई महाराज ! महाराणी र नात भीमजी बी का  
घरम भीई ।’

‘वो हू समझा प्राणघन ।’

‘तो भीमजी कमली सुणावण री इया मिल महाराज ?’  
देखा ! सुणा’

‘राजकवार देवराज री ह्वाळ री जुम्मी भीमजी भीई । हू वा न भीमज  
पीयर भेजण री ठावी प्रव न कर लियोई । दासी भेव ई रवनो । महाराज जीत न  
पधारमी बी दिन बधावला मर नी तर जोहर री ज्वाळा म भेट उडण रै य म सू  
व भी रवला ।’

‘भेकर केव सावली ।’

‘बीत सोच समझ र मत्तो नियो भीई, अन्नदाता ।’

‘हू भाज राजकवार न छोळ म सय न थाळ अरोगाला ।’

‘राजन ! आपन धी मोह रयाज देवणी जोइज ।’

‘मत भूलो महाराणी सा न हूँ अक बाप धी हा ।’

महाराणी रै अक इमार ऊपर दा ढावडिया राजकवार देवराज न लावण सार दोदी । महाराणी खु र हाथा सू मखमल रा आमण बिछाया । चानी सू भडियोड पाटिय ऊपर सोन र चाळ मे पक्वान पुरम’र महाराणी जतन सू घाळ धरियो । पालनी चानी री झरो धर चानी री निलामा पडो हो । पक्क झता ढावडिया राजकवार देवराज न मोनी मे लठाव ल्याई ।

महाराज बीन प्यार सू राजकवार न छानी सू चिपायी । राजकवार देवराज री उमर चार-पाच बरसा र बिच्च हो । उणिपारी मा राप र दो-पू र मेठ री हो । हाथ लगाया मली व्है जडो सरीर री रंग नाक सीखी नए मोटा हो पतळा धर राना बिट । अखुआण भिनख बी मूण्ड री तज देव र मोलख स क भी ई राज कवार भीई ।

भावी बटा जी ।’

ऊ हू

‘भावी ! मोमज पास भावी ।’

‘नी मुल— ’

लाल बनासा भावी आप मोमज मादया भावी ।

महाराणी दो-पू हाथ पसारता हुवा बोली । इ र समच ई राजकवार, महाराणी र हाथा ऊपर उलडायो । महाराणी बी नै चूम’र छाती सू चिपाय लियो । राव रा नए गळगळा व्हेगा ।

लाल बनासा भाज मोमज हाथ सू चाळ भरोगला राव बोल्या ।

घोटवा

हाँ, हाँ घोटमा भरोगी बनासा । महाराणी चाळ भाव सू घोटम री अक टुकडो तोड राजकवार र मूण्ड में दियो । राव, राजकवार न पुटाय खु र लोळ म लियो । महाराणी पाखती बठी हो । बी री छानी भरयो हो । राव रसोई री घणा सरावणा की, पए महाराणी तो भविस र अदीठ मे भवियोडी हो ।

राव महाराणी री बिठा समझ्या हा । ‘जीवण धन रै मम्बोपण सू महाराणी र विचारा री तार ह्मयो ।

‘आप की हुकम दियो अन्नता ?’

‘भाज मोल म अचारी भीई ?’

‘भवे तो ॥ की अचार रै डतियोडी ई भीई राजन !’

‘आपन, मोमज बळ ऊपर भरोसो को— ’

‘मरोसो नो हतो तो बदरी घातमहित्या कर लेती, पण खाली भरोसं -”

‘कोई कुमी कसर व्हे तो बतावी’

‘मन्नदाता रै राज मे कुमी क्खि वातरी कोनी । भिजा आप माघे प्राण निधरावळ कर ।”

‘पद्य ओ संधारो क्यू ?’

‘‘बानणी मन्नदाता सामो लाजा भर”

‘परक्षणी पडसी”

‘पलका बिछावू”

राव लजब निजर सू वूटाराणो कानी देग्यो । महाराणो लाज सू घरती मे गण लागी पण लमाव र उपाणो भावण लागी ।

ढावडिया र नणा न चमक बापगी । दो बरसा सू भाज वारी वारी भाई, मौल सजावण री । महाराणो सात बरस छोटी व्हेणी । साकळ मौल री खुणी खुणी सारम सू भरियोडी ही । मौल र ओक मक भाट माथ चमक ही । भागणो पुळकती ही ।

## ( ६ )

राव री हग्या पाळण मे दूज दिन साकळई पूनम, राव रै साम हाजर हिणी ।

‘‘लम्मापणी मन्नदाता !”

‘हू । पूनम जेतसी री ?’

‘‘मापरी किरपा सू हू मुगत भोंई महाराज’

‘‘मुगत नी तू मौमजी बंदी भोंई’

‘हू । व्हे तन यू ई मुगत नी कियो भोंई’

‘हग्या करो मन्नदाता, माघो भेंट धरू”

‘हू । माघो ई जोहज मौमज”

पूनम सडाव सू म्यान माघ सू तलवार खांची भर ज्यू ई तलवार गरदन कानी सठाई भर राव बोल्या ‘‘पूनम ! तू साचाणो वीर भोंई । ई सारु ई हू तने मुगत कियो भोंई । तू, भाटो राज री ह्वाळ सारु भोत मोटो काम कियो भोंई वा भेदुवा नै भोळख र’

‘‘व्हे तो सापर पया हेचो घूड”

‘नी पूनम ! हू तन भाटो राज री भट किवाड माना हं भर इ सारु सामजा प्राण खरट मे घातणो पावा’

“इया करी भद्रदाता ? ओ मीमजी सोमाय ओई”

‘दुसमण री भेद लेवण सार माघी जोइज पूनम । दुसमण बी छोटी मोगे नी, गजनी री सुलतान ओई।

पूनम, तलवार पाछो म्यान म घती, भर माघी भुकाय बोल्या “भद्रदाता री इ किरपा सारू ”

‘ माग । मोल । ’

“भासरीवाद’

‘ येक बात ओई

‘सिर नणा ऊपर’

‘गुलाब त्यारळै साग रेंवली” गुलाब कानी सकेत ररता हुया राव बोल्या ।

‘जव ती काम धोन सोरो व्हे जासी भद्रदाता, पण ..

‘ पण काई ?”

“परख किया बिना ’

‘सोन सू खरी । फेरु बी परख करल त्यारळ डग ढाळै सू”

‘ नी, बस भरोस री ई बात ओई दाता । क्यू क लुपाई जात

“महाराणी रा भवारा थोडा तणम्या पण पूनम रै बिलकत घर सामी निबर पडता ई शुम्मी गळग्यो ।

“खरची, भणखूट ले जावो । सात दिना में पाछा भावो’

दो नौळै सोन रा टका पूनम र हाथा सूय राव मीला मे पचारग्या । गुलाब री उडीक में बी न रणवास र बार ठरणी पडयो । ओ बार ऊमो भावो र सुपना मे सुप बुध भूलग्यो । येक हाथ, बीरो बाहुडी पकड माय खाव लिपी ।

पूनम ।”

‘ ह । कुण ?

‘ ह ।” बी र नणा म नण गडाय महाराणी मुळकी ।

‘इया करी भद्रदाता ।”

“इया नी, मोठावण ओई”

ज्यू भापन सोव’

‘गुलाब, म्यारळै खास डावडी ओई’

‘व्हेली”

‘ ओई । म्हे दो तन, येक मन हा”

“म्हे येकली ई ”

‘ नी, गुलाब त्यारळ साग चालली । इ री चाव ज्यू परख कर सक, पण ”

“नी, मोसजै परख बीजो नी करणी अन्नदाता,”

“ओ हो ! काई दाता अर अन्नदाता, लगाय राकी ओई ?”

“अन्नदाता !”

“केरु वा ई रट, सुण ! गुलाब जे प्यारळ रुख बरताव सू कुम्भळायणी तो  
ममक लीज न महाराणी ”

“माप ”

“पूतम ! कितरी प्यारी नाव ओई ? जडी नाव बंडो ई टप रत्न, डोल  
पर ”

“मोडी व्हेई अन्नदाता”

हैं । तै आ भ्यारळी असल होरा पन्ना अर मोनिया सू कनी मूदडा,  
सध विचाण री”

आ क'र महाराणी खुदर हाथा मू आपरी मूदडी खोव पूतम री  
भागळी म परायदी ।

“हजर, ओ काई ?”

“बधू कम ओई ?

“नी । आ - ”

“हो, गुलाब साग ओई, सग समझा देतो’

‘पण म्हे

“जादा बकरणी नी । क्हीर टे जावी । जावी, जावी अथ सू । मोडी मत  
करी । गुलाब ! ओ गुलाब !”

“अन्नदाता !”

“जा, इ न लेजा । नारयो खुशी चरयो दीसई । नाथ घात, कायू कर लीज ’

गुलाब, पूतम री हाथ पकड'र बीन बार ग्याव ल्याई । महाराणी मुळकती  
दगती रैदी । पूतम दास सू ठोकर ताम पिरती खिरती बघियो । मूदडी, पूतम री  
भागळी म पेंमगे । महाराणी न अक भागळी सूनी सूनी लागण लागी । रै र न भैर  
केरु बाजण लागी । दो साण्डा कसियोडी, दो अमवारा न लेय डाया डग भरण  
लागे । महाराणी अंत लाम्बो घास नाधी ।



मुसमान र दबंगण पुरब म मि पू घर गूनी हाकडा नगे र बिच पडिया मुनमान घोरा म अर तुवी नगर बसगो । अन्नाज चार पोत मोस र फेर ॥ माटा मोटा तम्बुवा री कतारा लागोही ही, ज्या ठपर हरा भण्डा फरावता हा । हवा रा भवका सू पदा थियोही लैरा र बारण पट पट री उवाजी र रै नै बाना म आवती । रात र डरावण बाळम में सममान री दीवडा जिनमिन करती । घडान या तम्बुवा रै ठपर भिनमिनावती समाला भण्डिया सावनी । जिन र चानण म ॥ ऊठ्ठा तुराज तम्बु घडा लागता जर्म बरफ रा टीया मडवा छे । भिन्दा री रागड कद घरा जायती घर बा री रत्न लोई ज्यू छे जानी बी बिठिया सममान में छामोहा सममानी बाळा घर राता वादमा री सरियो फागलिया रत्न बिनोती । इ बिठिया या तम्बुवा र मूढ री रत्न पोको पड आवती बाबा बबलीज जाती । पण रात छेना ई नदी र बी बिमार मू लोट लोहाया छहो लगावती जाए हजारों बिस्तिपा समसर री छोळा ॥ चीन्ती यकी घापरी मस्ती म चीम चीम घाग बघ रयी छे । निजर धुमी र बग मू बी छज छठी छठी मपाटा लगावती घर जागा बिर नी र सक्ती । छहो इ वास्त बी लगावती क पवन र वेग र बारण भिन्दा फरावता घर मताला टिम-टिमावती । इ वास्त यांरी बसली भी री अन्नाज टीपणो बोन दारो छे जाती । बर्दाई भै किस्तिमा मैडी रिगततो लगावती तो बर्दाई उल्टी बवती । सममान मू जिगमिग करती सममान री बीवडिया घर मूढ री भुभमेनत घर भगज री उपज या दीवडा में जाण होड लागोही ही । पवन र भवक साग ई अ मताला मुमनी, लगती, फेरु लगती । निजर हिवकीळा सावण हूक जाती पण हिवकीळा लावती री दीसण पाळी अ भरम री बिस्तिपा ती साग जागा ई मानल न भरम मे बगनी कर सालती ।

बीस हजार सिपाइयां र खास सारु सक्तीवन चार हजार तम्बु, तीनू कानी मू भरपघ दर दाई साम्बी साम्बी बराबरी रै घातर मू जमायोही कतारा में गाडियाहा हा । चार रत्ना री कनाता बारीबर ऊभी ही । अर सो तम्बुवा सार अर र हिसाय मू भटियारमानै री तम्बु सहा किया गया । इ में सिपाइयां सारु भाजन पकाईजती । इ र माजू मे ई अर तम्बु दरजी रा कामग बियो गयो, सपोलग बीस बीस र बगाबर र घातर मू अ कतारा लागोही ही ।

सबसू भागलो कतार बाळा तम्बु सहाकु बाहुना रा हा । अ साम्बी दाडी बाळा पवन सिपाई हा, अका क हमलो घर खलाळी दोयू री बिद्या म पारगत हा । हरेक तम्बु र मांयन ई दो छोटा तम्बु कपरा दाई जुता जुदा हा, या में मू



(मिश्रकल) इत्याद सूर भरियोडा हा, व या पण्डालां मे पाकड पीर म पड्या रवता । या पण्डालां र च्याळ मेर माय भर बार दस दस पण री छेती माथे शेक अक सिपाही नागी तनवार हाथ मे लिया पीरी देरती । बारी बारी मर सिपाई शेक दूज र बिच्च कदमताळ करतो रती । या ॥ दूका मे पजाब, मुलतान सि व अर केई छोटा मोटा राजावा र इलाहा री तूटियोडी सम्पत हा । २ देस री मलमफाई सूर बिलरियोडी पडी सम्पत न शेक सुलतान री तश अर तिजोरी आपरी पासवान बणा'र वोन कद कर राखी ही । पासवान बणावण मार सुलतान रा कई सिपाई भारग सूर घणवरी सुगाया नै पकड लाया हा, जकी तवाइफा भेली भिलगी ही ।

या सगळा तम्बुवा र बीचीबीच में अक मोटो शू पण्डाल लागोही ही । पण्डाल र च्याळ मेर दस दस पज री छेती सूर कनाता गाडियोडी ही । कनाता र बारली कानी दस दस गजरी छेती माथ तोर गज वेरी पासियोडा हा । कनाता र मायली कानी पण पण्डाल र बारली कानी बी हिसाब सूर ई यवन सिपाई नागी तलवारा हाथ मे लिया पीरी देवता । या सिपाइया रा सरीर लो र साच डळियोडा हा अर सिक्का घणी डरावणी ही । नागी तलवारा हाथ मे लियोडा अ साक्षात जम री हप निजर भावता । या र हाथा में पकडियोडी नागी तलवार माथ जीरी बी निजर पडती बी घर घर धूजण लाग आवती क बस बीरी मरवा घा कटी भा कटी । इ वास्त ५१ कानी पण बघावणा छोर निजर फरण री मुनळव हो मौन न मूतणी ।

इ पण्डाल र माथ शेक छोटी पण्डाल अर ही जी मे कम सूर कम पचास मरदा र वरण जोग खुलास री जागा ही । बी पण्डाल गैर असमानी भर हर रंग र रेसम री बुणियोडी ही । इ म जागा जागा जरी री काम कियोडी ही । घाखती पाखती मसीत र गुम्बदा दाई गुम्बद बणियोडा हा । तम्बू माथ जागा जागा जरी सूर कुरान री प्राइता रा कसीदा काडियोडा हा । या र बिच्च जागा जागा सलमा सितारा जडियोडा हा । जिकी जागा खाली रवती बी जागा सेर चीता, रीछ, हिरण खिरगोन इत्यादि री खाला दग सूर टाकियोडी ही । ऊपर छत मे सधावणा फाड लटकियोडा हा ज्या म खुसबूदार तल रा दिया बळना हा । या म सूर निकळियोडे खानण री उजाम सात गुणा जादा निजर भावनी । शेक दीये रा पाच दिया निजर भावता । इ र इलावा पण्डाल र माथ अर अर दोनू जागा काडी ले मसाला जुदा चवन हा । पण्डाल र ऊपरला भाग इ दग मू आळींगर वायोडी ही क मायनी धुवो भाराम सूर बार निकळ सक अर हुवा बी वरोबर ताजी भावती रव ।

भांगण ऊपर कीमती कालोन बिछियोडा हा ज्या ऊपर कीमती गलीचा धूबसुरती बघावता । सिरं दरवाज र डावी कानी बाघ भर चीता री फूटरी खाला

बिछायोडी ही, उठ ग्रेक मोगी घर गोळ तक्रियो बी तरतीव सू सजायोडी हो। ओ तक्रियो बी जादा कीमती घर कळागिरी रो वेमिसाल नमूतो हो इ तक्रिय र सार ग्रेक मध्य मूरत साम्रात रूप में बिराजियोडी हो। पचबीस बरसा रो अक मोठ्या, बीन मोट घर लम्ब पण मोपनी डील रो, डरावणा पण मदरा प्याला व्हे ज्यू नण जन्मत सू जादा लाम्बा हाथ बीटलोदार काळा कंस अन् छाटो सोक पण भरियाडो दाडो। लोफनाक सावाज वाळो ओ मोठ्यार ई गजनी रो सुलतान यामिनृदीला म०मूद मिजामुद्दीन कासिम महमूद हो। ई र चेर सू मूरता घर क्रूरता बरोबर टपकती। चवना बरस रो उमर मे ई ओ जुळ करणो सरु कर दियो हो। खु र पराक्रम बुद्धि, होमन घर जुगत सू ई बी खुदर भाई सू राज खीसन राज रो मालक बण्ण्यो। आपर बापरी परम्परा निभावता थका ई बी भारत रो बेसुमार सम्पत, लूट लूट न गजना ल जावणो सर कर दी। बी माया रो लोभी हो, घर माया बी र पना पडती।

खूबसूरती घर कळा सार बी रो नेह घर समाव सायत बी न आपरी ईरानी नसल रो मा रो देण ही। ई वास्ते ई बी सायरगा मिजाज रो हो। बी सायरा रो इज्जत करतो। बी रो निजू सुपना रो ग्रेक ससार हो जी न बी आपरी मर्दानगी मू साकार करण रो सामर्थ्य रावतो। कारीगरी रो प्रमी "हवा बका बी वो मूरती पूजा र खिलाफ ब्यू हो, कै मूरतिया ब्यू तोडती? ओ सोचण जोग सवाल है। सायत बी रो यशस्व मे आस्था हो। बी मूरतो पूजा में प्राई बिस्वास रो बास देखो। घरम घर परमातमा र नाव माथ पळत पाप मू बा रो साबकी पडियो। पिण्डा घर पिण्डा र पाखण्ड न बी मनीमांत परखियो। देवतावा रो जकी दुरगन पुजारी लाग बणाय नाही घर परमातमा रो भगती र नाव माथे जकी रासलीला रो भाग घर बभीघार हवाड "हवा बी सू वो घणी नाराज हो। हे सके कै अ बाता वूडी बी है पण कारण तो कोई न काई हो जकर जो ई आदमा न मूरतिया घर मिन्दर तोण्ण मारु सकसायो।

ममूद हि दुवा रो आपसी फूट रो फायदो लठायो, मूरतिया तोडी, मिन्दर घुडाय घर पिण्डता न गुलाम बणाय वान बेचन टका बाटिया। बा पाखण्ड रा पाटिया ऊधा मार दिया, घर खुदर मुलक पाछो गयो परो। हे सके आपर या क्रूर कामा र कारण बी रा आतमा कदेई पछताई बी न्हे।

मुघमल र गिह माथ तक्रिय रो सारो लियोडी वो सर व्हे ज्यू दहावतो। चारा गावा बीट कीमना घर घजवूत खान रा बणियोडा हा। अक हाथ बीरो अकसर तलवार रो मूठ माथ ई पडियो रवतो, जो सू बी रो आगळिया रमती रती। बी र माथ ऊपर अक उजब सी पण घाला पाय हो, जो म जागा जागा चेदियाडा नीम

घर हीरा री घाघा चवाचू उ वर देनी । बी री पगरखिया म जडियोडा । साल घर पना सू किरणा फूटती । सूरज री किरणा दाई अ किरणा बी घादमी री निजप न सैन कोनी हे सकनी । बी र सामो जोवण री हीमत आद्या आद्या म बी नी ही । बी री घाघनी पालनी ऊभा उमराव बकर ज्यू धुजता घर वारा कान हर बिलिमा बम मुलतान री हुकम सुखण खातर ऊठियोडा ई रवता । अक घादमी हमेस बी री साथ रैनी घर घी हो घलउलवी । ममूद गजनबी र जोवण काल री हरेक घटना न बी साहिन री रूउ देव न गाया बणा देती । मो ई बी री खास गुण ही ।

## ( ११ )

‘हा, काई नाव मोई त्पारळी ?’

‘गुलाब’

‘दीत मीठी नाव मोई’

‘चाख देखी मोई ?’

‘चाखण री छूट मिळियोडी मोई महाराणी सा सू’

‘म्यारळ मन री महाराणी हू भाप मोई’

‘पांणी री छागळ, हवाई माग ?’

‘वा, काई व्हे ?’

‘हू, व्हे तो सम्भाल ही नी की’

‘जीव ती सम्भाल राकियो ? क नी ?’

‘बी ती सावकी जागा मोई’

‘छागळ निवाळ, पूनम, दगळ दगळ पाणी पिमी ।’

‘भापन भूख बी ती सागी व्हेली ?’

‘भूख ? कस्ती ?’

‘भूख बळ कस्ती ? दुकुर री ?’

‘व्यू बीजी भूख नी हे ?’

‘बीभी भूख ती हू कोई जाणू कोनी’

‘काई उमर मोई ना मजी ?’

‘तपाळोस री जलम मोई’

‘तपाळोस ?’

‘हू अक हजार तपाळोस’

‘समझायो ! सोळा सतरा बरमा री मोई ।’

‘हे सक’

'हे काई भळें ? पण तू दोसण मे तो बीस बाइस री दोस'ई'  
 'दोवड हाड री हों'  
 'जदई तो भूम गू भणजाण भोंई'  
 'क्यारी भूख ?'  
 'भूख सरीर री, मगज री मान री मनवार री, घर ?'  
 'अध इयाली उवाली बाता ई करणो क की काम री बात वो ?'  
 'कोई बात ? बोल तू ।'  
 'बोलू काई ? जी काम सारु या र पल्ल पडी भोंई'  
 'है । कितरा कोस आयम्मा हा आया ?'  
 'मैई बीस तीस'  
 'जद तो घोडो भों ई कटो भडू तो  
 'गप्पा मारया तो भों घोडो ई कटवो'  
 'कुण मारी गप्पा ?'  
 'आप'  
 'म्है ?'  
 'हा, आप ।'  
 'ठीक, मतळाई घर गळ पडी ?'  
 'गळें पड म्यारळी ?'  
 'हा हा हा काई ? त्यारळी काई ? बोली कोनी ?'  
 'साण्ड उतावळी भोंई'  
 'खातो तो घा बी पड । माड ई मोरी डीली राक छोडी हों ।'  
 'दो-यू बैना भोंई'  
 'जद ई'  
 'क्यू ?'  
 'उणिमारी मिळ ई री चां स'  
 'भ्यारळी क्यू ? हूँ साण्ड र उणियार हों ?'  
 'हव ।'

गुलाब गुरस में साण्ड र तडो दी । साण्ड पाछी सपाट दोडण लागी । पूनम बी  
 आपरी साण्ड री मोरी नै खाची घर वा बी पवन वेण सू आगण लागी । कोस भर री  
 भों माघ पूनम री साण्ड, गुलाब सू आग नीसरयो । पूनम, गुलाब रै सोंमो जीभ काड,  
 मुळकियो । गुलाब, आपरी साण्ड र ओक कामही लगई घर पलक भरता, वा, पूनम सू  
 आग नीसरयो । सूरज निजरा र सामी आयग्यो हों । बी री उजास हमे मने पडण लागी ।  
 घोरा र अघाग समदर री सुनियाड में दो साण्डा री सासा बीन डरावणो हाफ भरती ।

माडा री परछाया तर तर लाग्ती बघए लागी । कुठल तावनी री चमर म गुलाब र मूँ  
 री भाई गुलाबी लागए लागी । बी र पोतिय र पच कीना पछ चुका हा । पूनम घर  
 दूज घोर न पार नर साण्ड न घाडी केरी । दोयू री निजरा मिळी । गुस्स म भरि  
 पाडो गुलाब री चगी चमचमावए लागी । पूनम मुग्ग साण्ड न बी र मडो सी घर  
 बी र ऊपर ऊमी दृष्टी । गुलाब साण्ड न फेर तडा दो । पूनम री साण बी र  
 लगेला बौडती रघी । हम पूनम आपरी घर टाग, गुलाब री साण्ड माथ मेन, पच  
 करतो जाय गुलाब र पूठ बैठग्यो । बी री मुग्गी साण्ड री मोरी वा र हाथ मू  
 छुटग्यो । साण धार चुकी ही बी न घन मिळियो । गुलाब आपरी साण्ड री मोरी न  
 हाक हाथ बानी लय लाय मारी । साण्ड घागला दोयू पना र मोडा जमी माथ टेक  
 दिया । अचाएचर लागै हिचक मू पूनम नीच विरग्यो बी र वजा पागडा मे घर  
 कायोडा कोनी हा । नीच पडताई, पूनम हाथ पना नी छीन कर जमी माथ चित्त  
 पसरायो । आला र डाला बार बाड बी घाटकी न कीली छोडने । बी सांसा रोज,  
 मिर हेतो बी लाळी देग, गुलाब घर र तो चकरायगो । वा बीन जमेडए लागी,  
 पण पूनम टस मू मस नी व्हियो । गुलाब र पमीनी छुटए लागी । वा आपरी बान,  
 पूनम र सीत ऊपर लगाम, काळज री धडकए सुगणी बावती । काळनी घर घर  
 करनी ही । गुलाब, पूनम री हाथ पनड जमेडियो । पण पूनम सडोळी घर सडोळी ई  
 रघी । वा छागळ लाय पूनम र मूँ माथ ऊंवायने । हम पूनम, माथे न भरनी देव  
 ऊठियो ।

म्है केन ही ?

‘माप भेप ही

हे कुण ? तू कुण ? मा की निजर नो आवै ।’

‘म्है, म्है गुलाब हीं

गुलाब ? कुण गुलाब ? काटाळी ।

‘छुगाई, डावडी, आपरी ?’

कुण हे ? म्है केत हीं ?

‘पूनमसिंगजी ! थोडा होस मे आवो । देखी, म्है गुलाब हीं । ता भज साय  
 आळी ।’

मीमज साय आळी ? मीमज साय तो कोई कोनी । म्है तो बाण्डो हीं ।’

हम म्है बयान समझावू ? बयू मसखरी करी ? थोडा होस मे आवो नो ।’

‘होस । हे मावो

गुलाब पूनम री घाटल मू लटकती पोटली निकाळ, पूनम र हाथ म घमाई।  
 पूनम पोटली माथ मू अक किरचो निकाळ, गुलाब री सामी करी ।

‘हू तो होत म ई हों पई । आप अरोगी मोघजा ?’

मन थोरा किया बिना कोनी ऊँ

‘तो त्यावी’

‘ऊ, है । वाक म’

‘म्हे आप ई घर लेसू’

नी, जीम ऊपर म्हे ई मल सू’

म्हे मर जासू । म्हे अमल नी— ..’

पूनम, गुलाब र खर माथ हाथ फेरती फेरती, बी र बाबू तक लेयायी घर  
अमल री किरची बा री जीम माथ धरदो । गुलाब लारले वास मूण्डी ले जाय,  
पाछी धुकदो ।

हमै पूनम छुदर बाक मे अमल री डळा घतए सार गुलाब र सामी करी ।

‘ठाकरा । मोघजा थोरा करी

ह्यो अरोगी अघ्नदाता ।

‘ऊ है । आप ह्यो’

‘म्हे लियो, आप अरोगी’

आ क’र गुलाब अमल री घोडो सी किरची, पूनम री जीम माथ धरो ।  
पूनम, दाता मू गुलाब री आगळिया दबाय बी । बी र मूण्डे सू हळकी सीक चीळ  
निकळगी ।

‘रोळ’ गुलाब मूण्डी बिगाड र बोली ।

‘काई कैयो ?’

‘रोळ

देख । मूण्डी सम्माळ’र बोले

‘कोई होम में नै तो बी सू बात करा । आपन कोई हीस तो

म्हे हीस म हों

‘तो पळ अ लुगाया वाळा छिनाळपणा क्यू करी ?’

‘लुगाई री दाब, लुगाई ऊपर अजमावण खातर’

म्हे लुगाई नी मढद ह्यो मढ’

‘सबूत ?’

‘लडानो पत्रा

लुगाई मू काई पत्रा लडावू ?’

पूनम री आगळी म महाराणी री मू ंडी देख र गुलाब चमकी ।

‘आ बीटी तो महाराणीसा री घोई’



“क्यू ? काळा काळा सग बाप रा साळा ई म्है ?”

‘नी, म्है मलीभात भोळखू’

‘वाई भोळख ?’

“म्है महाराणीसा रो भग भग भर रु रु भोळखू”

‘पण भा ती बीटी भौई, नी ती भग भौई नी रु’

“भर भग भग न तू क सू भोळख’

“म्है वारी मरजोदान दावडो हों । म्यारलै सू की छानी कोनी”

‘म्है तो खुद र ई पूरा भग नै नी भोळखू”

“जदे ई तो कसू क नाड हों, माड’

वाई मुतळव ?’

“मुतळव साफ भौई’

म्है समझ्यो नी”

‘भो ई तो रोवणो भौई’

‘आडिया मत छळम’”

“भाडी तो महाराणीसा भाडी भौई । छळभिया आप म्है ती दोयू र  
”

बिक्व

‘है, ती दोयू रै बिक्व भौई तू”

‘भौई’

“ती लै भा मोमजी कानी सू तन’

‘मी, नी । म्यारळी मीत थोडी घाई’

“वाई मुतळव ?”

“बस, हरेक बात रो मुतळव यांन समभावती रवू । म्है क्यू क्यू म्यारळै  
मूण्ड सू क मू दडी क रो सनाणु भौई ?”

“मूण्डो ?’

‘हव, बीटी छल्ली”

‘ल छोड छमक छल्ली । पजा सडाय फंगलो करलो । तू जीती तो म्यारळी  
बात साची म्है म्यारळी चावर । नी ती पछ

‘म्है हारु ई कोनी”

‘ती हे जाव’

‘हे जाव’

“बस । डरग्या ? बादर गिणुजी”

‘डर तो काई ? हा, सोचू क भागळिया उतरगी ती ”

‘घरै वा, देखी तागत । हार सू बचण खातर मोला लेवो’

‘या बात हवै ती व्हे जावै’

‘व्हे जाव’

दो-सू जीवण हाथ रा पजा आपसरी म जोड, खुणिया धुड मायें जमादी ।  
पूनम होत्यो ‘पला त्यारळो दान’

गुलाब पूरी जोर लगाय ली ही पण पूनम री हाथ, बी सू नी डिग्री । उल्टी  
बी री भागळिया काठी भीचोजयो ।

“हम आप जोर धनमावी’

पूनम, गुलाब रै पजा नै थोडा काठा दबाया ती वा विसकारा करण जागो ।

“काई हिंयो ?

“घई, मोक्षजी मा

इतरै जोर सू भागळिया दबाय गाली है”

‘जोर ती भजू लगायो ई केत ?’

“इ सू जादा जोर लगायनै काई भागळिया सोडीला ।”

‘बस । मानसी हार ?’

“हार नी मानी ।’

पूनम हमै थोडी केरु दबाव देय बीरी भागळिया न काठी दबाई । हम  
गुलाब थोड जोर सू विसकारी कर, खुणी जमी सू ऊपर उठ य ली ही, बी री भाग  
माय सू भासू भाग्या ।

“काई हिंयो ? यणी गरब होई’

‘या कोई मडद होई ?’

“नयू ?”

‘इतरी जोर लुगाई सू सहीजै ?

“पैला ललकार ई नयू ?”

“मडद न जोम बिरावण सारू”

क री जोस ?”

“मडद मे भेक मोक्ष खावी व्हेई । जद बी मे जोस व्हे तद बी नै होम नी  
रव घर जद बी न होस है तत् जोम दोरी भावई”

“मानग्यो । इव भाषा री पट सकई ?

“काई मुनळब ?”

“मुतळब भो, कै जी काम सारू हू जाय रयो हों बी काम म त्यारळा मदद  
मन मिळ सकई”

पला नी मानता !'

'नी, पला तो म्है समज्यो व मन रीभावरुण सारु, म्यारळ साग ग्रेक  
रामतियो भेजियो भोंई ?

'तो काई रमणु री मती भोंई ?'

नी''

क्यू ?

इ वारत व म्है वा रामतिया सूर् ई रमत करु, जका म्यारळं छुरें वित  
चडियोडा 'हेई'

'हूँ फूटरी भोंई'

"भोंई"

"म्है जवान हों

हव

'पछ काई कसर भोंई म्यारळ मे ?'

"पूनम न रीभावरुणी'

"क सूर् रीमो ?"

'भ्याणु सूर्'

भूख लागी काई ?"

'हव'

'देरी ?"

'पेट माय'

बीजी ?

बाजी, तीजी काई नी, दुकर निकाल"

दुकर तो नी पचदारी भोंई, महाराणीसा खास कर पताई

'व तू खा मन तो सोगरी व्है तो दे द

'भाप सारु तो पचदारी भोंई

'क्यू ? सागरी नी ?'

वो म्यारळ सीर री भोंई'

'ती सीर पलटला"

"सीर म तो धली बाता धावई भग्नता !"

'सोचू लो !"

"म्है मोमजा महाराणी सा, मोमजी "

गुलाब !' पूनम गुस्से ल कडकियो ।

'काई ?'

“घोडी जीम सम्माळ'र बोल । तू डावडी घौई अर डावडी न भापरी मोव  
मे रेवणी सीमा देवई’

‘सीवा उलावणु री मोमजी आदन कोनी” गुलाब बो तडक्'र बोली

‘घौ पछु काई बवं ही ?”

‘भाप भरोगी अन्नदाता, गुस्स न अळगी धरो, मोमजी तीर भरोगी’

‘म्हे नी खावू, म्हे हू भूखी सूप सकू । भूख सू भरा कोनी ।”

“म्हे पण पडू अन्नदाता ? कसूर बिसरावी । घाळ भरोमी ।’

पूनम, गुलाब रै हाथ माय सू सीगरी खोस र खावणु लागी । गुलाब पचंदारी  
पाछी भेली कर, बाघी । काद री पुळी पूनम न फ़िलाय वा खुद बो सीगरी खावणु  
लागी । साण्डा रै मूण्डाग पाली घर दियो ।

रात, भामै सू उतरणु लागी । अघारी, पग पसारणु लागी । दो-यू साण्डा  
र बिष्च गुलाब री राली हाळीजो । पूनम खुदरी साण्ड र पच्छम पालै, राली नाख  
सूगयो । पूनम नै जद चेतो भायो, चन्दरमा भाम सू मुळकरा लागी । बो गुलाब  
नै नीद सू जमाई । साण्डा न पाली चराम, पल्लाण रा कसणा काठा किया । रालिया  
परोट पाछी ठिकाणसर बाघी । एक ह्वाकळ करता ई साण्ड ऊभी व्ही । तारली  
टागा छोदी कर, भूती री धार छोडी । मीगणा किया अर पावण्डा भाग वधाया ।  
मीटो, मदरी बायरियो गावणु लागी । नीद री गळा मनवारा लागी । पूनम भनाप  
छेदियो अर मस्त व्हे गावणु लागी ।

“बास चकोरी, चन्दरमा र देव ।

भी ससारी लोफ निकामी,

कर दोवडा भेस ।

जुगत जोडणी, भांग-तोडणी,

पग पग पीड कळेस ।

रोई ज्यू रीत जीवणु में,

बतूळया हरमस ।

बास चकोरी

हुडी हुडी हवे हरर हरर ”

( १२ )

प्रीतयतां री गरदनां प्रावण बाळ रं रानीं नृपणी । यामीन ममू नोव रं  
 यो प्रादमी फोज र सुपिया मरुम री मुतियो ही । सुमतान र सोमी मुजन, वं  
 प्रादाव भज कियो । पदूतर म सुमतान बी मायें भेक निजर फी भर बाज ई पत  
 बीरी निजर तलवार री मूठ सू रमती खुद री धांठळियां माय जा पूगी ।

यामीन ममू कवणो सरु कियो 'सुमतान आत्ममयनाह । म्हे माटिया मग  
 म्हे प्रायो हूँ । यठ सू दक्कण पच्छिम मे लफरीबन सी मोल माय यो सुन्दर म  
 मध्य नगर बसियोहो है । विजयराज भाटा घठे री राजा है । राजा बडो ही वा  
 पराक्रमी, बुद्धिमान घर दयालू है । नगर म सम्पत री एणसू सजानी है । किल  
 बीत ई मजबूत घर मोठी है । किल री भीतां घसमान सू भड । किल ऊपर ऊपर  
 प्रादमी जान घर तारा हाथ सू ई सोह सक । इत्तो ऊचो तो गदह बी बीनी छ  
 सक । किल री भक ई सिर-पीळ है । घर किले र व्याक मेर लाम्बी, गरी म  
 चवडी लाई लोदियोही है । यठ रा मोठ्यारा रा होसला बीत बुन द है । राजा रं  
 फोज मे दस हजार बांका घर टणक सू टणफा सिपाई है, जका राजा र भक इसा  
 मायें भावरा प्राण निछरावळ करद । फोज वनें बारा बरस लह जितो जिनस जम  
 है । घापाने यठ सक्मू बडो मुमकिल पोणो री व्हेना । बिना पाणी पिया भापार  
 सिपाई नी लख सकला । पूर माथ म धोरा रा दूगर ऊचा है । रस्ती ऊबड लाभा  
 है । जागा जागा भवरिया है, जवा में भेक साय दस हाथी बी हूब जाव तो फूल पा  
 बी नी ला । यठ सू रसद पोंबावण सारु दूजो कोई मारण बीनी । या स री बात  
 र मद्देनजर यठ सू ई पाछो मुडणो ठीक रती भवार मोसम बी बीन बिगडियो  
 है । राठ जिन घाघिया बाल । रेत इसी उठ क घाघिया बुरीज जाव । घापी, घाप  
 साग मिनस छोड साझा न उडा ल जाव । म्हे पाछो यठ किया पूगी हूँ ? ई भी बला  
 करण र बिचार सू ही धडधडी छूटे । उरफो मार्यो पयो घर बाकी सब बर्द  
 दणया है । म्हे भकली भाग्यर प्रायो हूँ ।

यां दिना मे, जद क घापा लोग रोजा कर रिया हा बिना पोणा तो सा  
 लेवणी बी मारी पड जासी । यठ जावणो मोत र सामा पया जावण र इलावा क  
 नी है । किल में अणुमिल्लिया परकोठ है भर हरेक परकोट माथ चुरज । या परकोट  
 मे रीना रीना तिणा है जवा मे सू दुमण घापां न भलोमात देख सवें घ  
 घापा ऊपर पूरी निजर राख सक जद क घापा सारु यो काम बीत दोरी है । भेड  
 हालत में घापा वार बी किया कर सकला ? किल मे भेक देवी री मन्दर है ।  
 मन्दर रं बुन मे सारा काफिरा भर राजा री जवरदस्त घाह्या है । मन्दर री खलीफ

वामी थी, सारी परजा न ओरू सूत्र मे पिरौ नोखी है। सग बी रो गरोसो कर राजा  
वी रो हुकम मान। इ मि दर मे हसीनावा रो नाच देखनी ब्रिळिया उरकी सू नी  
रयो गयो। वो दाद दो घर भेन खुल्यो।

उठे घदना सू घदना घादमी रो मकान सोने चांटी सू भडियाडो है। सोनी  
निवाडा माथ इ माफक नकसासी सारू काम मे लियो गयो है जाण वो सोनी नी  
पीतळ है। बेगुमार दोलत बिखरियोडो पडो है। घापा रें हमल रो सुगग उठ लाग  
चुकी है घर नगर रा सग वासिंदा घापरो सगळी दोलत राजा बन जमा करादो है।  
राजा पाच हजार रो ओरू नुओ फौज खडी करली है। नगर मे माटी राजपूत भीत  
बादर है। घामण ऊबा राजनौतिक घर बैस्य चालाक। सगळा भक ई घरम नै  
मान।”

इती देर चुपचाप सुणती सुलतान हळकी सी खकारी कियो घर सब लोग  
भाट रा हेगा। मीत र पला रो सप्राटो छायग्यो। सुलतान गरज नै बोख्यो ‘तू  
भा बैवली बाबू क जयपाल र जामोरदारा नै नी कोई जीत सकियो, नी जीत  
सकला? जे हा तो भा कयने तू म्हारी तोहीन कर रयो है। मयूर नी कियो सू  
हाग्यो है नी कियो सू हारला। दुनिया रो कोई ताकन बी र पाक हरादा न  
ममली जामो परावण सू नी रोक सक। सुलतान भुकावणो सीखियो है भुक्ली नी  
मारणो सीखियो है मरणो नी जीतणो सीखियो है, हाग्यो नी। खुदाश्वद मझ  
पदा ई इ सारू कियो है क म्हे बुतपरस्ती मिटावू घर इस्लाम रो ममल करावू। म्हे  
ओरू काफर र इती तारीफ बरदास्त नी कर सकू। जे भाइंदा सू घारी जवान  
कोई काफर र हक मे सुनी तो जवान खिचवा सू ला।”

सुलतान सोन रो सांकळ सू लटकत घट माथ चादी रें बणियोड डड री चाट  
करो घर गुलाम हाजिर व्हेगा, सग दिसावा सू जाण कोई खुलजा समसम रा  
जादूगर री डण्डी घूमग्यो व्हे। सेनापति न बुलावणो री हुकम हुयो। चलउत्की  
सुलतान रो गुस्ती दखन डरग्यो पण सुलतान बी र डर न ताडग्यो। वो घापरो भक  
हाथ बी री गरदन र सारें कर, बी री बीटलीदार जुलफा मे भागळिया गू कागसी  
करणो सरू करदी। उरबी र गाला सू लोई टपकणो सरू व्हेगो, सुलतान भक हळकी  
सीक धू टियो भरिमी हो।

सेनापति र आळा ई बिश बी रें सानो ओषा ई सुलतान हुकम दियो ‘भागली  
जुम्मेरात सू पला भाटिया नगर माथ सुलतान रो भण्डो फेरावणो लाजिमी है।  
उठेरा बुत वोडने मसीत चुणुदी जाव। जुम्म री नमाज उठे ई घदा कर रोजा  
खोलिया जासी।’ सेनापति बोल बी पैला ई सुलतान बोडो जोर देव र बोख्यो  
“म्हार हुकम री हर कीमत माथ तामील व्हे। फजर सू पला कच करो फौजा  
भाग बधावी।”

सेनापति इसन्दुधा की 'हुजूर जहापनाह' ! बागाड सगा घर वूटा बी माटिया र खिलाफ इमदाद करण री कौल नियो है । हुक्म है तो घेर दिन वारी बाट देखली जाव ?”

सुलतान उसी लज म बोल्थो “नी वान खबर कर दो क व सीधा माटिया नगर पोंव जावे । म्हे फजर म ई कूच कर दूला । घब या लोग जावो, म्हे धाराम कर ला । उरबी र इलावा सग लोग खिसक्य्या । सुलतान उरबी री जुल्फा स रमण लाग्यो ।

( १३ )

‘कुरजा’

‘कुण हरू ? की भौई ?

‘तू तो रबी बबारी

‘तू पछ कुणसी परणीज आसी ?’

‘भरे, हूँ तो लाण्ड सू केरा खा सेमू, पण मुसकर भौई ताम्रजो । घणो चाव करती ।’

‘भर तो कुण मो ताकी जलम भर री भौई ? घणा सू घणा दस दिन, मीनी दो मीना ”

‘हाँ, साकी तो उमर भर री कोनी, पण की भरोसी ? मा नी कर बाद कर मूण्ढी । राण्ड र बाक मे मिरचा घतू म्यारळो ’

‘हाँ, ताम्रजो राणी जुग जुग जीव । पण जाण क्यू म्हेन र रैन लखावै क----- ।’

‘क, की ? बोल क्यू नी ? चुप क्यान हेवी ?

‘म्हेन लागै क हमव इ साके री कोई भन्त कोनी’

‘क्यू ?’

‘दस सू ई लखाव । माय सू जीव जाण क्यान ई हे रैयो ई पयो’

‘भाऊ दादी । यू की करै सू ? तन मोमजी सुख सवाव कोतो ?’

‘म्हे तो त्यारळो सोगत साचै मन सू चावू क राणी तन डोल पाळो रै समच केरा खाव ले जाव, घर म्हे नाचू त्यारळ बिया मे’

‘हरू ।’

‘काई ?’

‘तू म्यारळी साची सई भौई ?’

‘वा तो म्हे हूँ ई कोई दुजी राण ताम्रज साम मूणै खोल तो जीव

कतरलू "

'तू केत जाइस हमें ?'

'देख म्यारळी ओक मामू भोंई पू गळ में, पण दो बरसा सू वो दिसावर म ई बसे ई । सुणी भोंई, ओई नु वो मामो री स्यापो घातियो पो । म्यारळी हम कोई ठिकाणी कोनी । सोचू, म्है बी देवी रें चरणा चढ जावू, पण "

'पण की ?'

'पण, सिरदारा री मरजी भागी ती ओक पावण्डी बी कोनी धर सकू'

'सिरदार काई तैन मोल लायाई क घर म घातो भोंई सो मंडी बी वई पई ।'

'तू साव सुणणी चाई काइ ?'

'भूठ बोलण सू काई मिल्ली तनै ?'

'जावण ह्य की करमो सुणन? म्यारळी पीड मन ई भुगतणी भोंई ।'

'म्यारळी सौगन घतू '

'कुरजा । सौगन मत घत म्यारळी भण । दल म्है त सू कद कोई बात छिपाई ?'

'सापडन लुकावेई पई घर फेळ पूछै कद लुकाइ ?'

'भनै मा मौमज नडी'

कुरजा, हरू र मजीक गई । हरू बी रें वान कन मूण्डी ले जाय, हवळ मू सारी बात बतादो । सुण'र कुरजा री भासवा अचम्ब मे पाटोडी रवी । दो पू जवान हो । हरू उमर मे कुरजा सू दो बरस छोटी ही पण सत्तार नै परंखण म चार बरस मोटी ।

'हव काई -हेसी ? कुरजा मूण्डी उगार बोली ।

'व्हेणी की भोंई ? सिरदारा सू ती छानी कोनी । ब्याण्ड सू फेरा खवाय देमी । बाई -ही ती रेत री पोदली, घर बीरो रें हयो ती सिरदारा रा पूत ती सिरदार ई रसी । घर म्है ? म्है अक्वण्ड कवारी ।'

हरू ।'

'काई ?'

'जीव म भाव न सारा ब'वणा तुढाय कठ ई ना'स जावू ।'

'बी सू काई व्हेमी ?'

'मुगती'

'मुगती ना सण में कें मरण में कौनी सई । मुाती जीवण मे, जूझण में भोंई'

'म्यारळी हीमत म्हा म कोनी'



"घोई तू कद घजमाई ?"

"म्यारळें घजमावणो बी कोनी"

'वाळी घोई तू । समार तो मू ई चालतो रंमो । भेर तो घाज वाओ घोई । म्हे राणू सूनू मिळ'र सग ठीक कर देसू । सांळें पैना तू घर राणो दोयू भय सूनू पुरव कोनी "

"पण "

"पण वणू कोई कोनी, जीवणू री जुगाड कसणी हवें तो हीमन सूनू काम लेणो पडतो ।"

'म्हैनें हर लागई ?

"की री'

"घरको री, म्वाड री, जात री घर राजरी' ।

'म सग कूडा क वणू घोई'

तू बी तो क'पण म क'पयोडी घोई", तू कपू नी ?'

"मोमज कोई राणो कोनी, म्यारळें मापें रीभणू वाळी'

"तू म्यारळ साग "

'म्है तज्ज माई त्यारळ सूनू । की समझ बी कोनी । म्हैनें क'री हर घोई घर कुण मां री मोटी म्यारळें साकू सेज सजाय उडीकई पयो ?

कुरजा र नणा सूनू डळक डळक भासू दळणू लागो । हळ पापर पल्ल सूनू वां भासुवा न पूछर बी न वाळज सूनू भीहली । दोयू दिव्व सप्ताटी बोलणू लागो । वे दोयू चुप ही । साकळ रुख माथ भेक जोनी कम हो । अफ तीतरी, जमीं म थ चुपचाप पडी ही । हाडा, बी री मोक्ष्या निकालली । गुलरिया बी रें मास रा सोया सोडणू मे लागोडा हा । गळिया गप्पा मारें ही ।

×

×

×

"बापू !

"हो बेटा ।

'बापू म्यारळी तलेवार मन सूनू पो । हू दुसमण र दळ न बाड न '

"तू भज्ज नेनो घोई बेटा । त्यारळ बाप घर भाऊ र बठा त्यारळी बारी भज्ज केत सूनू भाव ? तू त्यारळी मां साग मामा रें गाव जा मोघ घणा मेठा मगरिया भर । तरिया तरिया रा रामतियां सूनू रमण घर खावणू पोवणू री समर घोई त्यारळी"

'नो बापू ! मन मेळा मगरिया कोनी रूप । म्है तो धार सागै रण मे रमवा जासू"

‘तू बोली बोली बठ व दू बिणगट री’

बीस बरसा री मोट्यार मोटोही भाई बडकी दियो ।

‘देखी भीई म्यारळी तलवार ?’

ही ही देखी बादर छा री तलवार । यान का होका सू तो गुतरिया बी  
बोनी बीवई’

‘बगती !’

‘ही, बापू’

‘तू क्यू मळूके इ छोटी भाई सू । ई म काई समझ भीई ? तू तलवारा सारी  
की सारी भारे निकाललो कै नो ?’

‘ही बापू ! मझतीस भीई ।’

‘हव जा । छोटा लवार री निग कर धार दिरावा परी’

‘जाबू बापू ।’ बगती छोटा भाई कानी दात काड’र भारे निसरामी । छोटीही  
हू हू कर रोवण बूकी ।

‘भरे, तू सेर हे र रोव ?’

‘बो भाऊ म्याळ ”

भाऊ तो कालो भीई तू काई बी र सरखी भीई ?’

हू तो छोटी ई बी सू, जई ई ती मन भमकाव ई पयी ।’

‘पाछी भावण द्य बगती न भे बी री सांगेही स्पान बिगाडू’

बापू !’

हा बेटा !’

भे चालसू सामज साग साके मे’

‘हव बेटा । जावो भव सू रवी । साकळीई चालसा मापा सागई’

साकळी भागणी सुनी सुनी लम्बावण लायी । सुवटी सीवा लाग, सूरज री  
भगवाणी म पूरब तिस री जाठरा में निकळगयी । मोही ऊपर भेक वल्लू गुरणी  
बोल ही ।

×

×

×

‘जसोदा !’

‘की कैव ई पई रमवा ई नो द्य’

बटे, बासण भरतना री की कियो ?’

‘योडका सा बार काठ मेलिया भीई भर बाकी सँग बाढ में बूर दिया ।’

‘गणा नगदी ?’

गणा नगदी ती गढ म जया करावण सारू भइजी न सूप दिया । भारम

री सरधी सारु पांच सी टीकलिया राकी पी ।”

‘गाभां री बाई कियो ?’

‘गाभा ती सग सार्ग लेण। पढसी । चार पोटा बांरी पी ।’

‘साकळ ई सूरज निक्कलिया पैसा सिधावणी भौई सोगरा हमार ई सेकई

“हव धाई, संकू । पण भइजी भर भाऊ ?’

‘वा न भेष ई रणी पढसी’

‘क्यू ?’

‘वा नै कुण जावण देसी ? काली’

‘पण क्यू ?’

‘भोऽपार साकी करिस’

‘की र सारु ?’

‘राज री हलाळी सारु’

‘की री राज ?’

‘राज, राजा री’

‘राजा आपा न दुबकर पछई को घात नी’

‘सी स छोरी । तामज जबान घणी बधगी दीस ?’

‘हूँ तो राजा आपा न की ‘याल करई पयो, वो तो मैसा म मीजा मांण  
भर पी री हलाळी सारु आपणां भइजी भर भाऊ मर। भौ कुण सी ‘याव भौई ?’

‘छोरा । घणी लपरघटो ध्येगी, की सकी ई कानी, राज म बात पौंचो तो  
गरदन उतार लेइत’

‘मै कीं स बीवां करां कोनी । भल ई गरदन उतार स’

‘जसोदा । तू सपा बावळी ती नी ध्येगी ?’

‘बावळी भै नी बाई बावळी भौई अघ री राजा । लुगाई टाकर जावो  
पा भर मडद या सारु कट जावो । लुगाया पछ बाई या बापखावणी री स्थापी  
घातण सारु जाव ?’

‘गुस्स सू भरियाडी अमकां हम जसोना री चोटो पकड र, येक चिणगट धरी ।  
भर लाता भू सा सू बी न अघमरी करदी ।

‘राण्ड कदकी कां का करइ । बापखावणी सू बोली बोली नी रइज ।’

‘नी हूँ छुप तू भल ई मार काढ’

‘जसदी । तू क्यू मरणी चाव मोघज हाथा ?’

‘तू भ्यारळ भइजी भर भाऊ न मरावणी चाव । मा कै री ? तू डाकण  
घोई ।’

‘घणा लपचप भन कर कुत्तडी ! हमार नागी कर हाँम चेढ देसू राण्ड रे’  
‘म्है त्यारळो धाकळ सू पछई को बीवा नी !’

साकळ, सलाखाँ सू सखोलियोडा, गोरी चामडा रा छुतरकाँ न, कीढिया घीस’र ले जावती । सूनी डेरी साव साव गूजण लागी । मूजडी बळगी बदाण भरतीजगी । सर भूनाँ रो रेवास बण्ण्यो ।

✱

( १४ )

रात रे तीज पीर पूनम, गुलाब कने पाखी पूम्पो ।

‘गुलाब !’

पाँखिया मसळती थकी गुलाब भाळस मोड’र ऊठो ।

‘वधारग्या’

त्यारळै भाग रो बच’र भागी हौं’

‘क्यू ?’

‘सारी भेद छुलम्पो ।’

‘पछ ?’

‘पछ की ? घ्याव मेर सू घिरम्पो ।’

‘सका कूडा’ गुलाब मूण्डी बिगाड’र बोली ।

‘तने प्यारळी भरोसी नी आवेई ?’

था ऊपर भरोसी करन कोई क्यू आफत गळ मे लेवे ?’

‘क्यू ?’

माया बडा तोजसी ? बापड सेनापति ने ”

‘बो घणो हुसियार भौई

‘था सू कम’

‘क्यान ?’

‘साची बात तो था म्हेने बताई व्ही, तो बी ने बतावी’

‘त्याव त्यारळो हाथ देख’र साच साच बतावू’

‘भ्यारळो हाथ काई देखसो ? सिकल देख’र नी बना सकौई ?’

‘सिकल सू तो लोमढो लागे ई पई ।’

‘म्है घालाक लागू पई ?’

‘नी तर की ?’

‘छुद तो कागल सू बी हाया लागो ई पया ।’

मल नी बठ । साकळ ई तू पाछी बळजा ।”

“क्यू ?”

“क्यू की ? म्हे कवू जीसू”

“पण म्यारळी काई कमूर भोंई ? खु” ई तो म्हेन दया उवा री छोटी मरी  
मुण्णावो घर ऊपर सू दबावोई”

“म्हे, कौ र वगा दबावू ?

“है तो पछई की जावा नी”

“काली -हेणी काई ?”

“काला तो घाप हियोडा दीसोई पया, दाह घणी पी काडियो दीस ।”

“तू क्यू बळ ?”

“बळ म्यारळी सौक राण्ड, म्हे वं रै वगा बळू ?

“तो पछ भाग अय सू”

“म्हे घान काई दुल देवू ?”

“दुल तो म्हे देवू ई पयो । मुण्ण ।”

“मोमलै की नी मुण्णो”

“मसलरी छोड, काम री बात मुण्ण घर समझ

“हुकम करी”

“केरु थोवही पढ़ा’र बात करई”

“भगवान तिकल ई भडी घडी भोंई

“भगवान तो खासी भडी फुरसत सू घडी भोंई पण”

“पण काई ?

“भाग म पासवानी लिखदी”

“या तोजसी ही, छुआदयी भा जूण दिया करली म्हासू”

“घणी मूण्ड लागनी तू”

“चाकरी भरू रावळ”

“सभी चाकरी । देख । म्हे सारी विगत समझावू सो दाद राख’र राब नै  
पूगती करणी भोंई

“म्हे अकली जावू अेष सू ?”

“अकली नी तो कीं री भा री मोटी अय बेठी भोंई निकामो ?”

“क्यू ? आप ?”

“रुक्णी पडसी, सेनापति रा भाग खोलणा भोंई घर बाव बी जाणो पडसी

“भव तो मोमजा खोल्या भाग ?”

‘त्यारळा भाग तो यूई घणा उमदा धोंई’

‘‘पोमावणी तो कोई चा सू सोख’

‘सीखल । काम आसी’

‘‘म्है साव झेकली क्यांन जासू ? नी नी करतां सो कोस री भों म्हैती ।’’

‘क्यू खाव कोई तने ?’

‘मार जी न मझो मारे, मझो न कुण ?’

‘‘जव टाळपटोळ क्यू करे ?’’

‘‘गला सू भणजाण ह ।’’

‘‘भय सू दो कोस ऊपरां पेमजी री तळी भोंई । भोष सू वो मानळा त्यारळें साग चालती । मारण मे सग गावा नें सावचेत क्रिया । बी गेल ई फौजा भागें वधनी ।’’

‘भापर सारु राव नें काई भरज करू ?’

‘‘भरज काई परचावणी करणो भोंई ।’’

‘काई ?’

‘‘हाँ, परचावणी करणो भोंई कं घणी बोनी मिनख ही चोखी मिहयो कै’’

गुलाब पूनम रै मूण्ड भागै हाथ दे’र चीं री बोलणी ब व कर दियो ।

‘‘सौगन भोंई भाग झेक बी भाखर बोलग्या ती’

‘‘पूनम मून पारली ।

‘‘हाँ, की बिगत भोंई ?’’

पूनम चुप ।

‘‘बोली कोनी काई ? काई कैता ?’

पूनम केळ चुप रयी । हम गुलाब पूनम री पासळियां में घांगळी सू गिल गिलिया करण लागी भर खुद हँसण लागी पण पूनम नी हँसियो नी बोलियो । जव गुलाब बोयू हाथां सू पूनम व गिलगिलिया करण लागी ती बो, बी रा हाथ पकड लिया । गुलाब इव कोई दाव चलती नी देख जीभ मूण्ड सू बार काढी भर पूनम र गाला ऊपर केरण लागी । पूनम बी रा दोन्वू हाथ छोट र हळकीं सो धक्की दियो ।

‘‘तपो माफ करो, बोल जावो । सौगन भोंई थाने’’

‘देख । म्है झेक’र सौगन मानली, धडी धडी सौगना नी मानू ला ।’

‘‘रिसाणु हेम्या ।

‘‘हूँ’’

‘की क्रिया राजी - दो ?’

‘‘म्है हमें राजी नी म्हैण री’

“उमर भर रुस्योडा ई रसी ?”

‘उमर भर रो मोमज काई वास्ती घोंई त्पारळे सू ?’

‘भारर नी व्हेली मोमज ती घोंई’

‘तामजी तू जाण’

“खर घाप सनेसा देवी ”

सनेसा ?”

‘हू भेक राव खातर भर बीजी महाराणी सा सारू’

‘महाराणी सा सारू तू भाप, भर राव सारू सनेसी मेळू सी सावळ पूगती  
नी कियो तो त्पारळा फूटा ।’

‘मोमजा ती खर फूटोडा ई हुना

पूनम सुलतान रै फौज री बिगत, सुलतान रा इरादा हमली करण री  
सगती, मोरचा जमवण रा पतरा गली भर दूजी छोटी मोटी बाता जकी बी जाण  
सवयी वे सारी गुलाब नै समझायवी ।

“राव, भाप बाबत पूछ ती ?”

‘म्है सुलतान स पला पूगू जी’

‘जे नी पूग सकी ”

‘ती समझल क पूनम हुममण र हाया मारयो गयी’

गुलाब बोली ताळ सारू गळगळी हेगी । बी री काळजी घक घक करण  
लागी, बी र मन में घाई नै भेक’र बिछडया पला पूनम बी नै सीत सू बिपायल ।  
पण पूनम सी भाट री बण्योही ही गुलाब र नणा री कोर ऊपर घासू भा’र  
रक्क्या । वा, भरयोडा नैणां स पूनम र सामी जोषी । पूनम बापरी मूण्डी हुजी  
दिसा में फौर लिमी । गुलाब बी र पगार हाथ लवाय खुदरे नैणा ऊपर लगामा ।  
पूनम लारै खिसक्यो । गुलाब बी र पगां हेटसी रज सेय छोड़ली रै पल्ल बाधली ।  
बी साण्डा घामी सामी दिसावा म भदीठयी । कुम्भळायोही गुलाब, बापरिय ॥  
बिम्बरण लागी ।



# ( १५ )

‘दगो दे गयी बरी,  
चोमास रो चाकर,  
काळ कमर में दी हळवाणी,  
जीवण व्हेय्यो भाखर रे भई  
दगो दे गयी बरी ।’

श्रेक महद घर श्रेक लुगाई मस्ती में नाच रया है। पास बठा दो मिनख डोल,  
तासक बजा रया है घर डेर भेलो डेर मिळाय झूम झूम र या रया है ‘दगो दे गयी  
बरी ।’

‘बपू र किसना ! पूख कित्ता घागळ ऊँची भायो ?’ चिनम रो श्रक सुट्ट  
खचता थका, ठाकर जेतसी भाटी पूछियो ।

‘श्रेक बत दो भागळ ।’

‘हा भई, भागै केवो दूवो ।’

महद—किसन, बिछेरघा दागा दोग,

भाटी में कद मोती होय ?

लुगाई—सीच रात दिवस कर हेन,

तो मोनो उपजावे रेत ।

‘जीवती रो जोडी’ भीड माय सू श्रेक मोट्यार बोल्पो । लुगाया, घू घग्ग ने  
सी सी कर जोर सू हसी । डालक बाळो जोर सू थापी दी । डोल पाळो रो भरणाटो  
हमे तेज व्हेगो । नाचण बाळा बी हमें पूरा मस्ती में भायभ्या । लुगाई घणी सरीर नै  
तोड मरोड न कदेई नीची भुक कदेई लारै । महद बी न घामण सारु भागै बयै पण  
वा हाथ रा फिटकारा देय ऊँची फिर जाव । भीड माय सू लुगाया जोर सू हँस ।

‘जसू ।’

हा, बापू ।’

‘भायो’

‘तापजें मोड हेट ई तो पडी भीई डबलो ।’

पाणी घर तासळो ला वेटा ।’

जसू पाणी रो श्रेक छागळ घर श्रेक तासळो लाय बाप रै कनै मेल  
नियो । ठाकर, श्रमल रो श्रेक मोटी डळी वीं तासळें में मेल पाणी माय श्रमल  
गळावण लागा । नाच हम सतम व्हे चुकी ह्यो । महद-लुगाई घेवानें पूठ केर पसोनी  
मुखावण सारु गाबी र पत्ता सू हवा करता हा ।



ठाकर, हयाळी माथ चुल्ही भर गाव रा सबसू बूढा भर रिस्त म काका, खगार रै हाटा ऊपर हयाळी ऊभाई काका खगार अक खकारे रै समच सबडड करता, हयाळी खानी करदो ।

‘सीरी, नो आई ?’

हमक भावो की फोरो आई काका, ल्यो फेरु अळीवा’ भा केर ठाकर जेतसी भमल री अक डळी तासळ में घसियो

हा काका हम ।’

बूढो सबडको लगाय अक खकारो कियो भर मू छा भावै हाथ फेरियो ।

‘सीरी आई काका ?’

‘हा भई जेतसी, हमकें ओर री सीरी आई, तू बज्जत घणी हेगी रे ।’

ठाकर जेतसी बारो बारो मू संग न भमल रै पाणी रा सबडका लगवाया । खुद चार पाच सबडका लिया भर अक किरचो जीम माथ धरली । भमल री अक मोटी डळी मागण्यारा सारु भेली ।

बपू रे रवत । काळी साण्ड री कोई बावड आई क नो ?’

‘भाधूण रा गाव रा बावड आई । मागण्यार उठाई ।

‘मागण्यार, उठाईगिरी बड सू सारु की ?’

भसली मागण्यार ती माग न ई खाव अत्ताता । हा, हमै लगा घणा लफगा -हत्या । भाटिया री मू छा म हाथ घातण री मसलरी वे ई किया कर । डोलन बजावण वाली घोली ।

‘मसलरी री मजी बखाया ई सरसी, क दिया तांजना सिरदारा नै जेतसी पोही गुस्ती भर बोल्या ।

हुक्म भद्रदाता पूवती कर देखू ।’

काई ? बात, क साण्ड ?’

‘हुक्म बात ।’

हवै । कोई बात केवी ?

कहा बात भटापट री

भा खटपट री भा लटपट री

भा टिटपिट री, भा कटकिट री

मै कवी बात खटापट री ।’

नाच फेरु सारु हेगी । ठाकर पिनक म ऊंघवा लागा ।

ठाकर जेतसी र नाव माथ ई श्री गाव बरयोडो है । गाव म कोई पचास घर है जस मे मू घणकरा ती भाटी राजपुता रा ई है । संग पाचमी पोढो मे जाय अक

बाप रा धूँ । दो चार घर मेघवाळा ग अक बाणिये री, अर अक घर बापण  
री है । यो न घर भवेई कँबी, है मग रा सँग भूपा । ठाकरा री रावळी भाटा मू  
चुणियोडो है । बाकी सग घर माटो घर गोबर सू नीपियोडा है । आषा घर, ऊपर  
सू उषाडा, आषा माये लकडो री साण्ड ।

सारले साला बिरखा ठीक ठीक व्हंगी । बिरखा तो ई बरस बी ही पण  
सातरी नी । हाँ तळाई ॥ छ महना री पाणी जळर भरव्यो । खडीना में बाजरी रा  
दाणा बिखेरिया । पू ल अक बत दो आगळ ऊचा आया है । यू सि घ इलाकी नजीक  
है इ वास्त घणो दोराई कानी । गाव रा घणकरा घर, मवेसी पाळें । पाच सौ  
साण्ड, दो सौ ऊँ, सौ गाया, तीन सौ भेड बकरियां है गाव री कुल सम्पन । सग  
अपणायत सू रैव । काळ पंड जद छागा से'र दूजी तळाई माये डरा लगाव । यू  
गाव रा मिनख चार छ महना इ गाव म रैव, जदतक तळाई री तूण्डो नी  
निक्क ।

अधार पक्ष री सातम हो । च दरमा अजु सगो नी हो । इ वास्त मसाला  
चेनन करीजी । मागण्यार लच्छेणार बाता सुणाय सुणाय सबा न राजी करण मे  
सागोडा हा । टाबर टीगर, नीद मे सुवग्या । थोडी ठण्ड बी पडण लागी । धोरा री  
घूठ, हम हेम जू ठण्णी हेमी हो । ठाकर जेतसी मूनी करण सरू थोडा पावण्डा  
आग बधाया घर बा न जीवणो दिमा सू कोचरी री लवाज सुणीजी । ठाकर थोडा  
वग्या । पगरखी खोल सुगन फोरघा । दो पग बी आग नी बधाया घर हावी कानी  
सू अक काळी नाग पू पाडो करतो सामी दोख्यो । ठाकर र काळज में भी वठव्यो ।  
आज सिध्या पला बी अक लल्लू वा रै रावळ ऊपर आला बोल्पी हो । ठाकर बिना  
मूनी किया ई पाछा मुदग्या । अमल री अक मोटी डळो बाक मे घत'र वे पाछा,  
भीड माय, आपर आनण माये आय बठा घर हुकम दियो ।

‘हम आज री तमासी बंद करो । सग लोग पैला म्हाारी बात सुणलो ।

ठाकर बात बढण पैला बी दिसा म दीठ फकी बी दिसा मे वे काळी नाग  
देखियो हो । पूनम उठ साण्ड न भेकती हो । वे पूनम नै हाकळ करी ।

‘बापू ! मगां न अेव ई रोकखी अक ऊण्डी बात धोई ।’

सगा रा बान पूनम री बात सुणण खातर सावचेत व्हंगा । सोन पाछा जमी  
माघ वठग्या । पूनम, बापू र बान कने मूण्डो मे जाय वा न सारी बात बताई ।  
सोगां नै कोई मतब री बात लखाई घर वे बात सुणण सारू उतावळा हेगा । ठाकर  
पूनम र माघ हाथ फोर लाड कियो घर बोल्या ।

‘मुणी रे भाई सैग ध्यान लगा'र मुणी । बीन मतब री बात धोई, थोडा  
सोच'र बोल्या घरे मागण्यारां वा जावो । हमें गाव में खेल कोनी कराणी ।

पूनम कानी मूण्डी कर बोल्या, 'पूनम, या न शेकानी लेजा'र खानगी दे द ।'  
पूनम उठे सून व्हीर व्हीयो । माणयारा नै हाकळ करी, 'घावो, म्यारळ  
पाळ घावो ।

माणयारां री टोळी, ठाकरा नै मुजरी कियो, ज बोली घर बिडदाया ।  
हमे ठाकर सगा न हुकम दियो, वै नजोक सिरक जाव बात बोन छानेरी घोंई ।  
सग सोग ठाकर र भेद छेई नजोक सिरकया ।

गजनी री सुसतान भमूद तनोट माथ घावो करण री नीत सून घावई । वो  
सिंधु नदी न पार करतो घोंई घर बी री लस्कर घापणै गाव सून निकळ ला । घापां  
सागा न साको करणो पडसी । सो मोट्यारां कमरां बसतो ।'

सुणता ई सुगावा र घडबड लागतो । सग घापरा टाकरां न सम्भाल वा री  
लाठ कियो । वे थोडी घणो गुसपुस बी सह करतो । ठाकर थोडा तडक न बोल्या—

'बुप व्ही, सुणो बात '

भीड माथ सून भेक मिनल बोल्या, बुप व्ही र, सुणो ध्यान सून ।'

'गाव मै कित्ता मोट्यार घोंई ?'

'बूढा समेत तीन सी ।' भेक उवाज घाई ।

ठाकर थोडा बडबड बोल्या—

'बूढा सून कोई भुतळ ? इ गाव म कुण पागळी घोंई ? सग साज सरीर रा  
घोंई । म्हन देखी साठ बरसा री हूँ । पण या जडा चार मोट्यारा न भेक सायें  
पछाडून । भेक बार सून चार माथा काढून । साकी राजपूत री घरम घोंई । सग  
त्यार हो कै नी ?

'भीड भेकें सागै हुकरी दियो, पण भक मिनल ऊनी व्हे बोल्या हूँ त्यार  
कोनी ।'

क्यू ?

इ वास्त क भौमज, सुसतान सून कोई बैर कोनी ।'

'काई भुतळ ? राजा री दुसमण घापां री दुसमण कोनी ?'

राजा म्हाने कोई नाणा मुक्त रा कोनी देव । खुद री भैमत मजुरी कर पेट  
भरो ।'

ठाकर थोडा गुस्स ये भरल्या । 'राजा सून बिद्रो करण री दण्ड काई व्हे घा  
सायत सून जाण कोनी ?'

'म्यारळ जाणुणी वो कोनी, क्यू क नी तो हूँ कोई चुक करी, नी मनै कोई  
दण्ड द सकै ।'

'इ गाव री गाव री घरती घर घन री मालक राजा घोंई तै कै त्यारळी  
वाप कोनी ।'

‘देखो ठाकरा, म्यारळें भूयोड बाप रै सामे जावण री जरूरत कोनी । घाने राजा री चाकरी करणी व्हे ती करी म्ह मुफ्त मे मरण नै तयार कोनी । राजा म्हान पाल कोनी कर ।’

‘हू’ ठाकर थोडा देर सोच’र बोल्या ‘म्यारळें, भेजो कम घौई नी तर म्है तन समभावतो सारी दाता । खर, तू म्हासू अकेल म मिळजे ।’

वो मिनस उठ’र व्हीर व्हेगो । सारें सू सोप बी नै फिटकारा देवणा सख किया ।

ठाकर पेह बोल्या, ‘सुलतान री फौजा घाग बघई पई अर काल सिध्या क रात, घापण गाव तक पूग जासो । या लोग तो जाणो ई हौ क तन्नोट साह मारण, घापण गाव नै न ई घौई । घाघा न घाज रासोरात गाव खाली करणो पडसी । जावण पोवण री जरूरी समान, गैणा, नगदी अर वाम चलाऊ गावा अर बासणा रै इलावा सस्तर साग ले ली । झूपा नै तोड भाग द्यो । बासण ठीकरा अर घरबिन्दरी सग तळाई माय फकदी । घास न लाय लगाय दो अर गाव तै पूरी खाली करदी । चारी, जिल्लो ऊट साण्ड माथ लाद सकी द्यो साग ले ली बाकी होम द्यो । साकळ ई घाघा न प्रेष सू व्हीर व्हे जाणो घौई । जुगाया पला घर जाय न सोमरा सैकली । मडद पला जाय न खडीना में डोर न छोड द्यो । पाणी रा घटका अर छागळा भर, गथा माथ बाध बूधली । कम सू कम अेक पूरी दिन साविस, छोटाव पूगण म । जावो अर हडक सू सग काम नकी कर द्यो ।

भीड चुपचाप व्हीर व्हेगी । ठाकर, अेक डळी केह बाक म घती अर रावळें र फोट कानी व्हीर हेगा । बाडी बाया कडकण लागी, मुटियारी र दिना री सुध कर, वे अेक’र खुद न मोट्यार समझण लागी । वा री कमर सीधी, अर चाल तेज व्हेगी ।

गाव में धडबडाट लागगी । सग लोग ठाकरा र बतायोड काम मे झूक्या । कोई सस्तर भेळा कर रैयो है तो कोई झूपी रा सेवका उतार रैयो है । कोई घास रा भारा बाध रयो है तो कोई कपडा री पोट ने सम्भाल रयो है । डोरा न, खडीना मे छोड दिया । ऊन साण्डा र, पल्लाण कसीजणा सख हिया । सारें बिछावणा अर एक दो बोग धान रा, धी री झूपी सू ले’र पाणी री छागळ तकात ऊन माथे बांध दी । घर रा ठीकरा अर झणूता बासणा इत्याद नै तळाई मे नाखण र पैला सब लोग रा घडा पाणो सू भर दिया । हागरा न धवा र पाणी पाय दियो । माकरल तक ॥ कोई तयार व्हेगा । खुन र हाथा सू लोग घापरा झूपा तोड ताड र वा र लाय लगदी । ठाकरा र रावळें माथ करसल बिछगी पण अेक झूपी अजु साबकी ऊमी हो । ठाकर उठ पूया ।

‘काली तो भाखी मुलक -हैई पयो, बापू बी काला हे रिया भीई, सुलतान बी काली -हे रयो भीई राव बी काला -हैई’

‘काई मुतळव तामजी?’

‘मुतळव बाई, लडाई जरूर रहे सक, पण हरेक माणस लडाई में पड ई, भी जरूरी नी

‘तामजी इसारी केसर कानी तो नी भीई?’

हैं समझियो।

पूनम घुडकी ताळ सोचतो रयो। पछ बिपनी बजा’र मुठफियो। बी साण न पाछी ऊपी दिसा म फोरी। बापू कन पून’र बोल्थी ‘बापू! मा हिरणी भज भीमजा हाडका भाग मेलिया ई। हे, दो रातां सू सुयी कोनी। भजू की दिन भीई। परमै तो राव का पूगणी जरूरी भीई। तामजी साह भली भीईबडळा परी’।

‘तू परबारी तनोट जा भीमजी कानी सू।’

नी बापू। हैं समचार तो भेज दो-हा पा, घर घनू नी घणा दिन लगती सुलतान म भोष तनोट पूगण में। हैं पून जाइस बिळियासर’

जद तामजी मरजी भीमजी कानी सू

‘नी बापू, हैं मर जावा भलेई, पण राव री इया री पालण करण सू कोनी चुकी’।

दो-पू बाप बेटा साण्ड भेकी।

केसर री हासत बीत खराब रहे चुकी ही। बी री सरीर में जागा जावा रगडा माधनी ही घर लोई छकण लागयी। बी रा गावा भीर भीर हेगा हा घर वा में भुरट ऊपर भुरट बिपियोडा हा। मूण्डी भुरटा सू छुलगी हो।

भापरी साण्ड बळना थका ठाकर जेतसी कमरी न खुदरी साण्ड री पूछ सू त्वोन र हिरणी र बाधण सारू भाग बधिया तो पूनम बोल्थी—

‘बापू इ न म घ्यो रवण द्यो। हिरणी र पूछ री बाल कोनी, रास फिसळ जाइस’

ठाकर घेक निजर केसरी कानी नाखी। बी अधमरियो हे चुकी हो।

‘नचीता -हे जावो बापू’ पूनम सान लगा’र साण्ड न उठाई। ठाकर हिरणी र घेड मार, भोरी खाची घर पलक फरुकता ई हिरणी काफल र ठेठ भाग जाय पूनी। थोडी सी भाग ई घेक धोरो हो। काफलो धोरा ऊपर चढ चुकी हो। ठाकर

धोरी पार कर, कद का प्राग नीसर चुका हा। घूढ रै उडणू सू दो तीन साण्डा र माग पाछ कीं निजर नी आवती। पूनम साण्ड न हुनम दियो 'भै भू भू'

साण्ड नीच बठगी। मूमल री आख्या रोवणै रै कारण सूझगी ही। पूनम साण्ड सू नीचे उतर, बेसरी रा ब भणा खोल्या, बी रा गाबा पलटायी भर घावा ऊपर पाटिया बाघ दी। वो छागळ सू पाणो ले'र बी रो आरया धोई, भर पाणो पायो। हम बेसरी नै की चेती आयी। बी री सरीर बुरी तरिया सू टूटती ही पूनम बी न सा'री इ'र बठायी ती वो पाछी जमी माथ लुडक्यो। पूनम आपरै गावा ऊपर उबाय, बेसरी न साण्ड र पल्लाण ऊपर सुबायी भर दो यू भाई वण पाळा बालणा सरू बहना।

मूमल, भाई न काठो पकड'र चिपगी। पूनम बी र माथ हाथ फोरियो भर नैणा रा मामू पूँछ र धीजो दियो।

सिंह्या धीम धीम वग पसारणू लागी। लोग बाक चुका हा। घोटारू भजू भाठ त्स कोस री भी माथ ही। श्रेक धोर र झोल पडाव हियी। साण्ड न नेजाय पूनम सीधी बाप बन पूगी। ठाकरा री मसा रातोरात घोटारू पूगण री ही। पण सग लोग बाक चुका हा। अभाची रात ही, इ वास्तै बाद निकळिया पैला प्राग बघण मे लाचारगी ही। पण ठाकरा रै झळूनी उतावळ ही। पूनम न प्रागलै मारग रा सैनाण बनाय ठाकर बाक मे भक मोटी डळी भमल री मेली एक डळी हिरणी त्र चगयी भर पूनम नै भीळावण देय, घोटारू साक पलायण कर दियो।

बापू नै बहीर कर, पूनम पूर बाफले र लोगा नै सम्माळनी खुदरी साण्ड बन पूगी। मूमल कसरी री मायो दबावती ही। इ र साम ई चुचकारा बी लेवती जावती। अपार मे पूनम चुचकारा सुणिया ती बी र सरीर में श्रेक भरणाटो बालग्यो वो नजीक आयी ती बँन री गोद मे बेसरी री मायो ही, बी न घोडी घोडी चेती ही। पूनम न देख, वो मूमल री गोप्नी नू ऊठण लागी पण पाछी पडग्यो। पूनम मूण्डी ऊपी फोर ऊमग्यो।

'म्है घोडी ताळ सू पाछी भावू भाई, तू डर तो नी?'

'कीया जावोई?'

'म्है बगी ई पाछी आ जासू'

'नी माऊ' मूमल बेसरी र माथे हट तकियो देय, खुद नै मुगत करी, पूनम बन बाप ऊमी'

'हां, हम फुरमावी वंत जावण री विचार भोई? चम्पा र गांव?'

हव

नी बाप शीघ नी जावो'

बसू ।

‘म्हे दुममण र गांव घापन नी जावण द्यू ।

‘मोदज कन तनवार घोंई ।’

नी भाऊ, तसवार म्यान में ई पढी रे जावे घर माया बट जाया कर ।’

‘मोदज हाथ ॥ बिसिया कोनी

‘नी, पण म्हे जाणू व घापरौ घोप जावणो ठीक कोनी’

‘म्हे तो वां लोणां न मावचेन करण री सातर जावू ई पवी ।’

मेक दुममण री दूजी दुममण भरोमी करसै, मा बन्ण बात घोंई ।’

‘तो पछे म्हे बार्द कळ ?

माव ? म्हे बसू ज्यू करी ।’

माव बढी हू जावार्द’

‘नी, तू कत ’

पला माया दुकर तोडला पछ घागेरी बाग मोरांला ।’

‘माऊ ! दुकर माव तोडी, म्हे चाली ’

नी मूमल ठरजा, सुण बाग’

‘बार्द ?

‘बैठ

हमै केसरी बी ऊठ बढी बो पांणी माग्यो । पूनम बी न छागळ उषाम पाणी पायो घर दो सोपरा ऊपर गुळ री डळी घर कांदा घर केसरी नै घापर हायां सू कवा देवणा सरु किया । मूमल मन में मुठरण लागी ।

केसरी घर मूमल, साण्ड भाय सवार म्हे, जा चुका हा । पूनम धोरा माय पसरग्यो । चम्पा र सुपनां री मक सू बी रे सरीर म मरती बापरगी । पाकेली मेदण सरु नीद घाय पूगी । काफले माव सू मेक सतरा बरस री छोरी ‘पूनमी’ घा’र पूनम र पसबाड पडगी । सुपनां म चळियोडो पूनम चम्पा री बोटी पकड र घापर कानी एची । पूनमी री सरीर काठो भरयो सुगन सू भरपूर, चम्पा री मक मे चुळ मिठग्यो ठण्ड सू सुकडीजती पूनमी पूनम री धोतिवो खाथ मोड लियो । पणी भौं र टाण्ड री थकाण घर सुपना र रस मे भीजियोडो पूनम, नण खाल, सुपना मू बिछवो करण री हालत म नी हो । हवळी हवळ रेंग गळण लागी । घोरा री मुखमलो पयरणो गिचण लागो । पूनमो र होटा घाय चडियोडो सिसकारो, बायर साग उडग्यो । उत्तर निस री सुनिवाड में दसण मे हो, काफन री पडाव । कीं सिसकारा, की हूकारा की बुवकारा, पूनमा रें काना ऊपर रळकिया । विरतल री ननो सो ससार ई हो पूनमी री साच । भर छिन री साच, जीवण भर री हात ।

## ( १६ )

दो पोर रात ढल चुकी हो । तारा री चमक मग्दी पड़यो । धोरा री इ  
 सुनियाड में फीज रै जमघट रै कारण जोरदार हाका हू मचियोडो हो । हजार  
 मसाला भक साथै चेतन बूयो । ऊँ बळद, घोडा इत्याद मजघज नै कतारा मे  
 ऊभा हा । सिपाई, धनिया पैरियोडा त्वार ऊभा हा । ऊँगाडिया माथ समान  
 लादीजण लागो । पाच भोल साम्बी फीज री काफली तरोट साथै चढाई करण  
 सारू बूच करण न त्वार सङ्गयो हो । हजार भिण्डा हवा म फरावण लाग ।  
 नगारा सहनाई तुरई, ढोल इत्याद री भेलो गूज भू घोरा धरती रा कान गूजण  
 मरू बूयो । सुलतान मैमूद गजनबी री फीजा बूच बिया तो घडी लखायो कै  
 करोडा री गिणती मे धरती रा सारा भानखा भक जाया भेला बूयो है । पग पग  
 डर लागती क इ टोडी फाक सू घोरा न धरती री कवळी कायाक ठई छुल नी  
 जाव । धोरा र ठवड लाबड टोला ऊपर चढती भर उतरती फीज, घोडा ऊँ,  
 इत्याद सू जमी धूजती बूँ ज्यू लखावती । जाण सपनाग नीच सू घावरी फुण  
 हिला रयो है । नगारा निसाणा समच सिपाइया री कदमताळ सू धरती धूजती ।  
 जाण भक पूरी सैर, माथ उचाया, धरती भाग कानी घूम रयो है । तम्बू, बढिया  
 रसद, सस्तर भर पाणी उचाया गाडिया री कतारा भागै भाग सू घैडी लखावती  
 जाण बाजणिया बिचुवा री फीज बूच कर दियो है ।

हरावळ मे उप प्रधान सेनापति भर मैमूद कासिम खुफिया सरदार, हदियारा  
 सू सस, फूटरा भर सजियोडा, काठी कसियोडा घोडा माथ सवार हा । बार ठीक  
 सार पाच सो घोडा भर चार सो ऊँट, दस दस री कतार मे चाल रया हा । या र  
 सार चार हजार पदल सिपाई हा ज्यार लारै दो सो घोडा भर सो ऊँट री भेक  
 काफली हो । या र पिछाडी पाच सो भर पत्तल सिपाई हा ज्यारै लारै सुलतान  
 मैमूद गजनबी री हराने घोडी हो । दो घोडी बीत ई मजतूत पग वाळी सावण र  
 पाणी भरिया काळा बादळा दाई काळ रग री हो । घोडे री सिणवार देखण जोग  
 हो । बी र पट्टा माथ रग बिरमी कोरणी कियोडी हो । कमर माथ खूबसूरत भर  
 कीमती रेशमी झोरिया सू कसन काठी बाधियोडी हो । इ घाट माथ मैमूद  
 री रूप, ढोल ढोल, तेज चीबणी निजर भावनी । सुलतान रै घोरा र हाव हाव कानी  
 भल उचो री ऊँ भर जीरण हाव कानी प्रधान सेनापति री ऊँट, घोड सू कदम  
 मिळावता भाग वध रया हा । सुलतान रै भाग लार भर पाखती पाखती बी रा  
 भङ्गल्लाळ नागो तलवारो हाथो में लिमोटा भर घोडा माथ सवार हा । सुलतान री  
 भक हाव बी री भादत मुजब तनवार री मूठ साथै हो, बीरा नण फने रा सुपना  
 मे चळमियोडा हा ।



छुकड़ा भर खज्वर गंधा माघ खावण पीवण री सामान लादियोडो हो । घोरा मे ठण्डी राता मे सहनाई रा सुर, हिडदें मे टीस उठा देवता । ठण्डो हवा रा भोला नो द रो 'यूतो' लिया काना मे फुसर फुसर करता । पण ममूद गजनवी प्रकृति सू बो मिडण री सामरथ राकती । बी माघ बायर र भोला री, की घर नी ह्यूयो । फौजा, तारा री दिसा पकड, बरोबर भागें बढनी रयी । घर मजसा, घर बूचा, कोस दा चार, दस, बीस कोस पूगता, रात री समर खूण सागी । बायरो पला सू तज घर ठण्डो रहेग्यो । सरीर मे घड घडी छुटावण घाळा बायरिये रा तरकस सरीर न बीधण सार उतावला हा । फौजिया रा नी'दाळका नण भपकियो खावणा सह हिमा । इ घडी मे जीवण री सबसू मोटी मुख, बायर री घपकियां छाय नी'द लेवण मे ई लसावती । रात भर आगियोडा सिपाइया नै लक्षायो क नी'द बी जीवण री बी मन्तर है जकी जागरण री जर उतार न मिनख नै ताजा झिलिया फूला री ताजगी घर सोरम बगस । सोवण बरणी रेत री गोरी मे दो छिन सोवण री मुख, छटावण री हूस र र नै कळपावती पण सुलतान रै गुस्स री याद माता ई सिपाइया रा सरीर सीतळ पड जावता ।

X

X

X

मुटठी सू रिगसती रत दाई रळिपावणी रात विलुमवी । पूरव दिसा मे पसरियोडा घोरा सार सू रातड फूटण सागी । धूड री सोवणी हर सिपाइया री निजरा में चितराम दाई मडग्यो । पूरव दिसा सू हिरणां री भुण्ड फाका लगावती घोरा ऊपर भाग जेक छिन घमग्यो । ब घण तुढायोई बळ दाई ओ भुण्ड पवनवेग सू घोरा रै समदर मे डूबग्यो । हिरणां री पीछो करता किरणा रा सीर घोरा घरती में जागा जागा बिखरग्या । रत रा कण, सूरज री किरणा मे पलपलाट करण लागा । शू जू फौजा भाग बघती सूरज, घोरा री मोटो छोड चुल भर मुगत घसमान म ऊपर घडण लागती । बायर री वग हमें घोमो पड चुकी हो । घोम घोम सूरज री भट्टी तपण सागी । लाला मोला दूर सू घरती माघ पूरणबाल ई ताप सू रजण तपग्या । ठण्डो बायरियो लू बलग्यो । सरीर पसोने सू लघपय धेगा । थोडा भागली टांगा ऊँची जर, हिए हिएवाण लागा । पदल सिपाइयां री पगयाळियां मे रेत री गरमी जरबा न बी घ नै, ठेठ माघ पूगगी । नीचे सू रेत री गरमी घर ऊपर लाय बरसावती तावडो घर सोरा चेढतो सी लू कमर न बोचती सूरज री किरणा । हलक सूखण लागा, थूक री खजानी छूटण सागी, कठ चिपण लागया, लू र सागे रत बी उडण लागगी । बतूळिया घर घाविया सू घाविया बूरीजण लागी । घरतीकण नणा मे गुसर घोबा मारण सागा । सिपाईं घाइया मसळ मसळ काया रहेग्या । भठी देहो री चमडो काळी पडण सागी घर सरीर तव दाई तपग्यो । माया चकरावण लागा ।

सरोर र मायली घर बारली गरमी पाणी रो छुडकाव माम पण रोजा रा गिन हा, रोजा मे दिन र सजास म थूक गिटणी बी हराम ही सो पाणी पीवण रो तो सवाल बी पैश नी न्हेंतो । आधिया घर घूड सू मरो माफ निजर ती भावती । फीज री कतारा बिखरयो । फीज री कवायद री हिसाब न तो कोई राक मकतो न फुसरसत ही, सय घाप घापरो जीव बचावण री धुन म हा । गरमो घर तिरस री मार सू तकरीबन पाच सो सिपाई पचास घोडा घर लस बळ चक्कर लाय घरती माथे गुडग्या । बेंहोसी री हासत मे वे धरती माय पडियोडा सिसक्ता रया । आगादोडी में लागोडी फीज यान कुचळयो क घाधी सू उरती धूडी या न बूरयो, ई रो बेरो ई कीनी । मारग में तळा घणकरा तो सूबा इ पडया हा । की लाडा खोचरा मे कादो ही । जिनचरा माथ तो रोजा री दण्ड हो कीनी । घोडा, बळ इत्याद ई कादें न ई चाटग्या । ई सू बारा पट फूलग्या घर उ ई पसरने दम तोड चुका हा । पण सुलतान रा होसलापस्त नी न्हेंया । बी सगी लग घाग बधती रयी ।

मारग में केई भाटी सिरदारा री ननी टोळिया री सुलतान रें सिपाया सू मिड न न्हेंगी पण ई लक्ष्मर नै रोकण री सामरय बा म कठें सू भाती ? ई हळकी सी मिडत में बी हलक ई हाथ पाच सो भाटी सिरदार श्रीजी घरण न्हेंगा । घर हजार भाटी सिरदारा री अेक टोळी चुतराई सू काम लियो । सुलतान री फीज मे खावण पीवण रें समान री बाळ सार ही । श्री लोग उपरवाडें र मारग सू घोरा री ओलो ल सार पाँचग्या घर खावण पीवण री समान खट लियो । घर सचणचक हमल रसद रा रुखाना पवरायग्या । बळद भी मरग्या घर व ठ्या पना माछा भागण सागा । तकरीबन पाच हजार फीजिया रें मर्दन घर रा जिनस अ भाटी सिरदार गाडिया समेत तूट न लपग्या घर गाडिया में बळग री जागा ऊट ओत दिया । ई भान सुलतान रा फीज मे घणा ई बला बीत्या ।

लक्ष्मर री चान भीमी पडयो ही पण मुरज री जातरा अेक मन सू अधि मोडो ही । माथ अण्डियोडी सूरज, पच्छिम कानी टिपण लागी घर बीरो लाप मोडी पडण लागी । सुलतान री फीज में पाछी साम आयो । इमे धूडो बी साफ हूण लागयो मारग साफ सूकण लागी । पच्छिम दिम म थोरा रा कपूरा गो दाई बाकी पाड न पसरियोडा हा । सूरज हम ई गो र बाक म घुसण मारु साधार ही उयू बी न चट नै रोकण मे कोई सिमरय कानी बी भात ई बी नै दलण सू रोकण री सामरय बी ई घरती र गवाभिया म ती कीनी ।

गजा खोलण सार भजान न्हें । सुलतान फीज रा सैन सिपाइया साने

नमोज पत्नी । पण सुलतान रो हुकम हो क चाद निकळता ई कूच कर दियी जाव  
अर फजर पला ई किले रो घेरी घाल दियी जाव । मुरग रो पनी बाग र समच  
ई हमलो बालण रो सस्त हुकम ह्यो । सुलतान फौज रा सग मोटा भफमरा न  
बुलाय वामू सलाह मशवरो कियो अर फौज न दो हिस्सा म बाट दी । वाराह  
अर लगा रो फौजा अझ लग पुगो कोनी हो पण वान उत्तर दिस सू हमलो  
बोलण रो हुकम हो । खुद रो फौज न वो पूरब अर दक्खण सू भाग बधण रो  
हुकम दियो । बी न दोलत छूटणो हो, इस्लाम फलावणो हो अर वुतपरस्ती न  
नस्तोनामूद करणो हो । बुना न तोडिया सू बी न जप्त नसोब 'हे सकती हो ।  
ई सारू वो पाछण्डी पुजारिया न कतल करन वारो जागा इमाम मुकर करती ।

राजा रो रयारी अर होललो भापण सारू खुफिया छोड दिया गया ।  
सुलतान खुद बी लडाई मे जूझणो चावनी ई वास्ती वो आ जाणण सारू उतावळी  
हो क बीरी भिडत राव विजयराज मू कठ 'हे सक ? सनापति अर भफमरा  
भाप भापरी टुकडिया सम्भालतो सितरज रा प्यादा सुलतान र हुकम रो  
तामील मे तक्मीम व्हेगा ।

✽

## ( १७ )

मीठा सुपना मे रण बीतगी । पैजा चम्पा सू रगरेळिया पछ सुलतान ममूद  
नै मारण रो मोन, राव सू सिरोपाव अर जागीर सेवण सू ल'र चम्पा सू ब्याव  
सक रो जातरा ढळगी रात रो सुनो घेऊ पोर मे पूर करली । पूनम रो जद घालि  
खुली ती सामी पूनमा पाणी रो छागळ अर कचेवी लिया हाजरी मे ऊमी हो ।

रात भर काई सुपना मू रमता रयाई कबर सा ?

पूनम घेऊ र पूनमी रो आखिया म आखिया गढा र हसियो । पूनमी लाज  
मू नण भुका लिया । पूनम बी रो हाथ भाल खुन नडो खावनी ।

तन बग कर ठा पडो के म्हे रात भर सुनना सू रमती रयो ?

'अ ती भापरा नण ई मेन खोल कवरा '

'तो तू नण रो भासा रा भासर ओळख काई ?'

'हव, पोडी बीत बिदिया सीखी घौई'

क सू ?

'भाप सू ई'

म्हामू ?

'ही'

कदी ?”

‘रात’

“रात ?”

“हूँ।” पूनमी फेर लजायगी। पाणी सू आंखियां अर मूण्डो धी र पूनम कुरली कियो। सोगर माथ पडिय धी र लू द अर गुळ री डळी सू कवी भर पूनमी, पूनम र सामो कियो।

“लिरावी”

‘पूनम, पूनमी रो हाथ पकड’र खुदरो मूण्डो धी र हाथ रैनजीव लवायो घर बाकी फाट र वीं री आंगठिया बाक मे दवाली।

‘छोडो ऊँ हूँ’

‘हूँ, हूँ।’

नी, कोई देख लेती तो --”

“कुण देखई ?”

‘मोधजा नख’

“ढापल”

‘ढाप लिया”

हमें कुण देखई ?”

“भाप”

‘ल, भै बी नैण ढापलू। हमें कुण देख ? कुण दीखे ?”

“भाप”

‘पूनमी !”

‘हूँ’

‘तू बीत मूण्ड लागई”

भरकी देय पूनमी हाथ छुटायो अर ऊभी भेगी।

“माफ करी भसदाता”

‘रुमणी ?”

‘हूँ’

क्यू ?”

‘तू सुपना मूँ ई रीझ्या करी, विरतम ने तो दुल्कारा ई दयो’

पूनम थोटी सोच में पडगयी फेर थोटी मसखरी करतोडी बोल्थी—

‘भै तामज जैडी फाळी, जळूटी न सुपना में सम्भावू ? विरतस बी कोनी बाव !’

हम पूनमी सोय १ उठ ई नाल र ढोर "हेण लागो । पूनम थोडो ऊचो हेर पाछी वी रो हाथ भाल लियो ।

पूनमी !'

की भौई ?' पूनमा थोड मान अर भक्क र साग बोली ।

साण्ड थोड़, हिरणो रो जोड रो ?'

भौई तो, पण वा दूज असवार सू कोनी डब'

म्है दाब लेसू'

पूनमी थोडई भौई व हाथ भाल र मीठी बाता म भरमा लेवो

म्है तन कद भरमाई ?

'रात

"रात ?

भूठी'

भूठा त'

बात खोमन बता'

'बात तो बगत घाया घाप ई खुल जाती ।

मीमजी सुपनी सुणली तो ईमक सू बल र राख रहे जाती"

'बल घारा बरी दुसमी बल म्हारी सोक । हा काई करो साण्ड न ? सुपन में गवाई परी ?'

सुपन म नी जागत म

'अ

देख मसखरी बन्द करा घर मुगळव री बात करा

मसखरी म्है करूँ क आप? कदका छेडो होई पया'

'आज ऊठना ई तांमजी मूण्णी देख्यो मत रो'

'देखी कवर सा ! थोडो सोच समझ र बोलजो । हमक भंस कयी तो ठीक नी रसी

"की ठीक नी रसी ?

पूनमी हम पण सू फटकारी देय चार पावण्डा ऊँधो फिरगी । पूनम रो मस्ती अज्ज उतरी कोनी । वा पाछ सू जा र वी रा थोटी पकडली । पूनमी रोवण जडो सिक्क करी अर पूनम वी रो थोटी पाछी छोड, वी रो हाथ भाल लियो ।

"अक बात री वचन द ।"

"काई ?"

“पला वचन दे’

‘पेला बात बतावी’

“पला वचन पछ बतासू ।”

‘वचन पछ देसू’

“नी पला वचन द”

“दियो’

“की सू ई नी कय ।”

“नो’

‘देख पूनमी ! मूमल घर केसरी रानै मँथ सू निकळ चुका घोंई पाछा नी भाया, मन, वान सोधणी घोंई नी तर बापू मन कार्व नै खा जासी घर वान दो-पू नै जीवता नी छोडसी’ भक’र ती पूनमी रा होस उठग्या पण दूज ई छिन वा सम्भळ’र बोली—

साण्ड घोंई भेक हिरणी सू बी सेज गत रो पण “

‘पण की ?’

‘मन साथ बालणी पडसी”

क्यू ?

भस पै भसवार नै कोनी चढावै’

‘म्है, सूत न पादरी कर लेसू’

‘भ लकलण माण्ड सेजावण रा नी घोंई”

ती पछै म्है की करू ?’

‘करणी की घोंई ? मारण जाणी ? भेय सू केय दिण दिसा मे जावणी घोंई ?’

उतराद’

“उतराद में ती जेतसी गाव घोंई”

‘नी भोय नी, पूरव कानी’

पूरव मे ती मारवाड घोंई’

‘भरे हव सनै की बताळ ।”

“मन बापडी नै मती बतावी, पण साण्ड विमरणी घोंई , भेकला न सुप, जीव जोखम में नी नाखू ”

‘म्है पाळी ई चल्पी जासू ”

‘पाळी, किता बरसा सू पाछी भावण री विचार घोंई ? ”

“पाछी क्यू भासू ? ”

‘जद साण्ड कोनी भलाई मे साण्ड गमावू ”

‘भेक बात घोंई ”

‘ ग्रेक अक करता जाण कित्ती बातां कयदी अर अजू अक मत्ती कीनी ? ’

‘ कोइ अमवार कीनी जकी छोडर पाछी आ सक ? ’

‘ छोड सक पण पाछी आणी हाथ कीनी ’

‘ क्यू ? ’

“ मोअजे मनरी म्हे महाराणी हीई था कुण व्ही पूछण वाळा ? ”

‘ म्हे म्हे हा म्हे बोई कीनी पूछण वाळो पण हमें बैंग कर पण ’

‘ केळ पण अथ वठा रवी काफल न धोरी पार करण दयो पलक भपता खमो देर पाछी आवू ”

पूनम न दो पल दो दिना सून बी साम्बी घर मोटा लागण लागी  
वीरी खासी मस्ती रो नसो हमें सोच फिकर म बदलण्यो भूमल घर कैसरी रो  
सोच, चम्पा रो सोच बापू र गुप्त रो सोच, सुलतान न मारण रो अर आगोर  
पावण रो सुपनी बूडो पडतो सल्लायो ।

काफलौ कूच कर दोठ सून मोअल हे चुकी हो । ग्रेक साण्ड बी र नजीक  
आय ऊभी व्हेगी ।

बी पर वठोडो मडद ऊपर सून हाथ नीच कियो अर पूनम न हाथ मिळावण  
रो सैनी करी । पूनम अेकर तो अचम्ब सून बी भरद बानी देखण लागी पण दूजे  
ई छिन धितां सोच्या विचारया हाथ म हाथ कल्लायो अर साण्ड र पेट माथें अक  
पग माण्ड, हव करती साण्ड ऊपर सवार व्हेगी बी र, ठीक तरिया ठेण सून  
पला ई साण्ड सडण लागी । पूनम न सल्लायो साच्याणी वो ई साण्ड न नी ढाव  
सकती । साण्ड रो तख चाल सून जोर रा हिचका लागण लागी पूनम आग वठ  
असवार र साधा ऊपर सून हाथ अळगा लेव बी र दो सून हाथां र बीच सून निकाल  
बी रो लाक सून थोडा बार काढ लिया । बी असवार र पतले पेट ऊपर सून हाथ जण  
फिसलण लागी ती वो हाथा न ऊचा ले आयो बीरी भागळिया मे अक अण्णाटी  
चाळण्यो । असवार, पूनम र हाथां न आपरी लाक म काठा दवा लिया । पूनम  
रो माथो असवार र साध ऊपर टिकण्यो, असवार मूण्डो नीचो कर पूनम रो  
भागलिया रो बुचकारी लियो अर माथ ऊपर ल फटें न थाडो ऊचो लेव आपरा  
केस पूनम र मूण्ड ऊपर रळका दिया । पूनम रो हियो पुलक सळ्यो । वसुधी में वो  
ह्याळिया रो दाव वढादी । असवार ग्रेक सिमकारी कियो अर साण्ड रो मोरी न  
थोडो साच दी हमें पूनम असवार सून वाठो चिपन वठण्यो । बी रो ह्याळिया गरमास  
अर गिर न भरियोडो हो । भी रो भाखर काटती साण्ड हाफण लागी ।

जाणो मोई केत मुसाफिर ?

जेत ले जावें असवार’

'बागी न पग दीस पया तनोट कानी रा'  
 'पाट नगर मे, ले जालीनी मिलियाग'  
 'मा हिरणी री मा जायी'  
 'भूल गयी स मनवायी  
 'बोल बणली अजर गुलाम ?'  
 'सूरी ताम्रज हाथ लगाम'  
 'देख चुकाजे पूरी सग'  
 'सह्या न जासी ताम्रजा तेग'  
 'बापम री छोडा तकरार'  
 'हेन करा, ल कर मनवार'  
 'मनवाश मगर चढसी ।'  
 'सादयोडो घन कुण लेसी ?'  
 'माभजी साची धन पूनम'  
 'लेणा पडसी लाख जलम'  
 'लाख छोड म्है, लेयू क्रोड'  
 'हम छोड द माया फोड'  
 'पला मोटी हाथ जोड'  
 'कह्या जोडू बंधिया हाथ ?'  
 'शेल तिहें भट घाली बाथ  
 'हाथा म पहिया खीरा'  
 'किण नणदो री भावन रा ?'  
 'जिणरी किस्मत म हीरा'  
 'सूतो मारण लूटे लाव'  
 'बाकी साण्ड चरावी फौग'

म्हा भ कर असवार साण्ड न भैकी । पूनम असवार री खाधा री मा'री  
 सग माचें जतरियो भर बीं सू विलूमग्यो । माझळ रात मे धोरा री रळियायणी रेत  
 रामनिया री रमत मण्डगी । लाजा मरता बादळी तारा री पडदो कर तियो ।



( १८ )

“तू काई सीचे मूमल ?”

“है जाण मूमल सुपना र बाभ मू धरती माथ घा पड़ी ।

‘मूमल’

“हू, इया मूमल, मूमल री रट लगाता रती क काई मुनळर री बात की करती ?”

केसरी, मूमल र गळ में दो-यू बायां घात र बी न काटी भीषसी ।

छोड़ी’

‘नी’

“म्है कतू छोड़ी’

“रुसगी काई ?”

“हू । बात ई रुसण री छोई ?”

क्यू ?”

“लारै पादरा नी बठा र सकी ती मन सतार द्यो मू पाळी घाल ससू ।”

केसरी घालती साण्ड मू कूद पडयो ‘न हमै राखी’

मूमल झजू भापर मनगत में आसूभियोही ही, बा बापू रै गुस्म री कळपणा म हूबीही ही बा जाणती ही क दोपार तक बा चम्पावर मुसकिल सू पीच सकली घर उठी न साकळ ई जन् बापू बी घर केसरी न नी देखला तो पूनम री चमडी उधेठ देसी थी र सरीर मे चागचक्र घडवडी छूटगी घर जाए कद धीर हाथ सू मोरी खाचीजगी । साण्ड सपाट हवा सू बाता करण लागी । दो चार पाच कोस पूगा पछ बी न चेतो बायो ।

‘या म्हासू साची हेत राखी क दूजा लफगा दाई कोरा लुनर रमण सारु मन रामतियो मानोईपया’

पडतर कुण देतो ?

‘बोली कोनी ? नाराज हेया काई ?

मूमल री उवाज पाछो बी र कानां स टकराई हमै बा घोडी लार कुकी । बी रा होस उडग्या । लारली पासो खाली हो । मूमल लारल पाम पैला हाथ फेर तसली करणी चायो । पण जद जाया खाली लागी तो लारली बानी मूणो कर जोयो । रिंद रोई म खुदन झेली देख अवर ती बा घबरायगी । घबरायोही बा साण्ड न पाछी फोरी । हडबडाट में बा जिता भूनगी । साण्ड बी घाक चुकी ही । एक बावळियो देख, साण्ड उठ ई रुकगी । मूमल री कासजो

पड़कण लागी । बी र नणा म घासू भायग्या । वा खुद माथ घणी ई गुस्सी करण  
 लागी । नी बाबत री रयी नी बाधिया भावणियै री । म घारी रात मे जाव  
 बी ती केन ? तारा री चमक बी फौरी ही । पैना तो वा सोची क साण्ड ले  
 जाव जत चली जाव । यण सुलततान री फीजा रै मी सू बी री कालजी  
 भ्रक'र केरु जोर सू घडकण लागी । बी री कण्ठ सूखग्यो भर दात चिपग्या ।  
 वा बरुम धिह्योडी साण्ड माथ सू खिरगी । जेहीसी मे वा जमी माथ पडो पडो  
 टकण लागी । मोरो हासी किय्या सू साण्ड रा नकेल री दबाव जाती रयी ।  
 वा मुगत जेगो, भर मरी धोरा म विचरण निकळगी ।

म घारी रात में केमरी सावचेती सू डग भरती भूमल री पीछी करती  
 प्राग बघ रयी ही । वो पाच छ कोस तक चाल'र थाकग्यो । बी र सरीर  
 में केरु टीसा हालण लागी । लाचार हे वो अक घोर माथ पडग्यो । पडता  
 ई बीरी यफाण मरी दही माथे नी द हमलो बोल दियो । सूरज री सज किरणा  
 वा न चली करायो । वो रै मामे काई स धी मारण नी हो । च्यारु मर धोरा भर  
 पू' भर ऊपर सू लाय बरसावती सूरज री किरणा । खुदर भाग माथ बी नै तरस  
 भावण लागी । वो मनम घणी ई पछतावो कियो पण हमें बी साद कोई मारण  
 नी ही । सूरज री गरमी सू बचण खातर वो अक घोर री मोली छोड बीज  
 घोर री झाड लवती भर बीजे सू सीजे री । बीरो गळी सूखण लागी । सारें दिन वो  
 थूक गिटती रयी । जद कण्ठ री थूक बी सूखण लागी तद वो रोबण लागी पण  
 नणा री पाणी बी सूख चुकी ही तिरस बुभावण री कोई सपाव नी देख  
 वो खु'री पेसाब धोबे मे मर न पीयग्यो । पण तिरम र रै नै घावो करण  
 लागी । सेवट सूरज भापमग्यो । हम केसर री निरस की मोळी पडो । वो  
 खु'री पेसाब पीबण री बात माथे सचकाणी पडग्यो । वो खु'नै मोन रै हाथा सुपण  
 सारु नण भूद लिया भर दो'यू हाथा सू कण्ठ नै दबावण लागी ।

म । कुण घौई तू ?" ठोकर लगावना पचा अक मडद री कडकती  
 सुर केमरी माथ पडयो ।

"म्ह केसरसिग भाटी गांव जेतसी री"

'है । काई लेवा घायो अये ?' वो मडद पूछयो ।

'ठीक मममग्यो ऊठ मोघअ साम चाल'

केत ?'

'रूप री मन्ती देवा

मोमजी पोई भो कीनी म्हे कन् म्हे कसगी हूँ जेती रो मानी '  
 'हा हा सुण लियो ऊठ व हूँ सात रो दो चार ।  
 'लान रो वसू ठाकरा तनवार रो दयो नी सो पावी प्राण तो नीसर'  
 'प्राण तो बाग लेसा ई वसू पना पारी परस तो करसा'  
 'की रो डोकरो घोंई तू ?'  
 'मरजण सिंग रो  
 'कसो जोड रो भूभार ?'

हव

— तव ती तू मोमजी भाई हियो । काई बिली पढयो ? मिणियो दाबनी ही'  
 केसरी र नणां सून दो मानी टप देता सिरग्या । वो मढद वो न गळ सून  
 लगाय लियो ।  
 'बाल डेरे'

केसरी घर गज दोसू भेळा बठ पाणू कियो घर ऊतर सू गरम दूध पियो ।  
 केसरी मे पाछी नुवी सगती बापरनी । हमें बी न मूमल रो भोळू सतावण लागी ।

दो साण्डा पत्ताण कसियोडी त्वाण बठी ही । केसरी गाव पैली वार  
 कमर सून तलवार लटकाई । घापी रात र लग टपे पज घर केसरी चम्पापुर  
 पोचया । घघबळिया भूपा सून निक्कली चिणवारया सारी कथा बलाण करदी ।  
 समसाण जडी गि घ सून बारा माथा भिमावण लागी । व दरमा हमें उजाम कर  
 गाव रो हवीगत उ सावळ उपाडी कर दी । ह्या उवा घघमरिया बूना ठाडा रा  
 प्रभकिचरया सरीर टमकता हा । जागा जागा खाडा घर मळरी र हलावा की  
 खोपडिया कटियोडा हाय टाग टाबरा रा विरचा कियोडा सरीर घर जिनावरा  
 रो बन्धू देवनी हड्डिया रा पजर मुलतान रा दो-चार सिपाई गाव मे भड्ड  
 घूमता हा । गज वा रो गोटकिपा उतार बदली नेवण रो भलाग कियो ।  
 केसरी चितबगनी हणी । वो ती मूमल रो भोळू मे खुदरी सुध भून घयी । भेक  
 दो जागा लुगाया रा कटिया सरीरा वन पूग, वो भोळवण रो कोसोस करी ।  
 पण गज रा अ बोल 'काला ! जवान छोरी न कतल कर जडा म नाफन नी  
 भोंई । स्यात मूमल न ममूद रा सिपाई भालतो भोंई' वो र काळज न बो ध  
 नाह्या ।'

"हीमत राक । घापा लेता बदली । म्हे मूमन न नी छुगय लावू तो भलल  
 रजपूतणी रो चूगायोडी नी । सोवन तपो रो, जे तोमजी मूमन न वन लाय नी  
 ऊमी करु ती । पण तन मोमज कवण म हालणो पढसो ।"

"म्हे नी जाणतो व ममूद अही जालम माणस भोंई, डाया मितला न यू

बरसा करण रो बी नै काई हक ?”

“हूँ । हमे बाता कम कर जाणनी तो काई कर लती ?”

“मै वीं न इण दिस में घुमण बी नो देनो”

‘हूँ, अरुने सू अरे छोरी तो ढबी नो अर लहर न ढाव लेनी । ज’ केरु क जनमी रा ठाकर डीगा हाकण में हुसियार भी, हीमन रा पोवा भी, साव पावा ।’

‘देव गजू । मन गुस्सी मत अणा”

‘केसू । घाव अवर गळें मिलजा । आज बस बरसा पछ मन कोई ई नाव मू बतलायीई ।’

दोसू अक दूज सू गळें मिलग्या । अक मल्ल री ओली ले’र दो यू बैठग्या ।

‘देव कसू । इ लहर सू लहर री तागत नी त म भीई नी म्यारली ।

घावा या सू मिड भल ई जावा, भलई दस बीस सिपाइया न ठिकाणै लवादा, पण मव’ घावा न मरणी नी भीई । मूमल नै मुगत कराणी भीई । अर इ काम सारु बारी सू जादा हुसियारी अर अकल जोइजै”

‘पण’

‘पण की भीई ? जे पेला बुध सू काम लती तो यू मूमल नै हावा सू गमाती ? २० सो २० । हम म्यारली बुध अर तावजी सुध । समझगी ?

‘हव भाळ समझगी’

‘तो, खोल गावा

गावा ?” अमर केसरी भेली थेली ।

‘ही भीमजा बाव या गावा मे ती मरण री ई मैतव भीई”

‘पछ ?’

‘पछ की ?’ घावा मैमूद रा चार सिपाया नै मारया के नी ?”

‘ही”

‘बस तो पछे अ गावा उतारी, वे परी, अर सीखली सब मारणी ।

गज री सूरु अर समभावण सरुप दो यू जणा ममूद रे मरयोडा सिपाइया रा गावा पर लिया । वां गावा र ताजी लोई खानानी हो । दाम्पू जणा तलवार सू खु’र मरीर माथ दो चार जागा, खासकर ढाव हाथ अक टाग कमर अर मूण्ड माथ छाग छोग घाव कर लिया । घूड में छूट’र सरीर नै धूड सू अर लियो घर मुनान र काफन म भेला मिलग्या । सुलनान रा सिपाई वा न घायला र तम्बू में पूगाय ग्या । छठ हकीम साव वार घावा न घोष वां माथ ओखले लगावदी अर पाटा बांध दिया ।

( १६ )

पूनमी '

हव '

'तू चम्पा नै देखी ? '

"देखी नी सुणी भीई"

की सुणी ?'

सुणी व बीउ ई अकह छारी भीई कोई घाहेत बी न उहाय लेययी, अर हव व। काली हिणोडी फिर ।'

काई बात करई ?"

हूँ साव साची बात भीई पण आपर की लेणी भीई बी सू ?"

'मैं बी सू व्याव कह ला'

व्याव ? पूनमी री मूण्डी उत्तरयी ।

'क्यू ? बोली नी"

हा करो व्याव हम वाली छोरियाई व्याव करण ओग रैनी भीई"

बात री हल बल्लण सार पूनम दूजी सवाल कियो ।

"सुलतान मसूद री नाव सुण्योई ?"

हा सुण्योई बी सू तौ व्याव नी करणी ?"

पूनमी षोडी गुस्ती भर बोली—

व्याव नी बी सू लडाई करणी भीई अर बी री माथी काट राव न भेंट करणी भीई"

'हूँ । सुलतान भीई काई ऊदर री बचियो व साग्रज हावा माथी बटासी बयू ? म्हे मे बल कोनी ?

बल ती षणी ई भीई कवर सा अतू मौमना हाडका अर तरीर दूजई पयो, पण कल कोनी"

'की मुललव ?

"मुललव श्री क खुद सू दुमण न जीतण सारु चार लळा जाइज मेक सू पार कोनी पढ'

वे की ?'

'ह्यो । साकी करवा चाल्या अतू इतरी ई ग्यान कोनी"

तो तू समझाद, बढी पसर ई पई

तो सुणी । खुँ सू जादा बल वाल दुमण न जीतण सारु बल रे सार्ग दल, कल अर छल न बी काम में लेवणा पडई, नी समझिया ?"

"तू तो बीन हुसियार निकली"

"वा तो हू, छोई जद तान भाल पीटा किया"

'तो मनै बी सिलाद'

'क्यू ? भसमासु बाळी दाव मोमजै ऊपर ई भजमावण री विचार छोई?"

"तन की जीतू ? मन तो मेमूद माथे वार करणी छोई"

'रजपूना में मो ॐ तो भोगण छोई साम पना मोन रै मूण्डे जावई"

"का मुतठव तापजी ?"

'मुनळव साफ छोई । केत ममू री सस्कर घर कन राव रा गिणती रा भाइन घर धाहत ?'

'माटी धाहन घर भाहन छोई ?"

हो ! हेवै । घर धकल होण बी । तनोट मावण री वार लडीके क्यू नी बी तू सीवा माथ ई मिह '

इ सारु बीत जादा मिपाई जोइज '

'मा ई ती म्है कतई, जू मुकावली करण री पूरी सिमरथ नी म्है तद दुसमण सूर राजीपो कर सणी ओइजै '

'ज दुसमण नी मान तो"

मान क्यू नी ? ई मे वी र बाप री की जावई ? बी तो नफ म ई छोई बिना की गमाया बी र हापा की लागई तो वो क्यू नी लव ?'

पूनमी री बातां सुण'र पूनम अबधर म पडागी । मी न मन ई मन पूनमी री भक्त माथ गरब धेण लागी । वा चणी ताळ मोथती रेंयो । गाव लाली करण सूर 'र मूमल घर केसगी घर खुंरी हामत र बारि मे वा खूब साच्यो । सगळा री बरबादी री कारण हो जुह । वो पूनमी न जमने । पूनमी बी र पसवाड ऊधी पडी धाराम सूर सूती हो ।

ऊठ ! तनोट री मारम पकडा "

'कवर सा, म्हैने डर लागई । मोमजी ववल बस आपन पोचावण री हो । भक्त दिन घर भक्त आधी ऊपर रेंण बीतमी छोई इवै म्हैने मोमज टिकाण जावण दमी

'पण तू तो पाछा जावण सूर नटती हो '

म्है की तामजै घोरा सूर घोडो घोली छोई ?'

इव करु घोरा"

"तो करो घोरा"

‘वपान करू ? मान जा बढभायण’

‘ऊ हूँ यू नो मोयजा पय पकडो’

“पय पकडै मोयजी बलाय” आ कयर पूनम दोयू हाथा सून पूनमी न ऊँची ठठा र साण्ड माय वठायतो घर खुद बी साण्ड ऊपर चढ सवार व्हेगो । पूनमी साण्ड री मोरी जाण कर होली छोटदी । साण्ड धीर धीर पावण्ण आगें बधावण लागो । पार पार, साण्ड खुल मदान में बालण लागो । कोस भर री भों पार करण म खासी साळ लागो । पूनमी तो मन में सावचेत ही क इ चाल सून बी वा दोपारी ताई नच सून तनोट पूग जासी, पण पूनम र मन म घणा उतावळ हो । मारण म घणा इ ऊँट सवार धावना जावता मिलिया । पण स कोई आपस री म बस ज माताजी री कर निकळ जाता । प्रेक नी सवार पूनम सून सवाल जवाब क्रिया पण पूनम रें पडूतर सून थारी बम जावती रयो । परभात री पुळ, पूनम तनोट री सिर मोळ र सामें साण्ड भकी ।

✽

( २० )

गुलाब आई नद महाराणी र मल रा कपाट बंद हा । वा खासी साळ बार ऊभी रयो । राव सून मिलिया पैला वा महाराणी न समबार देवणा जावती । सूरज असमान मे निरी ऊंची आ चुकी हो । काजी व्हे र गुलाब राव र मल कानी गई पण राव मोय भी हा । पण न घीसती वा पाछी महाराणी र मल कन पूगी । गुलाब न जावती देख चम्पा घब करती महाराणी नें घरज करण न दीडे । गुलाब री मन सछाळा लेवती क बी र जावण री सुण महाराणी सा सामा पणा भावैला । पण खासी साळ व्हेगी घर चम्पा बी पाछी कोती बळी तो बी री मूण्डी उतरायो । बी न अडी लखायी जाण वा कोई भसैये मुनक में धायगी हे क जाण वा कोई बीत मोटी अपराध कियो हे घर बी री दण्ड भुगत र पाछा आई हे । बी न लखायी क वा नै कोर घर सून काढ दो हे । अफ छिन सारु बी न विचार आयो क बी न अय सून ई कारण काडी हो क वा पाछी नी भावै पण

वा विचारा म छळूभियोडी लारै पावण्डा थण्ण लागो । इतरे में कस्तूरी आयगी । वा गुलाब री बाहुडी पकड र वा न जमेवो घर छाती सून चिपटगी । किस्तूरी गुलाब न बाया म भरन कसली । गुलाब र नणा सून आमू दुळता रेंगया । किस्तूरी बी न पकड र महाराणी र मल मे लपगी । महाराणी पिलङ्ग माय भापी पोडियोडी ही । चम्पा पय दबावती । गुलाब सुळ न पाय लागण वियो । महाराणी घोडी सी मुळवी

‘भाव गुलाब ! कद आई ?’

‘खासी साळ व्हेगी आया नै तो अघदाता’

‘कोई दुख विपत्ता तो नी पडी ?’

“नी भननाता । आपरी किरपा सून आणू न रयी”

“बाकोडा बहेला ? जा चोडो ताळ आराम कर, पळ मिळजे’

‘आराम तो पळ बी करणीई मोंई भननाता । पैला राव सून मिळणी जरूरी  
घोंई’

“बसू ?” राणी चोडो खारी निजर सून देखी

‘सनेसी घरज वरणी मोंई भननाता”

‘न रो सनेसी ?’

“पूतम सिंगजी रो भननाता”

‘बसू ? वो खुन केत मोंई ? जीवई क ?”

‘हीर ही जद तक तो जीवता ई हा”

‘तो पूतम सून पुनमनिम जो देया ।”

“नी महाराणी सा ”

‘खर । छोड ई बात न, तीन काल येथ सून मीप्रज पीर जावणी मोंई, राजकवर  
री घाय बण न, समझी ?”

“हुकम भननाता’

‘हा तो काई सनेसी ल्याई ?”

“घाय साव तो की नी भननाता । राव साव पूरी विपत्ता मोंई’

हव, राव न खानगी म वनाई- तीज कान ला नी पड । बीन बदळगी ।”

“गुलाब छूक मिटगी । नैण बंद कर आसुवा न पलका में रमा दिया ।

‘गुलाब ! कीं चुभणी काई ?”

गुलाब मूण्डी नीची किया मापी घुलिया । ‘चुभू जी रे म्हे चुभू भननाता” ।

‘मन त्यागळी पूरो भरोसी मोंई’

“गुलाब ! म्हे बीत हसी बहेगी ?”

नी केत ?”

“खर । तू जा पैला थाळी जीमल । राव नी सनेसी देय, तीजी पीर म्हासून  
मिळजे ।

‘हुकम भननाता” कैर गुलाब मीथ सून सपाटे सून बारें निकळगी ।  
बार बार वा हुक्का हुक्क भरोजगी । हावणुषण रा निवाड बीड, वा फाट  
फाट रोवण लागी । हमें बी रो जीव की हळती मिळी ।

गुलाब, महाराणी सागें बिया र दायज म घाई ही । लाग्ना दो बरमां  
सून वा मशगेली रो खास मानेतण व्हेगी ही । महाराणी रो कोई बी बात बी  
सून घनी नी ही । वा भेकसी दावडी ही जकी क महाराणी र भल मे घर बंद



बद ई महाराणी र मोल मे पिलग माथ बी सूय जावती । महाराणी री इतरी मानेतण व्हेण र कारण दूजो डावडिया चीं सू ईसकी बी बरती घर बी री गरज बी रावती ।

भाज र महाराणी र बरताव सू बी न झचूमव साग ई घणी दुख धिह्यो । पण वा भावरी मोड री रीवणी की र बने जाय रोव ? बी री बात सुणण वाळो ई जद भाज बी न चोट पोंवाई है तो बी री दुखी व्हेणी सुमाविक हो । हमे भीता र इलावा बी री रोज सुणण वाली कीई नी हो । वा किणी नै सुणावणी बी नी चावती । महाराणी र मोठ बरताव री भाण " बी वा इज उठावो । तो हब लारा बी बी न इज लावणा ह ।

वा सीवणी छोड र खु न भावी र हाथ मे छोडदी । वा खु न सम्भाळ'र ठीक करी । बी न याद भावो क बी न राव री समचार देवणा है । वा फुरती सू सिनान कर सव्यार व्हेी घर राव र भल बानी व्हीर व्हेयो । राव री बिगतवार समचार देव, वा खु री कोन्डी मे क-हेयो । नीट पोर किस्तूरी भाय कुणी खडखडावो । पूनम र सुपनां मे लळभियोडी गुनाब, छिन भर साह सुव र तमनर मे छोळा लावती हो । कुण्ड री खडखडाट सू वा पचारय री धरती माथे छिटक पडो ।

मोल र दरवाजे माथ ऊभी महाराणी, गुलाब री बाट जोवती हो । गुलाब न नामी भावती देख, महाराणी किवाड री मोली लेव छिपगी । जू ई गुलाब, मोल र माथ पग धर्यो, महाराणी पूठ सू भाय बी री भांखिया मीच हो । गुलाब छोडी बी बिचळिया बिना उठ ई ठरगी । महाराणी गुलाब री भांखिया सू हथ भलगा लेव बी री बाया मे भरली । गुलाब ठण्डी रयी । हार नै महाराणी बीं न छोड बीं र सामी भायगी । महाराणी र इसार ऊपर दूभी डावडिया मोल सू बार फिळगी । महाराणी गुलाब री हाथ पकड र भाग खाव साई घर हलकी सीक धक्की देव बी री पिलग माथ गुडायदी । गुलाब पिलग सू ऊठ र ऊभी-हेगी । हम महाराणी पिलग माथ बठगी । गुलाब री हाथ पकड र वा खु री डी लावण लागी पण गुलाब करडी पडगी ।

रुपगी ?

‘अन्नदाता सू रुसर केत जावू ।

जन् करडाण के री मोई

‘कीडी री दोखण लाग ‘जदी

‘म्हे साचाणी त री चोट पोंवाई’

‘नो भग्नदाता । म्हे खुद ई घणो इनरगो ही’

“गुलाब । तन काई ठा कै त्यारळै वास्त भोग्रज काळज म की ओई ?”

“हुकम करो । दासी नै कयान याद करो ?”

“पला बता, तू म्यारळै सू नाराज तो नो ओई ?”

“घापर घासर ई ती जीवतो हू भग्नदाता ।’

“परसू रात राख अथ ई पोढया हा”

“अ ई मोल सोरम सू भरियो ओई’

“गुलाब ।”

“हुकम”

“तू धजू मन्नै लिमा नो करो ?’

“दाता । यू ई मरण नै त्यार ओई । हुकम द’र तो देगी”

“गुलाब । त्यारळो होठ कुण करै ? म्यारळ मन रो हरेक बात म्हे तन खुन’र क सजू’

भापरी किरपा ओई भग्नदाता”

“गुलाब । तू नी जाणु न तन भळगी करता थका म्यारळै काळज रा टुक्का टुक्का दे रयाई पण काई करू ?” जीवता रया तो केरू मिळाला नो तर पणी जूणा केरू जीवणी ओई । कठै ई ती मिळालाई’

गुलाब सू हम नी रईजियो वा महाराणी रा पग पकड र जमी माथे बैठगी । पया बिच मापी घात’र वा हुसका हुमक भरगी । महाराणी बी न उठाय काळज सू भीवली । महाराणी रै नैणा सू बी भासू ढळक्या । थोडी ताळ दोसू स की बिसराय ओक हूजी रो बाया में बन्धियोही रैगी । मंस रा किषाड चुन्ना । साकळ गुलाब राजकवार न लय बहीर धेगी । महाराणी की गमाय बी बी । निन घडीली हेगी । सूरज मा दो लागण लागी ।

## ( २१ )

“सत्तू काका ।”

“कुण लावण धोंई ?”

“हा काका”

“काई समचार धोंई र नुवा ?”

“हमार तो अेक ई बात री बतळ धोंई काका, साक री”

“हा, भाई साकी तो रजपूत रो घरम धोंई”

“या फिर मत करो काका, राव न हरावण वाली ई ससार म जलमियो ई कोनी ।”

जीवती र । ल तमाकू तो पीवती जा ।’ तछोट री पुराणी भोमियो सत्तू काका, दो मोठी लडाइया म भावरी बादरी री छाव छोड चुकी है । या लडाइया म ई सत्तू काका री अेक टाग घर अेक हाथ बट चुकी है । मूण्ड ऊपर तलवार र घावा रा सतरा सनाए है । कमर म भांले री मार सू फमळिया टूटगी घर लवण पडगी । निन भर भाय गय मिनख न सत्तू काका प्रेम मू बतळाव तमाकू घर पाणी री मनवार करै घर नुवा समचारा री जाणकारी लेवै । दूजा लोगा ज्यू सत्तू काका मे, खुदरी बादरी री डीगा हाकण री भागत कोनी । पण वान लारली लडाइया री पूरी बिगत मूण्ड याद है । सत्तू काका जद किणी री सोम करण लाग तो कडुसी कोनी बरत । वारी सबसू मोटी खासियत मा बी है क वे सुणण वालै री बी तारीफ बराबर करता रैव । बाता रा लच्छा सू सामळी सोरे सात ऊव कानी । कोई कोई वात छड बी क वे कीं खुद री तारीफ बी कर पण सत्तू काका अडी बिळिया हसर वात टाळ, घर ऊलटी बात करण वाल री तारीफा रा पुळ बाध दें । भा ई बात है क वा र घर र साम सू बवती कोई बी मिनख वा न नुवा समचार देवण सू बूक कोनी । ‘काका म्हे सुणी धोंई क मजनी रो सुलतान बीन मोटी लस्कर ले र भावो बोलण वाली धोंई ।

सो तो धोंई पण साच पूछ तो ह्मक ज्वकर बरोवगे री धोंई’

“हा काका । भापणो बी तय्यारी मे कोई कमर नो धोंई घर लोगा र मन मे बी पूरी भरोसो धोंई”

‘जद ई तो मर बाजिया र उपरांत बी धणकरा लोग सनो न खासो नी करियो’

'खाली करने जावे वो कत ? काका !' तमाकू री सुट्ट लगावता बका लावण बोल्थो ।'

'जावण न तो यू भीई काला, के लुगाई टाबरा भर बूढा ठाडा न जुद् रै म न यू अछगो ई राक्खो जोइज ।'

'सत्तू काका ! ओक बात बतावो'

पूछ'

'या बयू नी गिया तछोट छोड र ?'

'है केत जाबू काला ?'

'बयू काका ? चारो गाव तो बणी सानरी भीई भर बणी आगी भीई । घोष सुखान री मार कोनी पड । भर चारो नानाखो तो मारवाड म भीई घोष बी जा सरी । अरु कठ ई नी जाणी जावो तो तीरथ जातरा रै मिस ती कठ ई डा सरी ।'

'जावणी तो म्हे जमलोक बाबू बीरा पण चाया सू ती कीडी बी धूड मे बाधियोडो नी लाद । ठण्डी सास छोडता बका सत्तू काका बाल्या ।

तो म्हे बालू काका, थोडा गड म कण्डा पीचावणा भीई'

'हां जा बीरा'

थोडी ताळ रुकर सत्तू काका लाखण न पाछी हेली रियो ।

'मरे ताखण ।'

काइ काका ?' लाखण थोडी आग निकळ चुकी हो, उन सू ई बोल्थो ।

'थोडी मजीक आ'

लाखण थोडी अणमण भाव सू पाछी बलिथी । सत्तू काका ल टळ मांय सू भर कोपली निकाल र बी री मूण्डी खालिथी भर पेमली बीर री गुठनी जितरी प्रमम री अक टळो लाखण र हाथ म मेलता बका बोल्था' देख इके प्रसल जहो माथो मगायो भीई' ।

जीम सू बाखर लाखण हुकारे म माथो हिसायो भर आलिया चटकाई । 'मरे हा म्हे यू केतो क वो जेतसी भरजुण बाळा माटी सिरदाग री दोळो अरु म ई कोनी ?'

"हां सत्तू काका बारा समचार देणा तो म्हे भूनाथी । आज ई हरकारी घोष सू पाछो भायो भीई । जेतसी मान तो उमडगयो भर रैवासिया री बावड बनी । सुणा भीई क मुखतान री फौजा, मांय न टाळर निकळी भीई । पागी री बरो भीई क जेतसी रा सेग वासो घोटारू कानी गया'

'जेतसी वाला म्हे तो लूठा घाडेन, जाण हमके बयान मोडो करया । भर हा, जेतसी री डीकरी ? वो की नाव भीई वीं री "

‘पूनम’ लागण सपकी तोडयी ’

‘हा वो तो मारये री बांकी बातर निकळियो ’

“हव, काका । वो तो म्हाऊ करतो वो मळेंछ री गाटकी बाडनी ई निबर भायो

‘तू हतो घोष ?’

‘हवै काका, हूँ हतो । मीघजा ती पय घुञ्जण लाग्यो काका । भरी समा में घू बघ करणो कोई असखेल कोनी, घर वो मळेंछ री सोप न कयूतर हाई लुत्ती दल म्हेने तो ऊबकी भावण लाग्यो ।’

“पण इ नै जा विद्या पढा न घेय मिन्दर में मळेंछ मोई ?”

‘काका वो मुलतान सू धाडो पाड’र पाछी घावतो । धोरा मे लत्कर न देखियो । वो धोर री मोली लेव छिप्यो । रात मोष सू दस बीस ऊँटा नै हया भावता देख, वो मार सार दुरग्यो’

“पण बी न झेकल नै पोछी नी करणो हतो ।”

‘पण काका वो तो भाषार मल सारु ई वा र सार दुरियो ।

‘हव । म्हे तो घू ई कँवू भीरा, दुसमण री काई पतियारो ?’

‘नै काका । वो तो वा सू बलीपो कर लियो घर बारी खानी बाता री भेद ले लियो

‘पछै काई दिह्यो ? सत्तू काका माक मे झेक बिपटी चढावता पका बोहया ।

‘वो पूनम ई तो मान मिन्दर ल्यायो हतो ।’

‘घू वळ ?’

‘हवै । जदी तो वो वार नडो बठो हतो घर वार चासता ई सपाटै सू कर दी हो किलाण झेक री तो ।’

“पण झेक भेदू तो भाग निकळियो ?”

हव काका पण इव तो पूनम नै राख खुद दुसमण री भेद लेवण सारु भेजियो मोई ।

सत्तू काका बोसण सारु जबान खोलो घर वा री बाकी पाटोडो ई रयग्यो, साम सू ठाकर जेतसी घर वार पूठ दी सो मोट्यार तलवारा लियोडा भा रया हा ।

ज तनो माताजी री, सतसिगजी ।”

‘जै तनो माताजी री, ठाकर जेसिगजी ।”

ठाकर झेक छिन रुक’र पुछ्यो— ‘सरीर तो सोरी मोई सतसिगजी ?’

‘हव, ठाकरा आपरो पूरी किरपा भोंई’

प्रमल री पोटलो सू श्रेक डळी हवाळी भाथे घर सत्तमिगजी, ठाकर जेतसी रें  
जवर वियो घर बड उमाव सू वोल्या—‘ठाकरा, आपरे डीकर पूनम री घणो  
राचा सुणा, म्हान बी दरसण ती करावी कवरसा रा’

ठाकर जेतसी री सीनी अक र ती गरब सू फुलव्यी पण वा रें नैणा में गुस्ती  
रली। बीज ई पल बार चर सू मीळाई भळकण लागी हमार नी राव सू  
आवाहा कर हाक देदा पछ फुनरत सू मिळाला। आ के’र ठाकर जेतसी भाग  
व्या। वा लार पूरी काफली घाम बघव्यी।

ठाकरा न सामी आता देखेर पूनम घर पूनमी श्रेक सून डेरे मे लुक्क्या।  
पूनमी बोली—

‘कदा लग लुक्किया रैता ? कोई उपाव करी’

‘काई उपाव करा’

‘मन पाछो वळण द्यो’

‘कत जासी तू ?’

‘जासू काळी मूण्ही करण’

‘बो तो भेत ई क्यू नी करल ?’

‘भेत तो पछै भळी घारी बी म्हैला’

‘हेण ॥ इब तो साग ई मरणी भोंई’

‘म्है मरण न त्यार कीनी’

‘मरणी तो भोंई। सुनतान री फौजा मारणा बवई पयो। तू बच र  
कत जानो ?’

‘घर प्रेय मन ठाकर सा जीवण कोनी दयला। आछी धाडेतो रें पल पडी’

‘तू घ्याणू री तय्यारी कर, म्है नगर मे घूम ॥ की समचारा री  
बागवारी ले र आवू’

‘म्है प्रेय भेकली बयान ?’

‘क्यू लावई कोई त ?’

‘भो सा ?’

‘म्है वीं १ वाच न ला आसू’

‘पाछा १वा ई भगवजी’

‘है’

‘पूनम बार निसरव्यो।

## ( २२ )

पूनम जन्म मोला वानो पूनी तो ज्योती मे ई किस्तूरी ऊनी ही । वा पीरायत न सानो की । पूनम वेधजन मोला मे घुमरयो । वो किस्तूरी र पायें खालती गयी । दा चार नाळा जद र वो अक माट मोल म पूनी । धौ वो ई मोल ही जेन वो री पलपोन राव सू मिळणो दिग्यो । राव री मिघासण खाली पळ्यो ही । किस्तूरी, पूनम न अक दूज आसण मार्च वमाय भोय सू तिमरयो ।

घोडी हाळ मे महागणी अकानी सू आवती दीनी । पूनम ऊनी व्हेनी । महागणी मुळकी । महागणी साग वा री डावडी वेमर ही । वा भोय ई हवणी । महागणी भाग भाव भावर मिघासण ऊपर विराजणे घर पूनम न वठण री सानी करो । पूनम सकती सकती वठो ।

'ही तो पूनमनिगजी पयारया भाव ?

'हुकम, अन्नदाता'

'बाप सू छाने ?'

'हुकम, कोई अडी ई बात हती

'ठारकी ने तो मरोमी धौई क भाप राव र खास बाम ऊरां नवान ही । वे भावन सोधण सारु अय भाया बी हा । जर या बतावी क फोडा तो ना पडिया मारण म ?

'तो अन्नदाता, भावरी पूरण किरवा हती अर भावरी डावडी गुलाब री भाव व्हेण सू घणी सुमीनी रयी ।'

महाराणी शेक छिन सारु मूण्डी फोर लियो ।

बौत बोली छारी धौई अन्नदाता व्हे बी न भागूच हीर करधी ही, पूनी

क ना ?

अना, पर कोनी

'तो पू पूनम री मूण्डी उतरयो ।

अपू म्भारली खास डावडी

ने, न मित्राय नांछी

अ पोडी अचम्बो

त वा न धीन दुख लिया ?

हाँ, भद्रदाता

'त वा सू रिसाणी कियो ?'

'हजूर कसूर हेणो

'म्हें बी बी न रिसाणी करदी बी न काढदी मेघ सू ।'

'काढदी ? बयू हजूर ?'

ग्यारळी डावडो हर आपन फोडा दिया

'नी हजूर, वा की फोडा नी घालिया । म्हें खुद ई बी न

'सर जावण द्यो । हव बी रो बात छो डी'

मन पिमा करदी भद्रदाता

लिमा ती गुलाब बरोस जद हासी पूनममिगजी

'महर हजूर मन बी सू मिलबा द्यो नी ती मीमजी भातमा घली कळपेली'

मानमा ती मीमजी बी कळपे, पण हव बी न कत सू त्याबू ?

'बयू ? ती काई ?'

पूनम घर महाराणी दो-यू रा नीण अक पल सारू गळगळा हेगा ।

म्हें बी न देस निवाळी

दस निवाळी ?'

हाँ, वा ई ती ग्यारळी सबसू भरोस री

ग्यारल मन म गुलाब सारू

'की व्हे । मन ई सू की लेणी वणी मोनी

इत में ई राव पधारया । राव र घाता ई महाराणी घर पूनम आप आपर घातण सू लड या हेगा । पूनम मुक'र राव न दो-यू हाथ जोड या । मुळकता पका राव पूनम न बठण री इसारी कियो ।

'पू ती गुलाब सारी बिगत मुलाय दी, पण केरु कोई मतब री मान व्हे ती म्हें प्रधार पूछीस'

हुकम भद्रदाता ।' पूनम केरु ठठ'र हाथ जोड या घर मुकियो ।

'यठ । हा जेवणघन । आप हर्म पधारो । म्हें पूनम सू

'दामी गमभ ई । भद्रदाता र पधारण तक रो लुम्मी हो मोपजी धा बय र महाराणी घोष सू लिखकयी । राव, पूनम नै सारें भावण री इसारी कर दूज गल सू मेक नाळ उतरिया । पूनम वां सार मूवी गयो । घली ई बघर लपावतो नीच ऊपर बदता रोवट राव मेक घोट मोल में लेयया जेत नाव सुनियाट ही । इ मे मान मान री दाट घर केई भजूबी घर बीमती थीजां पदी ही । होरा, पन्ना, मानो इत्याद भग्यारें में बसवसाट करता ।



पूनम नै बठण री इसारी कर, राव दाह री ओह कूरी लाया घर घर  
प्याली म ठा'र पूनम र सामी करी, भव प्याला खुद र हाथ मे ली ।

‘जै मा तन्नो री’

‘भद्रदाता म्है ’

‘माँ री परसादी भौई । इत्ते में नसी नी चढ । ल, त ।’

‘ज तन्नो माता री’

पूनम प्याली खाची करदी । राव बो प्याली खासी कर सिपासण माप  
बठा ।

‘ही तो पूनम । इव तू या बया क बी सेनापति सू काई ॥ कः प्रायीई ?’

‘भद्रदाता । गुलाब भापन सारी बात नी बताई ?’

‘वा तो रौर सग बतादी, पण तू काई कवै ?’

‘भद्रदाता । भोगजी मित्र राय तो भौई क सुसतान सू राजीवी कर लियो  
जावै ।’

‘काई कव तू ? तू चेत मे तो भौई ?’

‘भद्रदाता । म्हैन चेतो भौई । सुसतान र इत्त मोट सस्कर सू टक्कर लेवणी  
इत्तो सीरो नी भौई जित्तो माप

पूनम । तू तो सफा बासी निक्कलियो रे । जेतसी री डीकरी हेन मोळी  
बात करई ।’

‘भद्रदाता । माप म्यारळ सू जादा समझी घर सिमरथवाँन ही पण मन तो  
ई जुद में सिवाय वगबादी रे का निजर नी प्रावई ।’

‘तो मू कः, झूठी पैर नै यसाधरा री चेलो बणजा ।’

‘यसोधरा, गुण भद्रदाता ?’

‘यसोधरा बळ गुण ? वा देवदासी जकी जुद रै नांव सू भू भू रोवई’

भद्रदाता । म्है जुद सू भी तो डरु भो बबरावू । माप तो माइत धौं  
भापर साम हो कळ क म्है अखगिणत धाडा पाड या भौई घर अखगिणत मिनखा  
रा प्राण लीषा ।’

‘इ सू ई तो ओक मोटे घाईत री परख ले रेयो ई ।’

परख नी भद्रदाता । म्है बी री तागत पूरी तोली भौई घर प्रापां री  
सामरथ री लेखी बो लियो । म्है आ जाणू क इत्त मोट लस्कर सू तिरफ प्रापणी  
फोज र बळ सू ई नी लढथो जा सकै ।

‘लढणी तो मुसकल कोनी । तवान दुसमण नै पछाडण री भौई ।’

‘दुमराण नै पछाडण सारु तो अनदाता दळ, बळ कळे घर छळ च्याह जोडज।’

‘तो तू भवै म्हान बी उपदेस देवण लागी।’

नी अप्रदाता ! आ निसरमाई भीमज मन म नी ओई । म्है तो खुद सोचू क वधान दुसमण पाछी जाव अर आपा री कम सू कम हाण भै ।’

इ सारु काई सोच्यो तू ?

ई सारु म्है अक बात सोचो ओई अनदाता !

बोल’

‘म्है, सुलतान सू मिळ’र बी न ई बात सारु राजी करु क बी अप सू राजीवी कर राजी खुसी पाछी बळ जावै ।

इ पण अक बात ओई

दुख म नदाता !

पैला जोर अजमा’र दखला । जे आपा नै आ ममभ म माइस क आपा बी न नी पछाड सका, तद हूजो उपाव सोचसा ।’

‘पण अनदाता ।’

‘पण काई नी । पला आपान आपण दळ अर बळ नै अजमावणी पडती । जद ई मू काम नी चालै तद आपा नै अटवळ सू काम सणी पडती । सो खारळी बात तो सीजोडी ओई । पण अक बात ओई की जे खारळी अटवळ सू का काम नी बण तो ?

तद अनदाता छळ री सा री लेखो ई बच ।’

अज ताई तो चाटी बदर् छळ मू काम नी नियो पण ई बार ज मां त नी री मा इ मसा रही तो खारळी बात बी मानणी पडती ।’

म्है तो अनदाता सगला री असाई सारु बात करु ई पयो ।’

बा तो म्है ममभा हा तदी तो खारळी बात सुण रया ओई नी तो की मू खरी बतल करी ?’

पणो खम्मा अनदाता ।’

त भी खारळी काम खीनाण ओई ई मू तू केत ई बिनी रोक टोक पा-जा गरना । पाव जितो विस तत म अनाण मू मिस जासी घर म्है केत ई दृढ मू खारळ मू मिळ सकैनी । खारळ मू तो छळ नी कर ?

अनदाता न अरातो नी म्है तो अबार ई खरन उतार सकई

तो अन्न अन्न प्याली फेरु 'हे जाव'

अन्नदाता री हुकम टाळण री भुतळव म्है जाणू'

राव घर पूनम अन्न अन्न प्याली फेरु पीवी ।

'आज थाळ मोघज साम ई जीमज

'अन्नदाता

सको क री भीई ? तन बिसरकी काम सू पणी भीई ।'

सको तो नी हजूर पण म्है अन्न बेतो न अन्न न छोड र भायी हा ।

उडीकती हेमी ।

'तो साम ले भाती'

अन्नदाता । इतो अरोली बी तो कपान करू ?'

क्यू ? परदेसी भीई काई ?'

'नी अन्नदाता । म्यागळ गांव री

'की कोनी । उडीकती रसी । तू आज मोघज साम ई जीमली ।'

'अन्नदाता री हुकम भासिया ऊपर'

'पूनम ।

'अन्नदाता ।

तामजी बिया हेमी कै कवारी ई हे ?

नी अन्नदाता ।

'दगी सुखी भीई

'क्यू अन्नदाता ?'

छोड, इ बात न । सुखी भीई तू दणी सुखी ।'

पूनम जद पाछी भायी । अन्न पीर रात टळगी ही । राव बी न दण मनब री

काम सू पिपी ।

# ( २३ )

राव विजयराज, नगर से पाच कोस भागै ई पच्छिम, उत्तर धर देखलें  
मिवा म फौजा रा मोरजा लगा दिया । पच्छिम मे ती चार पाच कोस मायै ई  
फौजा ग्रामो सामो निजर भावनी हो । हजार हजार सिपाइया री मोन दुः-  
दिया तोनू मिवा मे तैनात हो । सबसू भाग पल्ल सिपाई हा । या मे  
बनम बछी धर तलवार चारी हा । बा सार चौड मायै घसवार सिपाइया री  
होली हो, बा लारे ऊट धर सबसू लार हाथो हाथो यू ती गिणती रा ई  
हा पण राजा धर सेनापति सार हाथो ई काम म लिया गया । घुडसवारों  
धन तलवारा बछिया धर भाला हा । ऊट सवारा कनै खासकर तीर तरकत  
हा । या री काम हो खुद रे सिपाइया नै बचावणो धर दुसमण माथ बार  
काली । पारा चलायोडा बाण सात भाठ भौ हाथ री मार करता । अ ऊचा  
धेता इ घात नीच भायोडा खुद सिपाइया री दवाळा कही धर दुसमण  
माथ बार हेतो । अ भाग सू ई दुसमण न रोखण री खिमता राखता ।

ममूद गजनवी री फौजा रे पूगण र देला ई राव विजयराज पक्की धर  
री मोर्चा नी कर ली हो । तीन दिसावा मे मोर्चा लियोडा या तीन हजार  
सिपाइया लार तीन हजार सिपाइया री दल केरु तैनात हो । श्री लोग घोरा  
ो भाड म इ डग सू मोर्चा लियोडा हा क श्री तो ममूद री फौजा न देख सकै  
ए खुद निजर नी भावै ।

मुल्तान बी भावरी मोर्चा नी कर चुक्यो हो । बी कनै तकरीबन बीस  
हजार सिपाइया री फौज हो । मल्लेख सिपाई बीन ई डोगा माता धर डरावणा  
हा । धरम रे नाक माथ जुद करणी ई अ जीवण री पुन मानता । बा न मरण  
री डर कोरी हो । राव विजयराज दूज दिन खुद मुल्तान लू टक्कर लेवणी  
भावना । पनह दिन ती मे या री रण बिनिया देखणी चावता ।

स्वामी श्री रात री दो घोर झलिया पछ हमली बीलण री मूरत उत्तम  
बनायो । इ माथ राव विजयराज बीन ई धोमाम धर मिठाम लू धरज करी —

‘स्वामी श्री ! रात रा हमली करणी धर वो बा मूतोड दुसमण  
माथ । वो तो धरम जुद नी छोई ।’

ई पर स्वामी श्री, पड़ुत्तर दवता यहा बोया “राजन ! जुद मे नतिक  
धननिक की नी ब्रह्मा करे । जुद री घेव न्हिया करे बी न जीतणी । धरम री  
बान जुद र घामले मे सोभा ना देव । बस क धरम तो जट न रण जे ई

कोती देव । धरम किणी ओक घादमी जाति सम्प्रदाय क मुलक री सम्पत्त कोनी ।  
 पूरी मिनख जात मे ई री वासी है । धर मिनख जान री कल्याण जुद्द र जरिय नी  
 प्रेम भर प्रसिदा र जरिय ह सक । पण राजा भी धर्म ठे आपर प्रजा, स  
 सम्पत्ता भर देवा रै स्थाना री हस्ताळी करणी । जकी जीत बी री  
 साची है । राजन न देवी री वरदान है भर स्वामी थी री  
 जीत घारी ॐ । जकी पसा वार करे बी री जात री पासो पसा सू  
 "हे जामा कर "

स्वामी थी सू आसीरवाद लेय राव विजयराज ओक न म  
 खुद नै जितण-मरण मे सलभावण सारु मि दर र डागळ

( २४ )

देवी री मि'दर लवामवध भर्योडो हो । सकडू दिया  
 हो । देवदासिया री मुण्ड विजय निरत सारु त्यारी म ल  
 वासी विजयवत सारु ॥ १ ॥ आभूषण  
 राव विजयराज ॥  
 पूरी मोळावण भर  
 मार-मरण री कूस दस्त  
 वारी जीत पक्की है ।

च दरमा ठीक ऊपर सू  
 भर मनभावणी घादणी मदगवाई  
 मे भाव ही । घादणी री सोतळता  
 रा कान हुकम सुणण सारु ७०  
 गूज हा । स्तुतिपाठ सू भाभी  
 तक नी ही टावर टीगर बी जुह  
 नकल करण सारु जिद पकडियोडा  
 दूध भाज परलीजण वाली ही । बूटा  
 लागोडी ही । वे लोग आपरी जवानी री  
 जोस दूणी कर हा ।

—पाणुचक सकड नयादा अक साग  
 मुर भाभ न चारता भर द्विपो लजब  
 मसाला परकोटा र बार भाकर जुह

सकृप की अग्निदाह छोड़िया गया। अग्निबाण दुसमण री दिमा म यू मपविद्या  
जाण सिकारी कुत्तो सिकार नै देखता ई सोघो बी माथ दूट पड। अँडो लागतो  
जाण भाभ सू अग्नि रा मोळा वरस रया क भाभ सू तारा खिगिया। राव  
कुळदेवी तमाटाय रा दरमण कर स्वाभी श्री सू आसीरवाद लियो घर हाथ मे  
नागी तलवार लियो मिन्दर सू बारै निकलिया। हजार नर नागे तजोराय रोज,  
राव विजयराज रोज, स्वाभी श्री रोज सू भाभ न यू त्रा दिवो

नो द मे सूतीडा टावर टोंगर इत्याद चमकर नी द सू जाग पडया।  
सज्ज सो हाकी मचग्यो। अक बीज री बात सुखणी मुसकल रहेगी। कैया बी  
कर क नगाडा मे तूतो री उवज कुण सुणे?

सुलतान भैरू गंगवी अचाणचक हुये ई हमल सू अकरीजग्यो वो  
दुसमण री इत्तो सावचेत नी जाणतो बी री फौज मे खळबळी मचगी। हजार  
मसाला लाय र लपकाई दाई वा कानी लपकती निजर आवण लागी।  
तोफाण री गत सू भागी बघती मसाला घर जयदेवी तप्री री धुनिया सू हवबडीज'र  
भैरू रा सिपाई जकी बी सत्तर हाथी भायो उठा'र सडण सारू तयार रहेया।  
कई लोग रुघा भागण लाग। की तम्बूवा म छिपग्या पण तद तब भाटी  
मिन्दार लासा ठेडा पूग चुका हा। ई बिळिया सुलतान भैरूद भर प्रधान  
सेनापति सला करता हा। वा र भेजियोडा भेदू अलू लण पाछा कोनी भाया हा।  
सुलतान री डरी पच्छिम दिस म ही उत्तर ओर दक्खण कानी री टुकडिया  
रि मझू कोई हुकम नी सुगाइजो भवै वा की दूत भेजणी बी मुसकल च्छगी  
ही। बाराह भर सगरी बी बावड नी ही। वा र पूगण नी पूगण इत्या'र  
कोई खबर मझू सुलतान कन कोनी पूगी ही। यू वा रा भेजियोडा की गिएती  
रा सिपाई पूग चुका हा। पण वा न बी ई बात री बेगे कोनी हो क बारी  
राजा किती फौज कट तक भेज देतो।

पल ई धावै मे विजयराज रा थीर सिपाई सुलतान रें अणगणत फौजिया  
गे सफायी कर लियो। राजपूता री तलवारा यू चालनी जाण वाढनी गाजर  
पूटयो न काट रया व्हे। देखता ई देखता लोई री तूतारिया जगा जागा सू छूटण  
लागी। लागी री तिरसा घरती माथ लोई री नाळिया ववली सरू रहेगी। अणगण  
मोटा जमी माथ घटाघट बिछगी। इन यवन की सम्मल चुका हा पण बार सम्मळता  
सम्मळता तकी वारा पदल सिपाइया री टुकडिया री पूगे सफायी हे चुकी हो। सूरज  
काण म मझू घणी दर हो। त' तक सुलतान रा अक हजार सू बी जादा फौजी या  
तो भाग्य भया

राव मिटर सू निक्कलेर नागो तलवार हाथ म लियो नामो घोड भमरावत माथ सवार हु गढ सू बार निक्कल भाया । भमरावत भेडी लगवना पवन र वग सू विजयराज न ल उढयो । पलक भय बी पला नी घाडो वान जुह र मदान म पोवा दिया । राव न लख भाटी सिपाइया री जोस बधग्यो । वे चौगण जोस सू दुममण माथ भूय सर दाई दूट पढया । राव री सीनी वारी बादुरी र गरम सू फूलग्यो । यवना री लाम्बी लाम्बी दाटिया वालो धड सू कटियोडो भू डरिया भडो लागतो जाण सकड नारळ भठो उठा बिखरियोडा पढया है । या भू ड किया री ठाररा म पणो दुरगत ही । सीन सौ र भ दाशन भाटी सिपाई घायल हिया । या मे सू दा सी तो थोडी ताळ सू ई मात्रभूमि री रक्सा सारू प्राण त्याग दिया । प्राण त्यागता थका वा र चर भर आलिया म उजब चमक भर सतोल ही । भाटिया री भक सिरमौड सिरदार नरसिग बेजा घायल हियो । वो प्राण त्यागण सारू घडिया गिलतो ही । यवना रा दस मोटा भफमरा मे सू चार रणखत रया भर बाकी रा छ बुरी तरिया सू घायल बिघोडा मिरतू री मागत चुकावण मे तडफडावता हा । वा री सुध लेवण वालो उठ नी तो कोई ही नी किली न फुरसत ही । रण रा धूसी बाज्या । गढ मे लुगाया मगळगीत रा भमा-कडा भाड दिया । मगळगीता र समच पूरब दिस री कूख फाटो भर सूरज री देव रूप, धरती माथ उजास करण सारू प्रगटियो ।

भाज ऊमा आपरी चूदडो सायन यवना र लोई सू रगली ही । फ पछ बीरी शनड लाई री रातड सू होड लवती ही । परभाव री बिळिया कागला री काव काव सर हेगो । वारी काव काव भाज नित आदा ही । जाण वा री पूरी यात भाज भठ ई जीमण सारू यूनीत्रियोडी ही । गिह बी सी सी कोसा सू भठ पूतगया । जा धरती माथ चिटो री पुतर बी निबर नी भावतो उठ भाज पात्रिया री इत्ती भीड देल भचम्भी हेतो । जमी माथ पडी लोया न भ पाखी बीद बीद खावण लागो । ग्रेक ग्रेक सोय माथे दस लस, बीस बीस कागला, गिह इत्याद हुकयोडा हा । लोया री आ दुरगत देव्या रोवणो भावनी धिन्न भावतो । लुगाया दगल तो ऊबका खाय मर ।

जुहू री मदान छिन्न छिन्न रग बदलतो रतो । सजीव देहो ग्रेक छिन म भाटी री दिगली हे जातो । प्राणा रा पाखी हमार भठे हा भर पलक फुरकता ई भदोठगया । नेही र पीजरै सू प्राणा री पाखी जाण क उड जाव ई री वेगो किली न कोनी । मावी प्रबल है भर आदमी भठ भावतो ई थोक । बीर वसत मनावण मे मस्त हा । रण रा धूसा भर धमाल र समच प्राणा री बली देवण वाला कोई सहीद, जूमार, परमवीर इत्याद हा तो कोई दुष्ट भर मिनस जात

रा त्रिशरा । जाण या सार कोई रोवणियां बी है कै नो । जाण किरारी राण्ड  
जोवण भर स्यापी घालिगोडी करमा न कोमनी रवेलो । जाण कुणसा भर  
कितरा टावर बाप बवण मारु जोवण भर तरमता ई रमी । जाण कितरी बना  
भापर बीरां र वा हाथा नै तरसनी रवेली जका क भायें वरस भाईदूज न टोकी  
क्यावण सारु तरमता रता । जुद् री मद जाण किरा न चढ पण बी रा फोडा  
पीडी दर पीनी वे लोग भुगत जका पेट री लाय मुक्कावण सारु भापर जोवण न  
महा दुष्टा रै हाथा मू प द । भा भेक भडो लाय है जनी भेक घर म लग पण पाम  
पहोम रा मणगिरिया घरा न बाळ'र लाक कर द ।

जोधा भापस मे जूमता हा । तलवाग री कट कट मू सागती जाण सिव र  
ताण्ड निरस मे ताळ लगा रयी है । उल्लन लोई री गरमी मू मूज री किरां  
गरमीजगी । सूरज र रथ रा घोडा खुमरिया लाय सज मन म दीडण री हुडा  
करता पण सूरज सागडी वारी रासा काठी साभ राकी हो । जुद् मे गरमी लावण  
सारु वो सीधी असमान र बीबीबीच भाय नै जाण चमयो । ज्यू ज्यू सूरज तपरी  
गयी वार प्रतिकार, भाबी, बचाप, मार काट इत्याद म गरमी बापरगी । भाला,  
बडिया, तीर, छाण्डा सग गुल्ममगुल्म र हुयोडा जाण बाधिया भा रया है । सूरज री  
गरमी मू तपियोडी धोरा घगती रा रागड धोरा जुद् दखण री चावना मू बतूळिया  
वण रणखन रै क्यारु मेर बिच्च भागै लारै धूमर घालण लागी । पण लोई री  
गरमी र सार्म सी सूरज री गरमी वो निबळी ई लाग । तिरमी भर बळबळनो रेत  
री तिरस बुकावण सारु, लोई री जाण कितरी पलाला धरती माथ छडकाव कर  
घुकी हो । पण जुगा मू निरसी रत री तिरस, लोई मू नद बुभण वाळी हो ।  
रणभोम री विकट भरबी सपालप लोई रा खप्पर भर भर न डगळ डगळ पीवण  
लागी । फोजिया मू ती जादा गिरती म कागला, गिद् इत्याद भेळा व्हगा । कई  
तीरा तलवाग री पेट म भाय नै लोयी बीव मू हाथ धोया । लोई ती जमी चूस  
जाती भर मांस नै चूट चूट खाता भै पखरु । कुत्ता रा भाज भाग जाण । हाडका  
न गता म भाय वे निसग भेकाने जाय बठता भर कुटर कुटर कर न बिसन पोखता ।  
धरती माथ भठी उठी बिसरघोडा मांस रा लोचडा केई ती काळा पडग्या भर केई  
काव है ज्यू चमकता । बीर राजतुत भापर बळ भर धीज री करतव दिवावण मे  
स बी बिसराय, उल्लयोडा हा । वा न बेरी ई कोनी हो क वा र सरीर माथे कित्ता  
माथ हंग है । जाण पूठ मे कित्ता तीर घुम्योडा सरीर न चाळणी कर नाख्यो है ?  
भक कान कठई खिरग्यो है भेक टाग लटकगी है क भक भाख मू लोई री तूतारा  
चूट रयी है । वा ऊपर ती भेक ई भूत सवार हो क मुलतान र सिपाइया र  
रगदाळणा ।

सूरज कितरी देर मूण्डो डेर ऊमो रती । वो बी प्रकती र नियमा मू  
चिपयोडी हो । दिन रा हाडका दूखण लागी । चाको भादी दिन गुपचुप करती चार



व्हे ज्यू विसकण लागी । घडी सिझ्या री जीवन फूटण लागी । आधूण दिस मे मदी राची । धममानी सुख री मूण्डो पीळो पडण लागी । वी री प्रकास भर तेज फाकी पडग्यो । वी री मग बरमाम निठग्यो । उबास्या खावतो खावतो वो मदीठग्यो भर उबास्या रें समच छोडियोनी वो री निसासा सू होबाढ प्रगटी ।

सूरज री साक्ष म सुलतान री दक्खण दिस री दा हजार सिपाइयां री टुकडी री सफायो व्हे चुकी हो । उत्तर दिस मे घोरा घणा हा भर सुलतान री फौज ऊपर बढाई माथ आयोडा ही जन्म क भाटी सिपाई नीच ठाल म हा । ई वास्त भट सुलतान री फौज नच म रयी । भाटी राजपूता रा अक सो घोडा, चाळीस जेंट भर पाच ती सिपाई आपरा मू गा प्राण गमाय दुममण न अक आगळ बी आग नी बधण ग्यो । इण मोरच माथ वीर बीसल जुमार व्हेगी । वी री माथी, धड मू कटन घाड र मूण मामी जा पडियो । वी माथ मार सू कोई वार कियो हो । पण ऊपरस्या फोरणा जात री वी री घोडी वी माथ न बीसल र हाथ म भला दियो । बिना माथ रें ई बीसल री घड, बरोबर तलवार चलाती रयी भर कम सू कम बीस मळेछा रा माथा काट दिया । आ देल मळेछ सिपाइया रा होस उठग्या । अँड बीग सू वां री कदई पाली नी पडियो । पण घड री गरमास खतम व्हता ई घड जमीं माथ पडगी । इ र साग ई जुमार बीसल वीरगत पाई । वी री घोडी बी उठ ई आपरा प्राण त्याग दिया । वी री सरीर बी सैकडू घावा सू छुनग्यो हो ।

अो सारी जुद्ध गड सू चार पाथ कोस माथे चालतो रयी, ई वास्त गड में घबू लाय कोनी पूगी पण, उठ रा हलवाळा तिणा में सू भाकर सारी जुद्ध देख्यो हो । वा री रगत उछाळा लवण लागी । वा रा भुज फुडकण लागी । रण मे जुमण सारू वा री मन घडी घडी उछळती, पण व बिना इग्या उठ सू नी हिलिया । थ आपर बेलिया री बादुरी र बलाण सू ई खुदरी जीव सोरो करण लागी । कोई गरब में माती हो ती कोई बिजोग मे फुरळावती ।

सूरज दळता ई अक वार जुद्ध ओर पकडियो । सेव दिन री कसर निकालण सारू दोयू कानी रा सिपाई उतावळा हा । पण भाटी ठेठ ताई सुलतान री फौज न दबायोडी राकी भर अ धारी हुना व्हता वी न अक डेढ कोस लार लिसका दी । अचाणचक भाटी सना री बू कियो बाज्यो । बिगल मुण सुलतान री फौज सस्तर नीचे नाख जमी माथ गोडा ऊभा मार आधूण कानी मुडगी भर काना मे आगळिया घाल या लिल लिल लाहो करण लागी । सुलतान री फौज बी बिगल बजाय लडाई रोकण री घोसणा करी । नगाव पढ'र सुलतान री फौज दा सो गज लार सिसकगी भर उठ ई पडाव कियो ।

भाटी नगाडा र समचे ओर जोर सू देवी तशी री असतुती करण लागा भर अ जकार सू आभ नें गुजायमान कर दियो ।

## ( २५ )

घघरि रो काली काम्यल भाड रातराणी धरती न निरासा सू टाप दी ।  
 थोड नुवी विधवा रे विजोण म कजळीजियोडी रात रो घ घारी सिसकारा भरती ।  
 घाजरी रात, जाण कित्ता निरदोस जीवा र हियां मे धुवो उठावण वाली ही ।  
 बाण कित्ता घूडा भाज हूटण वाली हा । जाण कित्ता टावरा रो निसकळ न  
 हसी न घाज कालरो नावण डसण वाली ही ? छुण जाण कुण सोच ।  
 थू सोच ?

दुख र दरियाव म झूबोड जीवण मे क कदास झूबी बातां माथे बी  
 हसी घा जाया करे पण घा हसी विजळी दाई अंक पळकी क पाछी धडीठ जाया  
 कर । घोर घघारी रात मे कळती मसाला रो चानणी मन र कालस म उजावण में  
 सिरमय कोनी ही । जुगनू रो चमक दाई मसाला रो चिलकी छिन भर री पुळक री  
 सनाण ही ।

जुद में घोरमत पायोडा रजपूता रो माया हाडका तोषी घर सैनाणियां  
 भलीकर वान अक साथ भेला किया अंक ई जागा था रो सास्तरा री विध घर राजसी  
 मान सू दाह सस्कार कियो गयो । राव पिजवराज खुद पग उबराणा चितावा तक  
 गया घर फूल माळावा चितावा ऊपर चढाई । वे भूत साधियोडा अंकान चुपचाप ऊभा  
 हा । था रो चरी बी बगत अक सत दाई गम्भीर ही । जाण व मन म था ई सोच  
 रया हा क जीवण निस्सार है । मैला मे उजब गैराई अर पीड री बासी ही ।

पवना र डेर मे सुनियाड ही । मोठ र पला री सुनियाड उठे छायोडी ही ।  
 स्वात हार रो भातम मनावण रो ओ ई दस्तूर ही । पण सुनियाड री घोना दवता  
 प्रापसरी मे लडता भगडता हियाळ था । हवा र तज भोला सू ममासा बुझ जावती ।  
 केरु बाळीजती केरु बुझती । पौरायत खकारा कर करन खुद री सावचेन व्हेण रो  
 प्रमाण नेवता । स्वात सुनियाड म खुदरो भी भावण सारू ओ ई उपाव रयो ।

भटी गड मे विजयवाणी अर वीरतावा रा माया गीत उगेरता मडद लुगाया  
 रा सुर, बायरिप र भोल सार्न हिवकोला छावता । तारा अचम्भ सू प्राणिया फाड  
 फाड सूरज र कयोडी कांशी री साच री परक्ष करण दूबग्या । पायल सिपाइया री  
 उपचार सरू हेगी । सिपाइया न सागडो दारू अर सषाद भरिया पक्वान पुरसिया ।  
 नि भर रा थाका सूका सिपाई नौद री सरण म वेमा ई पूगा । पण नौद मे बी  
 कदया रा हाथ भर पग चालता हा । जाण वे सुपना में बी तलवारा चला रया है ।  
 बोई बोई ती नौद म सूती बडबडावती बी ही । दो चार सिपाई ती नौद मे ई बिछा  
 कणा सू ऊठर घोडा साथे सवार हेगा । जतन सू या लोगा न पाछा लाय  
 पोड़ाया ।

रात चलाई कर चुकी ही घर सारी बस्ती न नीं म समावण गारु अप्पार रो जाळ फलावती गई । रा रा रो दूजो पोर हो । पोरायन नीं मू मोरचो ल रया हा । हवा सू रणधेत ॥ बिम्बगोडो सोपडियां मू सीटियां बाजण सांगती । पोरायतो रा रु गटा सडा थै जाता । पण मी भगावण सारु व जोर मू धाकल दना सकांग करता घर पण पटकता । डगता डरता बी व फरण निभावण सांठ पठी ठठी दोठ दोडावता । पण चितावा री बचियोडा चिणगा था मळू बी हवा रो फू कणी मू चना हे जातो । गड रो पौळ यन् हणी हो ।

राव विजयराम स्वामी श्री मू मिळ'र बा र नडा ई सुयग्या पण वा न नीं कया भावतो ? रणगेन वा र भाग्या सामी पाचतो । जाण वा रा कितरा ई बीर मिरदार काम था चुका हा । वां रा टावर घर सुगाया जीवण भर वा न तरतना रवला । वा न घन, माल सिरोपाव मान सग दिया जा सक, पण जकी जीव दुनिया मू जा चुकी है बी री कमी बुण पूर सक ? राव विचारा म झळूभग्या । पेट वा र काना मू पताडी रात बाळा सिमकिया टकरीजी । पण भाव वे विचळित नी थिया । सिमकिया बधती गई । वां र कानां म र र न उवाजा पडती रयी जुद् मे प्राप्न कियोडी जीत धिर कोनी । जुद् कोर्द समस्या रो निदान कोनी' पण राव, सा त भाव मू विचारा र मयण म लाग्योडा रया ।

मुलतान र डर मे सुनियाड जहर ही पण मळू मुलतान घर बी रा मोटा मोटा अप्सर, सनापति इत्याद जागता हा । स्थान वे नदरी हुकम रो उडीव म हा । मुलतान हरेक तळू सम्भाळण बाळी हो । सिपाई भाव री भूषी हार मू समिदा हा पण वा री आतमविश्वास हाल कोनी हारघो । वा न पूरी तसल्ली ही क जीत म ई पाछा जावा ।

मुलतान ममूद गजाबी सारु गाज बीत मोटी हार रो निन ही । इ डग मू बीं री फौजा फोडीजला इ री बी न कलपना बी नी हो । वो यम म हूयोनी घणी रात गया तक सोचनी रयी । पण भडी छोटी मोटी हार मू वो घबरावण बाळी बी नी हो । बी जाणतो क सी सोनार री थै तो भेक सोवार री बी िया कर, नित जीतण बाळी मुलतान कदर्ई हार बी सक, भी बी रै वास्त भक नुबो तुजबो हो । इ वास्त वो सारी रणनीति माथ नुव सिर मू विचार करण म झळूभग्यो । वो बीत ई सजोडो, हीमती, धीरजवान भर मुसकिला मू टक्कर लेवण बाळी हो । भी ई बी रो रात दिन रो काम हो । चोटां छावन बी जिंदादिली मू जीवतो रवण रो गुर बीं ने याद हो । धीरज रो बी कन मसूट खजानी हो । वो सगती रो सत्प घर गराई मे समदर समान हो । बीरता बी री सान हो । जुद् रो भदान ई बी रो घर हो ।

मुलतान र भावण री खबर सुणतो ई सग सिपाई भेक जाया भेळा व्हेया । वो मोटा मोटा अप्सरा मू सर छोटे मू छोट सिपाई रो तारीफ करो । जका जुद्

में मारचा गया वा न जन्नत बखसल सारू, यस्लानाना नै दुवायां वा । वो घोडे माथ बढो हो । पीजी लिबाम में वो बीन ई खुमार निजर घावनी । वो मग सिपाइया सू सलामी लो । अरियोड गळ घर खियोडो उवाज न वा बीणो सलू वियो ।

'गजनी रा बादुर मोटयारां । आज रै दुह म यारी बादुरी घर हीसना री पाया सुणैर मन बढो मोद घायो है । मन ई बात री घर है व था तोग हमेमा इस्लाम री माथो ऊचो राखियो है घर ताउमर ऊचो ई रागीना । था सग घर यारी मुनतान, इ वास्तै ई पदा ब्हिया हो व भापा मिळनै भापारी तागत सू इस्लाम न फलावा । दुनिया र हर मुलक म इस्लाम घर हजरत महमु स्लेसलाम री कुरान पाक री घर गजनी री नाम भापा न ऊचो करणी है, दुनिया म फलियोडो बुतपरस्ती न दफलावणी है । म्हे घर भाप सँग मिळ र मजहब री सबक सारी दुनिया न पढावा ।

फस्ला रा बान । धार खून मे वा सुगो है व दुनिया रा तमाम मुलक था सू पूज । पारै बाजूवा म वा तागत है क सर बी थासू खोफ साव । धार कमा री घाहट सू, घरता धूत्रै । यारी उवाज सू घसमान फट जाव । यारी गुप्त मरी निजरा सू घसमान रा बाण सितारा कांप । यारी बादुरी घर हीमन री म्हे दाद देवू । यारी इमदाद सू ई म्हे गजनी री सुलतान बण्यो है घर इस्लाम री दायरी फला सवियो है । भापा री मजहब भापा न भा ई सिलाव कै भापा जीवा तो इस्लाम सारू, मरा तो इस्लाम सारू । मन खुश री हुक्म ब्हियो है म्हे था लोग सू इमदाद सू घर दुनिया सू बुतपरस्ती री खातमी करू ।

इ सू भापा न मो फायदा थैला । भापा री इस्लाम फनला घर भापा न दीवत बी मिळला । भाप तो सुग राखी है कै भाटियानगर म वसुमा दीवत है । काफिर लाग इ दीवत न बुतपरस्ती घर भय्यासी म बरबाद कर रया है । भापा री श्री फरज है व भापा अटा काफिरा न सबक देवा घर सही मारग लावा । नाबीज भाटिया शरियत मानण सू मुकरग्या है । भापा री तागत मक वा सू जहाद इरादा येसक वा सू पाव है, भापा री ईमान घर मजहब शीगत, म वासू ऊचो है इ वास्त कामयाबी बी येसक भापा न ई मिलली ।

धव था साम दो ई रास्ता है, जि दमी या भीत । इण मजहब री लडाई म जना सहोद ह जावना वा न खुश जन्नत बखसैला । घर जका जीवता बचला वा न म्हे मामोमाल कर दूला । अठ छटियोडो दीवत म सू था नै इनाम दियो जावना जको यारी तनछा री आमदनी र इलावा थैला । जन्नत रा तमाम धर्मो इमरत घान अठ ई नबीब न्हे जासी । बेहतासा दीवत य खजाना अठ

काफिरा वन भरया पडया है। वा १ सूती मारी घर इस्लाम रो नाम ठाची उठावो ।

आज रो गत वाराह घर लगा बी घापा री इमदाद सारू फौजां घर रसा लेर अठ पोंचण वाळा ई है । आपा १ काफिरां १ सबक सिखावणो है । खुदा रा ब दा । म्हे या सू रससत हिया पैला शेक दफ फेर खुता रहोम, परवरदिगार सू मिन्नत करू क वो या सवा मे वो जोस भरै क इस्लाम घर गजनी रो आबरू सारू मर मिटो घर काफिरा १ १स्तोनामूद करण म कामयाबी हासल करो । काफिर बागिया थार अस रै वास्त हाजर है । वा रो सवाब लूटो घर जग सारू नुवी तागत हासल करो । खुदा हाफिज ।'

सुलतान री इ तकरीर सू यवन सिपाइया मे नुवी जोस पैना हेयौ । वे सुलतान री तारीफा करण लागे । घणकरा ती सुगाया सारू उतावळा हा । वे जोर जार सू हावा करण लागे—'हसीनावा १ बेपडदा करी । आज ती वार हावा सू ई जाम पावाला । अस ई दुनिया में जनत है । दोलत घर दोसीजा वस दो ई चीजा खुदाब द शेक सिपाई री किसमत म दी है । बाकी सब बकवास है मौत ती अक दिन आवला ई, बी रो कडो सोच ? या रब १ द शेक हूर पुरनूर, हा हा हा हा सुलतान सतामत ।

## ( २६ )

पावल सिपाइया सारू तवाइफा र नाच गाणें री प्रब व अक मोट पण्डाल में किमी गयो । मुलाम बछावोडो सुगाया घर मोठ्यार छोरिया री हाट लागोडो ही । सुलतान या रै सरीर सू बी दोलत कमावणो जाणतो । अम्सो छोरिया भाटी राज री सींव मे घुसिया पछ सुलतान र सिपाइया र जुलमी हावा में पडगो ।

पला, तवाइफा रा नाच गाणा सारू हिया । दारू र नक्ष में मस्त चिप्योडा ईरानी, हसी घर यवन सिपाई भूण्ड सू भूण्डो भूण्डो गालिया निकाळता हमी टट्टा करता । वे तवाइफा घर मुलाम छोरिया कानी सजब इसारा करता । नाच गाणा ब द हिया घर मुलाम छोरिया शेक रात सारू लीलामी माथ चढगो ।

'भा सोळा बरसा री हूर, दखण मे नूर भरिय सरीर री कुरान जडो पाक सिरफ पांच दिग्म । शेक रात रा सिरफ पांच दिग्म । बड सो पाव ।'

अक मोटो ताजो ईरानी सिपाई शेक छोरो न सामी खडो कर, बोली लगावण लागो । इ छोरी री घाघरी आवा जागा सू लीर नीर ब्हियोडो हो । ऊपरला अगा माथ शेक जोखो कपडो नाखियोडो । आ सरम र भार बाखिया नीची करली ही ।

‘सात दिरम’ श्रेक सात फुट साम्बो हम्मी सिपाई, मूछा रै बट दवता घना बोल्यो ।

घाठ निरम’ श्रेक बीजो इरानी सिपाई घण्टल मे मू बटवो निवाळना घना बोयो । छोरी मरम मू जमी म गडती जावती । बा दोयू हाथ छती रै भाठा कर दिया । धी र नैला मू टप टप भैमू टपकण लागी ।

दस निरम’ श्रेक जल्ता जेही मूरत री काळी भमी मिनल बोल्यो भर दस दिरम बी बोला लगावणिये रै सामा फर’र बी छोरी री हाथ पकड लियो । छोरी बली र बकरे दाई धम धम धूजण साथी । तम्बू म जोर री ठहाकी लागी । बी भसी बी छारी नै घीस’र तम्बू मू बार सेयथी भर थोड़ी थोली लेय र भूवे सेर दाई बी माथ लपकियो । छोरी री बचूमर निवळग्यो भर बा बँही वेहीम वही कै बी न पाछी होम ई नी आयो । यू कर श्रेक श्रेक छोरी री श्रेक रात री माल दस मू पन्ना निरम र बिच्च त ह्यो ।

‘हाँ, माई जान ! बा है सोळा बरसा री अनार । खुदा र हाथा घडियोडी, पूना री मैक मू जी री चामडी अगेजी है, जी री भन भन ल माद मू भरियोडी है । भागणिये न मुबी सवाव देव । दारू मू जादा नमो देव । हिरणी सी भाँट्या बाळी, बचनार री बली भरदानगी नै ललकारती हुस्न हूरा नै सरमावती रूप, भर

श्रेक सिपाई उतावळी म बोखो ‘पण दाम ती बीली’

‘दाम, श्रेक रात री सिरफ पन्ना दिरम । बडे सो पाव ।’

बीस दिरम’ होता न चाटती ह्यो श्रेक बूनी सी सिपाई बोखो ।

‘हाँ सवाव लीटावी, खान साब’ भीड म मू श्रेक मोट्यार मुळकती सी बोखो ।

बूनी मसलरी री उयेली देवती बकी बोख्यो पचीस निरम

श्रेक मोट्यार सीनी ठाक लडी दिखी ‘साठ दिरम खूब देव परपरदिगार

भा छारी श्रेक मार रम भर घोपत डील री ही । तरीर री बलघट दल भाछा भाछा री भन पिघळ जाव । इ र श्रेक फाटोडी लगी परण ॥ ही । ऊपली भग साव लघाडी । इ भग र लघाडी राखण साक बी र हाथ सारली कानी बाधि-योडा हा । भा काठ री पूतली दाई ऊमी ही । इ र घेर माथ किणी तर री रोस विसाद कै उमाव नी ही । निरपेख भाव मू भावी र हाथा बिक्ण साक त्यार ऊमी ही ।

भीड मे मू श्रेक सिपाई भाग आयो भर बोख्यो खान साब ! माल री पग्ग काने बोली लगावाला । हुक्म है सी हाथ लगाव दसलू कै भा जीवती जावती

तसवीर है क नाठ री पूतली ? क्यू क इ घरतो माय भड़ी रुपाळी मजू कोई निजर नी भाई ।

‘हो, पण हाथ लगावण री कीमत है पांच दिरम ।’

मजूर है’ भा कर वो सिपाई प्राग बघ्यो घर पांच दिरम बोनी नगावण बाळ रें हाथा म घमाय दी हा । वो घरर ती वों छोरी रें च्याङ मर पक्कर लगायो घर पछ बी र सानी प्राय ऊमो हंगी । दोयू हाथा न ऊचा उठाव, वो बी री छातिया माय घपसो भरियो । छोरी भेज सात री मारी घर वा जमीं माय चित्ता पड्यो । सारा सोग हिह हिह हम्बा लाग । वो पाछो ऊठ र ज्यू ई बी र नडी भावण लागी घर पोसी बोलणियो बिच्च पड्यो । बोली पांच निरम खलास’ राव केरु’ भा कर वो पाच दिरम बी री हयाळी माय मेल दिया ।

हमक बी सार सू भायी घर दोयू हाथा सू माय जागा घावी कियो घर बी र गाल में भावरा तीखा दात गाव दिया । हम बोलीगर मजीक प्राय धा न भळगी करण लागी पण वो टस सू मम नी हयो । छोरी र गाल सू लोई छिन्न लागयो पण वा मूण्ड सू चुकारी तक नी कियो । बोलीदार बी सिपाई सू बाधिया प्राययो । भीड म घक्कम मुक्का धेण जागा घर बडी मुमकल सू बी सिपाई न उठ सू भळगी कियो ।

सन्तोत री बोली लगावणियो बूढ़ो सिपाई भगडी बढनी देख बोली ‘सो दिरम । बोली खतम करो सिरगार ।’

‘सो दिरम भक, सो दिरम दा, सी निरम ती ।’

बी री इतरी कणी हयो घर वो माथ्यार कस र भेक मुकही बोलीदार र जवाह ऊपर धरियो । बी रा चार दात भेक साग बार उठ्ठन पड्या घर मूण्ड बार लोई दुल्लण लागी । दो सिपाई बी मोठ्यार न पक्क र लेवग्या । सूनी सिपाई बी छोरी रा दाम चुकाय, तम्बू सू बार ले भायो ।

घोडी दूर भन्धारे म वो बी छोरी री हाथ पकडिया प्राग बढनी रयी । भक घोरें री भानी लेय, वो बी छोरी न नीच बठण री हुकम दियो । छारी धोरा माये सीधी चित्ता सूपगी घर पली बार बोली ल भाव था ल इ र साथ ई वा घाघरी फाड र फक दियो ।

बूढ़ो सिपाई माथ ऊपर सू कूल्हो खोल बी र सगीर माथ भेढायो घर मठी उठा खर र होळ सू बोली ‘चम्पाडी होस मे है क नी ?’

‘ब्रुण चम्पाडी ?’

‘तू

‘म्है चम्पाडो नी । म्है मो दिरम री राण्ड ल भोग मन, ल गाव खाव मन मा न’र वा बी बूढ री हाथ पकड भापरै कानी खबिषी । बूढो भन्कै सू हाथ छुग’र भेक घपड वीं र गाल ल सै रमोद कदो । घपड लागता ई जाण वीं र बिचळी चमकगी । वा ऊठ र वँठी बोला ‘वाई चावई तू म्हासू ? मार न मात खावणा चाव ? तो ल मार नास ।’

बूढी बी रै माथ ऊपर हाथ फेर नै बोल्थो बेट्टी, म्है गज हूँ गज ।’

‘तू कुण भायो म्हागे बाप बण’र ? खरीदार । खरीदपाई मात न भोगण री सरदा नी तो पछ क्यू मयाया छी दिरम ?’

‘चम्पाडो ! क्यू, भेजो मजू ठिकाण नी भाया त्पारळो ? पूनम नै तो ओळान ई ?’

‘पूनम ? कुण पूनम ? म्है तो मिरफ तन ओळखू, लै खाव मनै, खाव । भाव म्हा भाव । मोमज घणी सटाव कोनो ।’

हमक बूढी तणा र बिसरकी कापड घरी ।

‘होस म भावै कै नी ?’

‘मार ल तामजी मा न, मार ल, मूजा मोलिया ।’

‘चम्पाडो ! होस ॥ भाव ।’ हमक बूढी बोडो बडक’र बोल्थो ।

‘होस में ई तो हू’

‘नी मोई तू होस मे

‘तो तू ने भाव मन होस म, वडो भायो बापडो बड ।’

‘चम्पाडो ! वो पूनम तामज कारण मरग्यो ।

‘ठीक हिथो मरग्यो तो पाप कटयो

म. भागी’ तग भाव र बूढी उठ सू श्हीर हेण लागी ।

‘वाई कयो या ? पूनम

‘हव, पूनम मरग्यो

‘नी नी कूड मत बोली वो नी मर सकई । वीं नै कोई नी मार सकई ।’

मरगी मरगी मरगी । कैबूई क पूनम मरग्यो वो ओर नेय’र शायी ।

हमक वा छोरी बूढ रा पग पकड लिया नी, भूठ मत बासो’

‘भूठ नी, साव साव मोई । वो कवळ-पूजा करी पारै खानर । घर ३

म्है फाई कियो ?’

‘कियो फाई ? हमै करई पई’

‘तो म्है फाई करू ?’

‘मेघ सू भाव जा



केत भागू ?'

'इया सू बीं सामल घोर नै पार कर, भाध कीस, पच्छम मे जाइज । ओय अक घोरो भरू भावला । बी र सार सार दो कोस तिस्रुवाद कानी जाइज । ओय अक ढाणी घौई । ओय तन अक लुगाई भर अक साण्ड मिल जासी । बी रैन दन जाय पूछजे भाधी रेली, भाधी चून वा लुगाई जे पाछी पडूत्तर देव भौव, भाडगो, डेरा सून तो बी र साग साण्ड ऊपर बठ वा ले जाव ओय जाइज परी ।'

'पण पूनम ?'

'अरे पूनम री धा पला खुद नै साम्भ'

पण पूनम बिना मोमज जीणु री सार ?'

'अरे हा बी सू बीं मिळा दसू । जोवती बठीई ताम्रजी बाप ।

साच ?'

'हा हवै, हमे भाग अक सू'

'वो बूढी आपरे ऊपरला गावा उतार, चम्पा न पशया घर नकली दाढी रा केसा नै खाच अलगा किया । चम्पा मुळक बी । बूढी, चम्पा रा डीगा केसा न कतर न थोडा मोछा कर लिया घर वां री नकला दाढी मूछा बणाय चम्पा री मिनसरूप बणा दियो । इनरे ए ई अक बीजी सिपाई अक छोरी न लिया उठ पूगी । या छोरी बी अली पूररी घर जोध जवान हो । ई र तरीर मायै कोई बीयरी ई नो हो । पण, दिन भर ऊमी शवणै र कारण सूनग्या हा । मायै र डीगा केसा सू या आपरी रसकृपिया न ढापी घर दो यू हाया न साणळा र भाडा देव साज छिपावण री अणुती कोसित की हो । ई छोरी घर अक सिपाई नै थोड भाग सू पाना देल बूढी पूछियो कृण ?'

गज रा थोडा सिपाई पडूत्तर दे उठै ई रकम्भो ।

दौरा क सोरा ?' बूढी पाछी सवाल किया ।

देवी र दारु भरद र लुगाई

'भाव म्हारा भाई

वा सिपाई बी छोरी नै साथ वृत् न सूपदी । सुत्तर ऊपरला गावा बी नै पैराया

बूढी, बी न नांव, जात, ठिकाणा इत्याद पूछिया । पैला तो वा सक सू की बोली कोनी । पण जद बूढी बी न पूरी तसल्ली करादी के वो बी नै मुगत कराय, बी र घर पूगाय देमी तद वा जोर जोर सू रोवण बूवणी । बूढी बी र मूण्डे भाडो हाय देव चुप करी घर मायै हाय फर, बोल्थो बंटी । ए अज हौं अमल भाटी । ताम्रजी भाभा हौं, दुममण कोनी ।'

हम वा छोरी भासू पूछ'र दुसका दुसक बिंदीही बोली 'हू घटियाळो रें  
धुतरसिंग री डोकरी भौई ।'

चुतरसिंग की री ?

वरजाग री

घरे जद ती सू धाट घाळां री भाणजी भौई'

हयै

'बो की नाव भौई त्यागळै मामे री ?'

सावतो'

'हाँ, हाँ, घोळख लियो । हमें याद आयी, सावतो । हाँ, बो भेक'र मुलतान  
री सजानो छूटियो हूँ । बोन बादर भौई छोरी साधनो मामी ।

छोरी बाबयोही ही, बोली म्है वठ जावू ?'

हाँ हाँ घरे म्है ती तनै बँठवा री जी कबणो भूलगयो वेटी बूढ री घाँसया  
पळगळी म्हणी ।

'हम किकर मत कर वेटी, भेक सू दो जेवी । घा कँ'र बो चम्पा कानी  
मूण्डी कर मुळकियो । चम्पा छठ सू ऊठ'र बी छोरी सू बिपती भाय बठगी । छोरी  
डर न थोडी लारै रिंगसी । चम्पा बो री हाथ पकड र खाकी घर भापर लोळ म  
बी री माथी पटक दियो । छोरी घबरा र ऊठण लागी । हम चम्पा हाती । बोली  
'पारती, हम छुडावणो भुसकल भौई ।'

'कृण ? च छारी भचम्ब मे पडियोही घूर घूर देखण लागी ।

हँ

चम्पा

'सो चुप---'

बूझी घेजानी मूण्डी कर मुळक दियो । बो हूजोही सिपाई, केसरी ही ।

सू कर, इ भेक रात मे वे दो-यू घर बारा बेली, सोळा छोरियां न भेक । त  
रा दाम चुका र मुलतान र खेदे सू छुडाय लाया । या मे सू पाच मात री इज्जत  
लूटाज चुकी ही । की रें ई साधळा म सू लोई टपकती ती की रें ई गाना सू, की  
रें ई पूरै सरीर माथ दाता सू जियोडा घाय हा ती की रें ई टट्टी रें मारग सू लोई  
बवतो । भेक छोरी सो इत्ती बुरी तरिया चिंगदीजियोही हो क बलाँण नी जियो जा  
सक । गज री टोळो रा पाच आदमी पणी चुतराई सू याँ छोरिया न दुधमणा र  
चुगळ सू छुडाई । इ सारु बा नै साम दाम दण्ड भेद सग भपणावणा पड्या ।  
याँ सग छोरिया न सिपाइया री पोसाकाँ परा र भेक ~~को को~~ बो-नो र हिसाब सू

बठाय मुलतान रै डेर सू बार निकालण री उपाव बी गज, भापरी घुतराई भर हुसियारी सू सोध लियो । व लोग दखण तिसा र सबसू छेत्त तम्बू में लाय लगादी । लाय लगाय सबसू तेज दीडण बाळी साण्ड माथ सवार हे बेमरी उठ सू आग भागी । भारी भारी पक्की पक्की करता थका छारिया घर या पाच प्रादमिया सांगे गज वा र लार भागी । या र साग पाच सात ऊट मुलतान र सिपाइया रा बी हाटा घर सासो भौं तव पीछी कियो । मुलतान री फौजा र पडाव सू भ सग घणा भळणा भा पूगा हा पण केसरी री साण्ड न नी पक्क सक्किया । अर धेरै री आह लेय गज र हुकम सू बी रा बली घर छोरिया मुलतान रै सिपाइया रा पाच तान ऊटा घर वा र सवारा न घेर लिया । क्यार मेर सू निरघाडा मुलतान रा सिपाई हाथ ऊँचा कर सस्तर नाख दिया । गज यां रा कपडा बी उतरवा लिया घर साव मा जाया कर हुकम लियो के वे प्राण साजा राकणी थाव ती धुपचाप उठे सू मुलतान र डर मे पूग जाव । या लोग रा ऊट बी गज जोस लिया । साजा मरता थ उठ सू पड भागा । छारिया जोर जोर सू हासण लागी । मुलतान री पडाव गठ सू चार कास भळणी हो । रान री छेन्नी घडियां दोरा सास लंबती ही । असमान रा तारा, या री कुबना निरल भव दूज सामी कूटिया काण साया ।

## ( २७ )

दिनुग पला ई भा लोग न नुवा मोर्चा केण हा । रात बाराह घर ला री फौजा पाँच चुकी ही । इ सू बी यवना गै हीमती बुल द घर जीतण री पक्की मरोसी हेगी ।

भाग कूटता ई जुद रा बाजा बाजम्या घर मारकाट री बो ई सिमसिलो पाड़ी सरु हगी । घर मोर्चे ई पला दो घटा म दोयू कानी रा भिळार हजार सिपाइया री बोटी बोटी नटगी । केई रा हाथ कटम्या । तो केई री टांग कटगी । मरण बाळा म भाज जादा भाटी सिपाई हा । मुलतान री फौज म बाराहा घर लगा न लडता देख भाटिया न कोई अचूम्बी कीनी ह्यो । पण सुपनान री फौजा री दबाव या माथ बघम्यो हो वे डटन मुकाबलो करण री तेवढ लो । भाटी सिरदार यू बी बाका बीर हा, अर हीमत हारणी तो सीह्याई कीनी । बागाहा घर लगा न सामे देख वारी जोस दुगली हगी । वा मे काल सू भाज जाना पुरती वापरणी अर हाथ जादा देज चालणा सरु न्ह्या । तलपारा रा पळका बिचली दाई घटो घटो पडता । तलपारा बढकती बिजळी दाई भरटती । मोटा मोटा जोधा, धरतिया प्रायम्या । बाणा री तो कोई हिसाब ई नो हो । भाभ मे यू बादल सूरज र आडा घाय बीरो प्रकास रोक्ल विणी भात या

बाणा रा बादल तावड न बिच्च इ रोक लियो । जमी मे जागा जागा लाडा र  
मुण सु लाडा पड्या हा । जाणुं कोई माणस न मगोड न आधी धरतो मे  
गाड नियो व्हे विणो मात श्री लाडा दुममाण र आध सरीर न घापर सागै लय  
जमी में ऊण्डा गड जाता । केई कटियोडो मूडकिया धरतो माथ बजातो लावतो  
तो केई कटयोडा हाथ फुडकना निजर आवता । असफडा रा ढेर लागया हा ।  
केई केई घोडे र मूण्ड म चार चार पांच पाच तलबाग फमियोडो हो तो केई  
र सरीरा मे पाच सोंत माला भेर साग ई इण पार मू उण पार निकत्योडा  
हा । आज रौ जुद् खास करी घोडा र कमाल री हो । घोडा केई दुममाण री  
तलवारा पापर जबाडा में भाल र खोसी हो । ई मू बारा मूण्डा चोरीज्या पण  
घोडा लातां मारन बी दुममगां न रगदोलता रया ।

आज रौ जुद् म पाच हजार भाटो सिरदार बीरगत पाई । या रौ इलावा  
भेक हजार घोडा बी रणसत रया । पाच सौ ऊँट घर चार हाथी मारया गया ।  
इत्ती मारी होण व्हेना थका बी भाटिया र जोम घर होमन मे कोई कुमी नो घाई ।  
भेक भक भागळ जमी साल सो सी प्राण गया पण पावण्टी पाछी नो पडियो ।  
बादुर भाटिया रा घड, माथा नाटिया पाछ बी लडता रया । वारी बादुरी दल  
यवन सिपाई दाता हेई आगळिया दबावणा सरु व्हेगा । केई तो या न दल काला  
व्हेगा । केई सस्तर नाल यां साम भुक्या घर केई या न जिन्न समझ मैदान  
छोड मागा । सुनतान खुं छेडी बादुरी पनी बार देखी ।

भाटो रणबाका सार दिन भूला, तिरसा जलमभोम ताई जूझता रया ।  
वारी एक ई धय हो घर भेक ई मत्तो बीर भोम री परम्परा रो व पूरी निभाव  
कियो । प्राणा री आउती देवन बी अ लोग जलमभोम री सत्कृति घर घरम न  
वायम राट्यो । अडो तो कोई भाटो सिरदार हो ई नी जको क बिना दुममाण न  
चोट पांचाया ई घर खूनी व्हे । सग मुळकता मना मू जलमभोम माथ प्राण  
निधरावळ किया हा ।

सिध्या दळण मू आधी वीर पैला सुनतान री फौजा तशोट नगर री सीव  
म धुमगी । नगर तो मू बी खासी ई पड्यो हो पण दिडिया बिद्धिदिया दाता  
जिमावर नगर म खासी चकर लगयता हा । व पूछडो ऊचो कर घटी सटो  
फाका लगावण लाग । वाराड, सभा घर यवन तोनू री फौजा भजू गड मू  
पापी कोस भळगी हो । वारा बी सात हजार सिपा मारया ना चुका हा । वाराटा  
घर लगा री फौजा आ जावण मू सुनतान खुंरी फौजा बीत कम बटाई । दाद  
हजार मू बी जादा सिपाई घायल घर घघमरिया व्हे चुका हा । मूलतान रा आध  
मू ज्यादा घोडा, ऊट घर बीजा जिनावर बट्ट खबर गथा इत्या मारया जा

चुका हा। पाणी री टकिया पगाला इत्याद सग खाली व्हे चुकी ही। तिरफ ने हजार सिपाइया मारु भेक टक पीवण जोग गुनती पांणी बचियो ही। स्यात इणी कारण सग रगत सू तिरस बुझावण सार तडपा ताडता रया। ममूद न हाल भरोसी नो ही। आज रे जुद्द मे बीरी पलडो मारी रवता थका बी उठुर मन र र न कोई चोर डोलतो व भाटिया न हरावणी इतो सोरो कोनी जित्ती क वो कास ताई समभतो हो।

खाली मगर री सीवा में घुसण ये ई बीरी भावी कटक री सकायो हणी ही। हमै पाणी री कुमी बी भाखर दाई सामी बाय ऊभी हणी। पाणी शिवा तो खाणी पकावणी बी सोरो कोनी हो। बी री पौज र साम काची मास खावण र इलावा कोई चारो कोनी रयो। घड छेरे पाच, दस कोस तक पांणी री टोटी ई हो। तावडो सार दिन आकरी लपियो हो ई वास्त गम्भी भर उमस बघी ही। मरीर जाण तब माथ तळीजण लागो। होट खोरा दाई चटता भर कठ गरमी रे कारण फूलग्या। गळ म धुक गिटणी बी टोरी हेवी। घठ भावन वे घुरी तर सू पमयो। ज्या मुमकिला भर दुबघावा न पार कर सुलतान घठ तक पुग्यो हो वे सारी पाणी री कुमी तार हळकी लागण लागी घठ ठरणी कै पाछी मुडणी दोसू भेक सार हा। पण सुलतान पुरी जिद्दी हो। बडू री जागा पवन सिपाई भक भक कुरली करन ई सतोख कर लियो। भूख भर तिरस सारी मरजादावा पाप पुत्र री विचार भर नखरा न भाव मस दिया। ग सू बार वयत मळमूल र सुगल नाळ री पाणी चसोडण सू बी तिरसा मरता सिपाई कोनी चुक्या। ऊटा रा पेट जोर वा मे सू पाणी निखाळन बी केई जणा तिरस बुझाई। या सारी प्रवसावा रे धेता थका सुलतान, आपर सिपाइया री होसलो बधावतो री। बी री पुरी भरोसी हो क वो दूज दिन बडो फत कर लला। पू, धीन आपर आज सू कई गुणा जादा मुकाबलो करणी पड्यो भर नुकमाण बी ठठावणी पडियो। बी र केई सिपाइया रा हाथ तलवार चलावता भकडग्या हा। पायला री भडू गिणती बी नी व्हे सकी। नी बार उपचार री ई पुरी साधन व्हे सकियो। वे पाणी पाणी करता हा, हार रा सारा सगण सामा निजर भावता थका बी, सुलतान, भाखरी दाव भजमाया पला पाछी मुण्ण री तयार नी हो।

तशीट री घोरा धरती लोई यो र छक दिह्योडी हो। पण इ धरती माथ जीतरा पा रोवण सारु सपण वाळा यवन, वाराह भर लगा तिरस सू हारग्या। धरती माथ बिखरयोडी लोई बी नीच सू भाव देवण लागो।

सठा मोर्चा माण्डण सारु सुलतान, सिपहसालार, जगा भर वाराहा रा सेनापतिया भर खुदरा मोटा भफसर न सलाह री गरज सू मुन्दर तम्बू मे बुलाया। वो दूज दिन हर हालत म गड माथ कब्जो करणी चावतो इ सारु वो खुद हाथ

में सत्तर उठाय भगवाणी करण सारु तयार हो। प्रधान सेनापति जुद्ध रैं मैदान रो नक्सा तयार कर सुलतान सामें पेश कियो। सबसू मोटो श्रबखाई गढ १ ताडण रो हो। इ र एक ई थोळ हो, बाकी सैग दिसावा मे खाई हो। सुलतान, लवार खाती भणसरा न हुक्म दियो क व खाई पार करण सारु तजबीज कर। गढ रा किवाड बी दस माण्ड जाहे लोव सू तयार कियोडा हा। याँ किवाडा नै खालण सारु दस हाथी मुकर हा। इत जाड लोव न काटणी तलवारा भाला भर बाणा रैं बस रो रोग कोनी हो। किवाड दो हयण ऊचा घट डेढ हाथी चढा हा। पर बोदी बा श्रेष्ठम साधो हो। ई वास्तु बी रो सई ऊचाई रो श्रदाजी लगावणी प्रसन्न रो काम नी हो। परकोट रो भीना सपाट हो। खाई डाकुर या भीना कन पाँच्या पछ बी भीता माथ चढणी। सारी कोनी हो। ऊभी भीता चढण भर डाकण साह खास रूप सू तयार कियाडा सिपाई हाथ भटक दिया। वान ई बात रो बळपना बी नी हो क ग्रंथो सीधो भर ऊचो भीता बी चुणी जा सकै।

रात दो पीर दळ चुकी हो। सुलतान खुद सेनापतियों न साथ लेव मौकै रो मुमायनी कियो। शेर तो बी रो बी प्रकल चकरीजगी। वो लोवारा सिलावटा भर खातिमा न हुक्म दियो क कियो तरें सू भीता माथ चढण रो उपाव कर। सिलावटा १ हुक्म दियो क से मोटा मोटा सिरिया ठोकण मारु निसरणी माथ चढेर भीता फौड भर वा मे मजबूत सिरिया रोपै। या सिरिया रैं घासरै रस्ता भर निमरणिमा लम्का'र सिपाई गढ रो भीता ऊपर चढे। पण भी काम इती मोटो भर मुमकिन हो क हजार बारीगर, भर मजूर मिळी बी रातोरात नी कर सकता। सबसू पली मुसोबत ती खाई १ पार करण रो हो। इ वास्तु सबसू पैला वे लोग इ रो घटल काटण में जुतया। दिनुर्म तक बीस साम्बी साम्बी निसरणिमा तयार ह्येगी। प्र निसरणिमा लाइ रो चवगाइ सू बी दस हाथ साम्बी हो। या रो बजन इती भारी बहणी क पचास आदमिया बिना नी ऊच। पैला ती व सोबी क यो न खाई मे उतार द भर बी पर सू सिपाई लाई में बतर जाव भर ग्याई म सू ई निसरणिमा गढ रो भीता रैं घासर ऊभी कर सिरिया ठोकण रो काम मरु कियो जाव। पण शेर निसरणी भापी ऊपर धूड मे दबगी। दांग सोग व सवट खाई पार करण रो जुगत जमाभी। सुलतान वन समचार पुगजा ई वो थणो राजी र ह्यो। आज पैलढी बार भी रा सिपाई बी र होटा ऊपर मुळकण देखी।

## ( २८ )

भाज भाटियां री दिन बीन दोरी ही । भाज फूटता ई रण रा बाजा भाज उठ्या । घमासान जुन ढिङ्गो । भाज रै जुद्ध री बखानु स्यात सजय बी करण मे चुरू जाती । बयू कँ भाज मोरचा जागा जागा खुलियोडा हा । पूरै नगर री गल्लो गल्लो में गया माथ घरा र सुना डागला माथ बी मोरचा मडग्या । गड री भावली पठियाला में तनात भाटी सिरदार भर भटियालिया सुनतान री रात री सारी कारवाई न या सीला मे सू झाकर देखता रया । इ वास्त वे तात रा ई भटिया चेताक्षी भर वा मे कद सू तेल भर पाणी उबल उबल र बार दुल्लण लाग्यो । तीर-दाज लोग बाखा रा नुका सीला कर, वा न जर र बोळ मे भिजोव न सुखावणा सरु कर दिया हा ।

गड र बार भाटी फौज सिरफ दुसमण नै उलझायोडो राकरा माह ई तनात ही । बाकी भाज री दिन तो गड रै भाय तनात भाटी सिरदारा भर भटियालिया र किरतब दखावण री ही ।

बारै, भाटी सिरदार दुसमण न चूर छका छका र फोडिया । कदई वारा घोडा घरा री छता माथै बूद र पीच जावता ती कदई उठ सू ई छलांग लगा'र दुसमण र घोडा माथ बूद पडता । दुसमण न जागा जागा खाच म से र मारया । पंदल सिपाई ती भठ की काम रा ई भी हा बयू क व ती सपाट सू दौडता घाडा र पगा हैटै ई किचरीज नै चटणी बख जाती ।

दुसमण, खाई पार कर गट री भीता म सिरिया ठोक्ण री तयारी म ही । निमरलिया र सार कीर् पाच सी सिपाई खाई नै पार कर परकोट री भाने सय सिरिया ठोक्ण मे मदद करण लागे । नगर मे सू पदल सिपाई भाग भाग'र भठ पीचणा सरु भिया । यू कर तकरीबन हजार, दो हजार सिपाई परकोट र भोट घाय ऊभा । श्री मोक्री ठीक देख गड र भाय तनात तुगामा पनाला में सू उबलती उबलती तेल भर पाणी कूढायो सरु कियो । तदातद पनाला नोच पडखी सरु दो । भर परकाट रै सा'र ऊभा सिपाई या भल्ला हे भल्ला करता करता धडाधड खाई मे जूदणा सरु हिया । केई पूरे तरिया बलिया । कोई री माथी भर मूण्डो बलियो तो कोई रा हाथ पग । सग सुधबुध खोय भागणा सरु भिया । पख भाग न जावता कठ ? भाग तो खाई ही सो धबाधब खाई मे जूदणा सरु हिया । भर उठ पडिया पडिया सिसकता रया । केई निसरणी सू खाई पार करण री मोबल लागे । इतर म ई ऊपर सू भाटा रा गोळा पडणा सरु हिया भर निसरणी समेत बी माथ ऊभोडा सिपाई खाई म घडाम करता पड्या । वा रा माथा फाटग्या भर लोई सू

सारी देशी सिनान कर चुकी हो। खाई र दूजी कानो रा, इमदाद सारु दुखडिया तेन्ग न दीक्षा पण या र पाछन फोरता ई या माथ बाण भर खाण्डा रो बिरसा सरु व्हेगी। इण भांन भाथ मू आन। तो घायल व्हे, धूड चाटण लाग। कियो रो मूक्का खण्डे र साग जमीन म गढगी तो कियो रो हाथ हवा में उछळग्यो। की सिपाई मरता गुढता, लुकता छिपता जाय दर्न म सवर करी। उठ ॥ इमदाद सारु दूजी दुखडी दोटती खाई पण बी रा बी मस्तर काम नी घाया। वे ज्यू ई सामा घाता जरीली नोक बाळा तीर वा रें सोन म भाय सुयता। सुलतान रो फौज म तलकी मचग्यो। सुलतान रा सारा सुवना खुर हेगा। वो भेज तरिया मू चिनवानो व्हेगी। वा थोड भायें सदार व्हे उण दिसा म जावण लागी। बी रा भफमर बी न ममभायो, ती बी सुलतान नी मानियो। पण थोडी घाग बघता ई मढासड घाठ दस बाण बी र मरीर सू भेक घागळ भागें मू निकळण लाग। भेक साण्टी बी रो पाग उडा लयग्यो। सुलतान उलटा पण पाछो डेरें भायें पूग। सुलतान बाकी बफियोडो फौज रो दुखडिया न नगर में जोरदार घावें सारु व्हीर बरदो। थोडा कम पडता दल वो लखवर गघा बी सवारी रें काम मे ले लिया। डेढ दो हजार भाटी सिपाई सार नगर म तलकी मरावोडा हा। सुलतान रा तीन हजार सिपाई पला सू ई वा मू मोरबी ले रया हा। हूमें दो हजार सिपाई भरु भाय पूग। भेक भेक भाटी तिरदार न चार चार गवन सिपाइया घेर लिया। जुद् रो सन मरजादावा त्याग, छळ कपट र जरिय जुद् जीतण रो होड लागला।

दिन छळण मे भेक पौर बाकी हो। पण तकरीबन सारा भाटी तिरदार बीरगत प्राप्त व्ह चुका हा। इ वास्त दिन रें चानणें म ई जुद् खतम व्ह चुकी हो। रीस भरपा जवन, नगर रा कारीगरो घर कोरखी क्रियोडा घरा न घुडावण लाग। सारा मिन्दरा रो भेक भेक खण्डो छळगी कर मिन्दरा रा नाव निसाण मिटा गिया। पण गमर म मिन्दरा र नैडो, बफियोडा दो ती ममोता न देव बान भबघ्नी व्हिणी।

सुलतान जाणतो हो क वो भाज रो जुद् जीत न बा की हासन नी कर सकियो है। बी रो गढ नै भाज रो भाज पत करण रो मनसूरी भाटी म मिळग्यो। मू वो भाज र जुद् मे सुलतान रा ई जादा सिपाई मर घा मया हा। भव घी न खुर पला रा भगजा रो भरोबी छळग्यो। वो भाटी तरिया जाणतो क मद्ध फने भागी है। तासी रात गया वो नुबी उगाव सोचतो रयो। भाज बी नै कोइ बात रो सुघघुघ नी ही। वो भाज नी तो वज्र ई कियो नी रोखी ई खोलियो हो। हां भेकाध घूट पाणी जरूर पियो हौ। वो सारी रात पण्डाल में घूमती रयी घर सोचनी रयी। वा रो घाघी मू जादा सगती, रसद घर फौज खतम व्ह चुकी हो घर भरु बी रें की



हार्य नो लागी । गढ जीतण सारू जित्ती नागत री दरवार ही वित्ती तागत ती बी री पूरी फोज म बी नो ही । एण सुलतान फन बी री हीसली घर निमाग ध दो ई चीजां ती अने अणमोन ही ज्या र भरोम वो पजाब घर मुनतान फनै करिया घरव म सिक्रो जमायो अर भाटियानगर न फन करण रा सुपना देखती ही । दिमाग रै बल मू वो अर बात घडी घडी सोचण लागी क जुद् लागन मू नो जुगल मू जीतयो जावै । भाटिया मू तीन दिन रै जुद् म बी नै केई नुवा अनुभव धिया घर वो मन ई मन भाटिया री तागत, अटकल घर जुगत री तारीफ करण लागी ।

छाई मे पढपा सिपाइयां रा टमका घर सिसकारा बा र जाना म र र न पढता एण बा न बचावण म वो साधार ही । अठो उठो बिचरी पडो लासा र भेली कर बा न बी छाई मे अर कानी फन बी माथ अर अर मट्टी धूड मैग बचियोडा सिपाई घर सुलतान लुग नासो । इ बिच वो अटकल सोचती र पो । भावण वाल काल री छडीक म, वो भाइया म ई रात जाटनी ।

## ( २६ )

गढ र माय घासरी जुद् री जोरदार तयारिया सारू रहेणी । तिन उगयी एण गढ री प्रोळ ब द ही । सुलतान री फौजा घडी घडी एण रा बाजा बजावती रीयी एण विरपा । सुलतान री फौजा फेर छाई कानी बधण लागी । एण अठो न भाग बधता बी माय बाणा अर लाण्डा री बरखा हेणी सर रहेणी । सुलतान फौजा न हुकम दियो कै वे विरपा प्राण नी गमावै अर गढ री प्रोळ तोडण मार तागत लागवै । कोई दो हजार सिपाई प्रोळ तोडण सारू पूरी तागत अजमाई एण सारी मनत घर अटकल बेकार गई ।

दोपारी ठळती निजर घावण नाभी एण गढ री प्रोळ नी मुसकी । सेवट सुलतान सिलावटा अर दीबर कारीगरा न हुकम दियो क व प्रोळ र माचै री फरस तोड । इ काम म सिपाइया न इमदाद करण सारू हुकम दियो गयो । सिलावटा अर सिरफ दो हाथ फरस खोद सकिया । एण गढ र माय घुसण सारू अर कोई मारण निजर नी आयी । सुलतान रा सिपाई, पाणो सारू त्राही त्राही मचाणी । की सिपाई मसीता म नमाज पढण री नीत सू गया न वा नै, अरकासक याद प्रायो क मसीत र माय कूवो हेणी जोइजै । ओ विचार आता ई वे भावर अफसारी न बतायो । पाणो री सबा मै छडीक ही । ई वास्त मसालां घर राख लयन दो तीन ओ सिपाई अर सिलावटा पीचया । व पूरी मसीत री फरस खोद नाहयो एण कठ ई कूवो निजर नी आयी । सेवट छार छायोडा वे पाखती ऊओ अर कोटडो न

धुमने। घट वान बेर री धनाए ला'दी ई सू वारी भासा बधी अर वे दस गज रे मड छे' जमी खोदणी मरू की। दो हाथ जमी खोदता ई तीन चार सिलावा निकली। या सिलावा भाये हथौडी मारता ई थोथ गूजण लागी। सिपाई हडक सू सिलावा लिसकावण लागे अर इ र समच ई जमी भाय सू रगहीण हवा, हलकी सवाज करतो थकी बारें निसरी। इ हवा र लाता ई पाखती ऊभा सिपाई कलाद्या लाय नीच पडणा सरू ब्हिया अर पढताई सीधा जमलोक पूगया। या न नीच पडता देख दूजा सिपाई ज्यू ई या कानी भाये बधता अर वा री बी घाई गत व्हण लागी। दो-चार सिपाई नाक अर घांखियां घाहा हाथ मल'र चठै सू ऊभा भागा पण ये बी धरणाटी लाय नीच पडया। तीन सौ सू बधिक सिपाई घटै मर लूना। सुलतान कन समचार पूगा ती बी अंकरु ती घबराव्यो पण दूज ई छिन बी सम्मलव्यो अर पूरी जाणकारी सेवण सारू अक मोटै अफसर न भेजियो।

दूजी कानी की सिपाई अंकर दूजी कुवो खोद काडियो। हम यां लोगारी खुसी री ठिकाणी नी रेंयो। व दोडिया दोडिया यथा अर टकिया डोल अर डोरी ले घाया। गिडगिडी लगान दो दो डोला सू पाणी सीच टकी भरणी सरू की। पण अंकर टकी बी पूरी नी भर सकीजी व कुव री पाणी खुटव्यो अर रेत घावण लागी।

पाणी पीवण साह सिपाइयां री बीड लाग्यो। सग न अर अंकर चुल्ही पाणी, पीवण साह देवण री हुकम हुयो। पाणी री टकी घाय घट में ई बाली छेयी। अर तिरफ दो हजार सिपाई पाणी पी सकिया ज्या न व जोरदार तिरस लागोही ही। ये दो चुल्हा बी मुसकिल सू पी सकिया। परधम बात ती घा कै पाणी बीन पारी हो, दूजी बात घा व पाणी हुनफ सू नोच पट म पूगता इ अडो लागो व पेट रें मांघ काई भाटी कमगो हो। जका सोम अंकर अंकर गुटवी ई दिवो हो वी रा बी पेट फूलण सरू व्हेगा अर पट में जोर सू आंग घावण लागे। बी सू ऊभो पी रवी जावे। व छटपटावणा सरू ब्हिया। दो चार घटा म ई दो पार ती सिपाइयां रा प्राण निकळया। बी लोगी व दम्ना अर उलटिया सरू व्हेयी। त्रिगुं सरू सान घाठ ती सिपाई पीन गलग्या। पाणी सू मोना व्हण सू सिपाइयां म गळबट्टी मचया।

वे सोम हर्मे सुलतान न लग करणा सान छिया व बी पादो मुट जावे। व लागो बिना र राव पण बिना पाणी ती अर छिन वा नी रें सक। मुलातन यां न पणो ई नमभावण री कोमीस करो पण व सोव बिड चडया। सुलतान री पूरी कोमीता सोम अर दसम री दुवाई विरथा कई आधी फोड पादा जावण साह भूपया बीच लिया।

साम्ह दळता पूनम आपर साम तीन सो ऊटा माथ पाणी रो पखाला भर ल्यायो भर यो ऊटा न गढ रे पिछवाडे कानी भक दिया । पूनम आपर साम भेक भरु बेली न ले र सुलतान र डर कानी आयो । सुलतान रा सिपाई बी न बन्गी बरणा र सनापति कन पेम कियो । सनापति यां दोयू कानी घूर न देखियो ।

‘वाई नाव हे थारी ? ’ पूनम कानी आगळो उठावता थका सेनापति पूछियो ।

‘पूनम सिंग माटो ’

पूनमसिंग ? ’ सेनापति थोडो गौर सू देखियो ।

‘यन म्हे सायत पैला कठ ई देखियो हे । याद नी आ रयो हे ’ सेनापति थोडो दिमाग माथ जोर देव फेर गौर सू पूनम कानी देखियो ।

पूनम आपरी अटळ सू सनापति र दियोडो सनाण निकाळ’र साम कियो ।

‘हा पाद आयो नलूमी पूनम ।’

हुकम पूनम थोडो भुकर बोल्पो ।

“बाल ! काई सजा दो जावें थन ?”

पला तो म्हे तीन सो ऊटा ऊपर मोठ पाणी रो पखाला भर ल्यायो हू, वा सू आपर तिरसा सिपाइया रो तिरस बुझावो, पख जो दण्ड देखोला, वो भुगतण न ल्यार हू । ’

कठै हे पखाला ?

‘गढ र पिछवाड’

“व कयू ल्यायो ? किये र वास्ते ल्यायो ? ”

‘हजूर ल्यायो तो आप सारू ई ही ’

“ई बात रो काई भरोसो क पाणो पोवण जोणी हे ?”

हजूर ! ’ हुकम फरमावी तो म्हे खु पी’र बतावू ’

ठीक हे थारी सनाण द, सो पखाला भठ मगाई जा सक

‘पूनम दूजी अटळ सू अक दूजी सनाण काढ’र सेनापति र सामो कियो । सेनापति र इमार ऊपर भेक अफसर, तुरत पाच सो सिपाइया नै साथ ले’र गयो । उठ जाय वो पूनम रो सनाण बतावो । सनाण र समच तीन सो ऊट सुलतान र डेर कानी न्हेर न्हेगा । ई र बिच्च सेनापति, पूनम न आपरै तम्बू मे तेढायो । सेनापति रो मरजोदान सिपाई पूनम रा दोयू हाथ कमर र पूठ बाध र बी नै तम्बू में ल्यायो ।

“हा तो पूनम ! याद हे वा खजान वाळो बात ? म्हे जाणता थकां बी यन उठ सू भावण दिवो आ म्हारी भलमानसत हो । म्हे चावतो तो ”

‘वो तो हज़र म्हे भापे हाजर िहयो है अर भाप चाबो तो मन ई सायत  
वो मार सरो । पण ई पढ़ भाप नै अठ की मिलणी नो ।’

‘क्यू ?’

इ वास्त क खजान रो कू ची म्हार बनै है, पूनम भापरी पाग र अक  
अक दियो अर अक कू ची जमीन मायै पडगो । सेनापति ची न उठाय निरखण  
सागो ।

‘भा चाबो कठ रो है ?’

‘राव र खजान रो

‘तो इवै म्हे घन कतल कर सका क्यू क चाबो तो म्हार हायै लागी ।’

‘म्हे, म्हारी कोल पुरो क्रियो । इवै भाप चाबो ज्यू करो । म्हारी माघो  
हाजर है भा कै’र पूनम दो’यू मोडा जमी मायै टेक’र बठायो अर मरदन भुकासी ।

‘बीत चालाक दोसै तू’

‘क्यू हज़र ?’

‘खजान रो ठिकाणी ती तू बतायो ई कोनी ।’

‘हज़र ! जह आपन मोझजी जान सेवण रो ई उतावळ भोंई ती पछै खजा  
रो लोम छोडो । खजानो ती गड र माय है अर उठै पौवणी सुनतान रै बस रो रोप  
कोनी ।’

‘क्यू ?’

इ वास्त कै गड नै तोडणी, इ भूखी तिरसी फौज र बस रो बात कोनी’

‘भा ती देखो जावेली’

सेनापति सिपाई न हुकम दियो क पूनम न बा रै पालसी रै अक छोट  
तम्बू भाय बडे पीरि मे राखी जाव । दूजोडे बन्दो नै माय लावण रो हुकम िहयो ।

‘काइ नांव है थारो ? की रै बस नै धप्यड मारता थका सेनापति पूछयो ।

रमजान

‘रमजान ?’ सेनापति अचम्बै तू बोस्यो ।

‘हज़र’

‘तू इण काफर रै साथ कीकर भायो ?’

‘हज़र ! म्हे दो’यू साथ घाडा मारिया करा । धाडै र हरेक माल मे म्हा  
दो’यू रो बराबर हिस्सी गिहया करे’

‘पण खजान रो चाबो तो पूनम बनै है ?’

‘अक चाबो म्हारै बन है, वो बी चाबो क्रैदी ।

ठिकाणी

ठिकाणी तो पूनम ई जाण

गढ म जावण री ओट कोई मारण ?

हेला

यन नी मालूम'

नी हजूर ! म्हे सुलतान री वाशि दी हूँ अठ पली दफा घायी हूँ '

'यन नी मालूम कै सुलतान री फौजा अठ जग सह रयी है ?

मालूम है इसी वास्त तो सजानो लूटण री सुभीतो है

हूँ तो लूटियो नी सजानी ?

लूटण सारु कम सू कम हजार घादमी जोइजै । म्हार दळ मे सिरफ पचास घादमी है ।'

'ठीक'

सनापति हुकम जियो कै इ नै अक दूज तम्बू म भारी पीर मे ब द राकियो जाव ।

या सू निमट'र सेनापति सुलतान बन गयो । सारी हगीगत बी न बताई । सुलतान घर सनापति खाती ताळ सत्ता मसवरा करता रया । इतर म तीन सौ ऊटा री काफली पाणी री पखाला ल र घाय पूगी । सुलतान रै हुकम माफिक सेनापति यो तीन सौ पखाळिया नै ब दी अण सिया घर पखाला री पाणी या लोण न पाय तसल्ली करली क पाणी भीठी है । इ पख तो पाणी पीवण सारु उठ भारी भीड लागी । पाणी पिया सू सुलतान री फौज में अेक नु यो जीत बावडियो । सुलतान र हुकम रै माफिक पूनम घर रमजान म सुलतान र साम पेस किया गया । व दोयू गश्दना मुका'र सुलतान न सिजदी कियो ।

'पूनम घर रमजान ! म्हे सारी बात सुणसी है । पण इण बात री काई सबूत क म चाबिया सजान री है ?

सबूत तो चाबिया लापिया सू ई हे सक सुलतान याभिनुद्दोला ।' पूनम बोल्थो ।

पण इ मे राव री चाल बी हे सक ।

सुलतान न म्हारो यकीन नी व्हे तो म्हार बन सू कुरान उठवा सक' पबक रमजान बोल्थो ।

यो सब ठीक है पण म्हे सजानी चावू'

सजानी है, घर भरपूर है, सुलतान । अेक बात आपन बी मानणो पडला क अेक दुसमण दूज दुसमण साथ दगो कर सकै पण अेक लुटेरो दूजै लुटेर साग घोखो नी कर सक, रमजान बोल्थो ।

‘काई मुतलब धारो ?’ सुलतान घोड़ी कटक’र बोल्थो ।

मुतलब धो हज़र के अके मुसलमान दूजें मुसलमान साथे दधो नी कर सक ।’

‘पण काफिर ?’

‘काफिरा रो भरोसी तो म्हे बी नी करू आलमपनाह, पण

‘पण काई ?’

‘खजान रो ठिकीणी घर मारग ई काफिर न ई मालुम है ।’

सुलतान, पूनम न बार लेजावण रो हुकम दियो । सिपाई पूनम नै बार लधयो । हम सुलतान रमजान नै पुछियो—

‘धारी बात रो यकीन करछू ?’

‘आलमपनाह ! यकीन माय दुनिया टिकी है । म्हे आज तक ई काफिर रो भरोसी करतो धायो हैं घर भी अजताई मन बठ ई दधो नी दियो । दरअसल भी काफिर कोनी । ओ अके मुसलमानो रें पेट सू ई जलमियो है ।’

‘किहू बी

राव, गढ़ माय सू भाग चुकी है घर गढ़ अब खाली पड्यो है । खजान रो दखाली सातर की सिपाई गढ़ मे है ।’

‘सबूत ।

‘म्हे खुद राव सू मिल’र पछ घटी नै साया हा ।’

‘वो बपू ?

खजानो छूटण सारू’

‘अब या रो काई विचार है ?’

‘बौधी पांठी में बात तैं हे सकै ।’

पण म्हारी इत्ती मोटी फीज र सांम या खजानो छूट’र ले जा सकीला ?’

‘वा बूबत म्हा न है’

‘तो आज माचमाइस म्हे जावै ।’

सुलतान, सेनापति नै हुकम दियो क बी दो हजार सिपाइयो न ले’र पूनम घर रमजान साग खुद जावै घर गढ़ रें माय पूर’र प्रौळ सोल द । सुलतान खजान रो दोनू चाबियो खुद रें बम्बे मे सेली ।

रात धायो टल चुकी ही । गढ़ माय आज ममाला चेतन नो ब्ही । सेनापति, पूनम घर रमजान नै माय ने’र पूनम रें बत्तापोह मारग बानी धागे बघण सागो । बी रें पाछ दो हजार सिपाई सस्तर लियोड़ा जेठो मायें चाल रखा हा । सुरग रें भूण्ड बन पूर’र, पूनम, सेनापति नै बयो क ई सांमल धोर नै हजारी जावै । सेनापति

र हुकम सू पचास सिपाई तुरत घोरी साफ करण मे सागम्या । थोडी ताळ में धोरी साफ हेग्यो । हम जमी माथे पडी तीन सिलावा न खिमकाई ती सुरग में उतरण सारू पागोतिया निजर आया । सेनापति दो सिपाइया न हुकम दियो क वे मसाला लेय मायन उतर भर भाग री मारग देख'र इतला कर । दो सिपाई डरता डरता सुरग र माय उतरिया । अ दस कदम ई भाग बधिया भर हडबडा र पाछा भागम्या । या री मसाला बुझगो हो ।

‘काई बात है ? सेनापति कहकर पूछियो ।

हजूर भाग तो कोई मारग नो सुक्त ।’

मसाला पाछो जगावी भर मायूम करो ।’

सिपाई बापडा मसाला चेतन कर, पाछा सुरग म उतरिया । इ बार अ बीस पचीस पावण्डा भाग गया भर या न चार पाटा निजर आया । दोयू पला ती भेक मारग कानी ई भाग बधिया पण भाग जाता फेरू तीन मारग फटता । हमें पै पाछो मुडण री मती कियो बडो मुसकिल सू अ पाछा बार निकळ'र सेनापति न हुगीगत बताई ।

हम सेनापति खुद दस सिपाइयां न साथ लेय सुरग में उतरियो । भाग जाता ई, बी न चार मारग फाटता दीम्या । वो चार सिपाइया न साथ लेय भेक मारग कानी खुद गयो भर लारला छावा न दो-दो र हिसाब सू लारला तीन मारग में बधण री हुकम दियो । सेनापति पचासक पावण्डा भाग बधावा भर बी न तीन पांटा दीम्या । वो, दो सिपाइया न खुद र साथ लिया भर लारला दो माय सू भेक भेक न दूजा दो मारग कानी भाग बधण री हुकम दियो । थोडी ताळ सग सिपाई मांय न छठी उठी फिरता रया । पण वा नै भाग जाबण री कठई मारग कानी लादयो । उठै तो मारग माय सू मारग निकळता भर सिपाई घूम फिर न साथ आया पाछो पूग जावती । आ ई गत सेनापति री बही । सेवट वो कायो बहेग्यो भर मुसकिल सू पाछो बार भायो । लारला आठ सिपाइया री बाबड नी लागी । हमें सेनापति, पूनम न कयो क वो असली मारग बताव । पूनम कयो क मायनै जठ बी फाटी भाव उठ डाव हाव र फाट म घुस जावो । सेनापति हम सिपाइया न हुकम नियो क वे ऊँटा न छोड, सग इ सुरग म भेक भेक कर उतर । जद अक हजार सिपाई सुरग में उतर चुका तद सेनापति, पूनम भर रमजान न साथ ले र खुद सुरग मे उतरग्यो । दो सिपाई या र भाग भर दो लार नागी तलवारा लियोडा चालता हा । या लार, लारला भेक हजार सिपाइया म सू की ऊँटा री रुलाळी सारू सुरग र बार ई रुकम्या भर बाकी सग सुरग में उतरग्या । पूनम या न सुरग में खूब छठा सू उठी घुमावती रयो । मसाला पणवरी बुझ चुकी हो । भाग जावता सुरग री मूण्णी छोटी हेगो भर ऊचाई बी

कम रहेगी । इ सारू अब दो सिपाईं मेक सागे, भाग बध सक्ता घर वे बी बैठे र ।  
 पण मुरग रो मारग लगोलग ऊपर कानी ले जावनी । इ सु सेनापति न भरोसी हेगी  
 क वो बड ॥ ऊपर कानी चल् रयी है । सेनापति पाछ मुड'र जोयी तो बी न दस-प'दरा  
 बिपाईं भावना निजर थाया । पाच सात भागे जावता हा । हमें धणो साकडी जागा  
 भावनी घर एक मियाई ई निवळ मक्ती घर वो बी सून न हाया र बळ पर । भाग  
 भाग खुतास रो ही श्री छठ सू साप निजर भावती । नाभी तमवारा बाळा सिपाईं  
 तनवारी म्याना में घाल'र हाया र बळ पर मेक मेक कर नै भागे रगता यका बध्या  
 घर भाग जा'र रुमा रहेगा । इ बिच्वे भागले सिपाईं री मसाल पुम्मी रग र जावण  
 रो मारग तस प'दरा पावण्डा रो ही, इ वास्तै लारे सू मसाला भितावणी बी दोगे  
 हा । लार रयोडा पाच सात सिपाइया म सू तीन र हाया में ममाला ही पण श्री बी  
 म रो बिप्योडी ही । या र खानसू मारग दोसती जरूर ही । पुनम बोल्पी क बी रा  
 हाप खालद ती वो लगती ममाल मेक हाथ म ले'र मेक हाथ सू रंगती भागे बध  
 सक । सेनापति, पुनम घर रमजान रा हाथ खालण रो हुकम दिथी । भाग गयोडा  
 सिपाइया न वो लावलेन कर दिया । पुनम मेक हाथ म लागती मसाल ले र मेक हाथ  
 सू रगडीकती इ खार्च न पार कर लियो । हम बी लार सेनापति बी रंग न भागयी  
 घर बी लार रमजान । छठ पूगता ई पुनम घर रमजान एक सागे मसाला पूक वे र  
 हुकाय नी । लार रयोडी अब मसाल बी गुल 'हे धुकी ही । रमजान घर पुनम,  
 सेनापति घर भाग रा दो सिपाइया र लाता री मचकाय भ'घार में भाग भागया ।  
 सेनापति घर सिपाईं छठ जमी माथे पडग्या हा । पाछा छठ र सम्मळीं बी पला तो  
 पुनम घर रमजान घणा भाग पूग चुका हा । भागे जा र ब मान हेला मारियो । घ  
 वा री सवाज रो पीछो करता, सम्मळ सम्मळ'र ॥ धारे मे भागे बधता घर घापन  
 म टकरीजता । पू करता श्री आपस में ई मेक दुज न मारणा सक 'हेगा । फेरु बोली  
 सू झोळ न पछतावता ।

सेनापति घर पणकरा सिपाईं रात भर, ई भूलमुलइया में चकरी चढियोडा  
 रया । घा रा हुलक सूखग्या । भ'घार मे धणी रचटा लाय या रा हाथ, पण घर  
 पूण्डा छुटग्या । मां त सू कई चिलकी देल बी कानी सपक्ता पण भाग जाय भीत  
 सू मचीही खा जावता । सेनापति मन ई मन पछतावण लागी क जे वो पुनम सू  
 मोदी त कर लती तो बी न पोडा नी भुगतना पडता । हम वो साव मेकलो रग्यो  
 ही । वो जोर जोर सू पूका करण जागी घर भत्ता र नांव री दुवाया देवण लागी  
 पण छठे बी री कुण गुणनी ? सुजतान रा तो सवा ती सिपाईं दोरा सोरा ग'र में  
 पूग सकिया पण छठ पूगती ई आटी सिरदार बी न ठिकाण पूगाय दिया । बाकी रां  
 म कई तो मुरग में ई पडिया पडिया टसक्ता हा । पणकरा सिपाईं तो घुरग सू



निकळ'र खाई में फसग्या । सुरग माय सून भक मारग खाई म ले जावतो हो । दस बोस सिपाई पाछा सुरग र मूण्डें तक पूग सन्या । पण अठि दो सिलावां पाछी घरीजगी ही भर बिच्चै री भेक सिला री ठोड निकळण री मारग हो । बोवली सिला कम चवढी हो । इत्ती साकडी जागा माय सून 'हेर बार निकळणी बौत दोरी हो । अ लोग माय सून घणा ई हेला पाडिया पण अठ या री कुण सुणतो ? ऊटा री रुखाळ सारु बार रेयोडा सिपाइया नै तो पूनम रा भादमी कदका बग्दी बणाम चुका हा भर ऊटा समेत वा न उठ सून आपर सार्गे लेगग्या ।

( ३० )

भामै सामै री लडाई म भाटी हार चुका हा । ई वास्ती वानै गठ खाली करणी पडियो । सुरग र मारग तीन हजार भाटी सिरदार गढ़ माय सून बार निकळग्या । स्वामी श्री, देवी री मिन्दर छौडण न राजी नी बिह्या । राव भर दूजा सिरदार वानै घणा ई मनाग पण स्वामी श्री री भक ई पडसर हो— मनै मा री इग्या नी मिळी । मा री रुखाळी सारु म्हारा प्राण जाव तो म्हागे जीवण किरताय है । पण मनै भरोसी है नै दुसमण रा पग इ दिसा मे नी बच पावैला ।”

गठ सूनी ब्हेग्यो । गठ में मा र मिन्दर री रुखाळी सारु भेक हजार सिपाई लार रया । इत मोठ गठ म एक हजार सिपाई हीग री गरज बी नो साज सक हा । पण मठ किवाड भाटी कदैई रण सून पूठ वेलावणी नो सीखिया । राव , भेक भेक हजार री तीन हुकडिया बणाई भर तीन दिसावा मे सुलतान नै पाछ सून घेरण गे निस्थ कियो ।

मुलतान री आधी फौज सुलतान नै छौड पाछी ब्हीर ब्हेगी । बीरा चार मोटा भकमर सुलतान री हुकम मानण सून नटग्या, भर अ ई लोग दूजा सिपाइया नै पाछा जावण मारु त्यार किया हा । सुलतान रा धणकरा सिपाई ती मारया जा चुका हा की सिपाई सनापति भर पूनम साग खजान री खोज मे जा चुका हा । पाछा मुठण बाळा सिपाइया री सबसू मोटी सिकायत रोटी पाणी री हो । घूडो सडण ॥ रोटिया भर साग में किडकिड भावती । लारला दो दिना सून या लोगा नै, नी तो मास मिळियो नी धापमी पाणी । सुलतान री सारी कोसीसां देकार ब्हेगी । चार-पांच हजार सिपाइया र ब्हीर हे जाणै सून सुलतान री खुदरी फौज रा सिरफ तीन हजार सिपाई सारै रयग्या । या रै इलावा बड दो हजार सिपाई वाराह भर लगा रा हा ।

रात रो पनी पोर निकळ्ळ्यो पण सनापनि बाळी ना घाशो ती सुनतान गर सोच में हूय्यो । वा आपरा कीं मरासैरुद सिपाइया न सनापनि नै जो ए मारु भजिया पण वा न गया नै बी घणो दर व्ह चुकी हां मुनतान हमें घणो सोच में पडायो । घेकर तो वो खुद घाड माथ वठ'र जावण न त्यार 'ह'ी पण बीं गी निजू सताकार, बीं न समभा चुझा र राकियो । अठो प्रवृति बी मुनतान मू वर काडण मार त्यार व्हेरी । पच्छम मू आघिया सहण लागी घर बी रें साग " घूडी तम्बुवा में आवण लागी । तज तोफाण र कारण कई तम्बुवा वा खुटा उरळ्या वनता पाटणी घर तम्बू फाटल्या । घोर अधारी हेणो । ममासा कद की बुझ चुकी ही । आघिया खोलता ई व घूड स खूरीज जावतो ।

माटी इ मोक रो फायदी उठायो घर व सुनतान र डर माथ घावी बोल गियो । पण अठो म धा'ी हो के हाथ मू हाथ नी सूम्तो । इ वास्त माटा मिरगार बीत सम्मल सम्मल र भाग अधिया । हडबडाट म यवन सिपाई अठा उठा भागण लागे । सुनतान इ नुबी आफत मू घबराय्यो पण वो हीमत मो हारी । वो फीन न हुकम दिपो क मग गड री दिसा म भाग'र मोर्चा जमा लेव । सुनतान र हुकम गिया पला ई निरा यवन सिपाई गड वानी भाग चुका हा ब्यू क बी दिमा म भागण म ओ ताफाण बी बा रो मदद करतो घर लारें मू घूटो आवण र कारण घोडी-पाडी ताळ मू आघिया खाल र देख्यो जा सवतो ।

इ बिर्ख भाटा मिरदार सुनतान रें खजान री पटिया तर पूग चुका हा । उठ जम'र तलवारा कटकी पण यवन सिपाई घणो ताळ नी टिफ सजिया । सुनतान घोडी ताळ पला भुज बी गज वाना भाग चुकी ही ।

पण पुनम रें साग गयोडा सिपाइया माथ मू का' पचासे" यवन सिपा", मम पांणी री निकासी रें मारण मू गड म घुमया । व खासा ताळ अठा उठी द्यिरता फिरता रवा । गड मायला हजार भाटी मिरदार जाणता हा कें सुनतान र वाप बी गज न नी तोड सकें इ वास्त व निसग दादु बी न सुपया । दम बीम सिपाइ निगराणी सारु जरूर जाणता हा ।

गज में धुमयाडा अ पचास यवन सिपाई चार पांच भाटी मिरगारा माथ सेक मार्ग घावी बोल'र वा नै जमलोव गैवा दिया । हम व घेकर तो यजानो दूरुत र सोम मू मिलर घर मोना वाना पग घगिया पण अठा न दखररा भाटा सिपाइया न देख म उठ मू चुपचाप पाछा व्हीर व्हगा । हमें थ गड गी प्रोळ मोनण गी मनी जियो । जग म प्रोळ वन पूण तो मायन मागोडो साकळा दखन मयमग्या क व पचास घोड सो मिनाई बा भेळा व्ह जाव तो यां साकळा न काडखो पारी रे । पण देह बी घ मोन प्रोळ खोलण साट खापी माथाफाड वस्ता दैखत ना तम्बुवा री

उवाजा सुण च्यार हाथी भठी उठी सून निकळ ग्याया । अकेर तो अ हाथिया न देख पवरायग्या । पण थ समझया क या हाथिया र जोर सून ई थ साकळा तोडो जा सक । च्यार पांच जणा नै तो हाथी आपरो फेट म ले र ठिकाणे लपा निया । पण सवट अ लोग हाथिया न काबू कर निया अर हाथिया री मदद सून साकळा लावर प्रोळ र अकेर किवाड नै चोडो सोक खोन नियो । हम या री खुमी री ठिकाणो नी रयो । या म सून च्यार पांच सिपाई, सुलतान नै खबर करण सारु दीडिया । पण बार तो जोर री तोफाण ही सो यां री आखिया बूरीजगी अर थ ज्यू पग भागी बघाव ज्यू पाछो पड । काया अहेर अ पाछा गड र माय घुसग्या । तोफाण र तत्र वेग सून गड भी किवाड बी घुजण लागी । तोफाण री साथ साथ रै इलावा कीं नी सुणीजती । इ तोफाण साम हाथिया री बी ऊमी रक्षण री होमत नी ही । वे बी उल्टा पग पाछा आपर ठाया ऊपर जाय वठा । घोर घोर असमान में हलकी सीक चानगी अहेण लागी । हमें तोफाण री थग बी की कम अहगी ही पण धूडी बरोबर उडती ही ।

हमें अ लोग पाछा सम्मिया । इस जणा अके सांगी गड सून बारें निकळपा अर पडता गुडता अ वासी ताळ पछ सुलतान कन पूगा । या सून आ खबर सुणता ई सुलतान न जागे गडियोडी खजानी मिलग्या है ज्यू वो उछळ पडघी । वो हुकम दिथो क सग गड में घुस जाव । गड न छूट लै, मिंदर अर मूरतियां तोड द अर राव न जीवत न बंदी बणाय ल्याव । राव न जीवता न बंदी बणाय लावण सारु, वो पांच ती मिश्कळ री इनाम देबण री बी कील नियो । सुलतान रा हारघा पाका सिपाइया ॥ गड र हूटण री सुण न नुधी जोम बावडियो । वे भूला तिरसा ई, दूणे जोस सून गड कानी लपकिया । हमें वानै सग सुपना पूरा हेता सजाया । गड री सम्पत छूटण र जोम म, थ सग दुबधावा भूसग्या । तोफाण हमें की धीमी पडग्यो ही पण सुलतान री फीजा तोफाण र वेग सून गड में चढण लागी ।

सुलतान २१ तीन हजार सिपाई हुडाक सून यन् री टेडी मेडी घाटिया बढग्या पण ठठ ऊपर पूगा पछ बी अके दुबधा वा सामी आ ऊमी । खास गड जठ क मोल मिंदर अर मण्डार इत्याद हा वो अके बिसरक परकोट सून घिरयोडो ही अर वो री रूखाळी सारु अके मोटी अर मजबूत प्रोळ अठ बी बन् पडी ही । पला तो अ प्रोळ र अचोडा देणा सारु किया अर या मल्ला अर बिसमिल्ला इत्याद करता रया । यार हाक सून मायला आटी सिपाई बी सावचेत हे चुका हा । वे कमरा वसली अर मूछा र बठु देय करडालट्ट हे, सम्मलग्या । जद यवन सिपाई मचीडा ॥ प्रोल न नी तोड सकिया तद वे सेवट सिपाई र लावा ऊपर सिपाई नै ऊभी कर, गोखडां तक पूगाय दियो । सबसू ऊपरलो

सिपाई जन्म मोलद म पुण्यो तद वो ऊरर फक्तियोई रस्से नै भावडे र यम्बे सू बांधियो। हम ई रस्स ता मदद सू दस बारा सिपाई दाता बिन्व नागी तलवारा दबाय, धबाघब ऊपर चढग्या। पणु ग्रंथ वो भाय धुमण री मारग ब द हो क्यू क ग्राडी भाटे री जालिया लागोडो हो। काई बस नो चालतो दस, म लोग जालिया र भचीछा दवणा सरू किया। ई म दो सिपाइया रा खावा दूटग्या घर ग्रेक र माथ सू भगव भगव लोई बैवणो सरू व्हंगी। वो री मगनाळ खुलगी हो। हवे या न ग्रेक दूजी उपाव सूभियो। म नीच सू भाटे री प्रक गोळी ऊपर मगायो घर वीं सू ठोक ठोक र जाळो री थोडी सो भाग तोड लियो। हम एक सिपाई मांय धुसभ्यो घर वी लार दूजा, चार पलल सरीर रा सिपाई वी माय धुमग्या।

मांय धुसिया पछ धी लोग भागै बघिया। ज्याक मेर निजरा फक्ता यका म सम्मळ सम्मळ र भागै बघणा सरू व्हिया। भै मज्जु ग्रेक खुलें डागळ ऊपर हा। ऊठ सू यान मायली कानी नीच उतरण री मारग मज्जु कौनी लादी। या न ऊपर फिरता नै नीच सू भाटी सिपाई दस लिया। ब नीच सू ई यान ललकारया घर ई र समच ई नीच सू दो चार तोर घर खाण्डा ऊपर घाया पणु म लोग धी सू फेन बचाय दूजी कानी भागग्या। ग्रंथे यान नीचे जावण सरू ग्रेक नाळ धीसगी। या में सू ग्रेक सिपाई, नीचे ऊमा सिपाइया न ह्योगत बताई सो कोई तीन चार सो सिपाई रस्स ऊपर चढ र ऊपर पुगग्या। हमें नीच जावण लाग। म लोग बैठ बैठ मँढक जाल मू भाग बघ रेंग हा, ई वास्त बचग्या। इतरे में भाटी सिपाई वी ऊरर जम र तलवारा कडकाई। यवन सिपाई छाने सू नीचे पींच चुका हा। जद म प्रीळ र मायली कानी पूगा तो चढे तीन भाटी सिपाइया सू यारों मुकाबली व्हियो। घर वे तोनू श्री जो सरण व्हंग। हम या मे सू ग्रेक सिपाई मांय सू प्रीळ रा किवाड खोल दिया घर ई र समची ई यवन सिपाइया री दळ मांय धुसभ्यो। भाटी गिलतो म थोडा रयग्या मक हजार मांय सू तीन सो ती डागले ऊपर मडता हा दो सो दबी र मि दर घर मोला री रुखाळी सरू उठ मोरची लिवाडा हा बाकी मड खुल घागण में दुनमण र रोखण सादू जूमना हा मू जर घमासाण लडाई चालतो रयो घर धाधा ऊरर भागी सिपाई मारिया जा चुका ॥। की घममरिया टसकता हा ज्याी चीय यी यवन सिपाई मिग्गर घर मोला कानी घागे बघ रया हा।

मिन्दर मे स्थायी श्री, देवी री पूजा मे लागोडा हा। बारै रा हाका घर तमवारा री कटाकट मू वे समक चुका ॥ य हमें दुनमण वा तफ पूरण वाळी है। य देवी री पूजा पूरण कर गरमग्रह र बारै धाय बटग्या। गरमग्रह रा किवाड बंद कर दिया घर स्थायी श्री, मातण माथे बठ र देवी री स्तुति में लगीड छेद

दियो । दुसमण मित्र तरक पूग चकी हो भर हमें ज मा तनी भर प्रत्ता बिस मिला गी घुनिया साफ सुणीजती हो । पण स्वामी था निगलप भाव सू संगीत र समदर म गाने लगावण सारु किनार तक पूग चका । हमें वा न गुनर सुरा र इलावा कोई घुनी नो सुणीजती हो ।

यवन सिपाई मित्र म घुसण सार तागत लगावना रया पण भठ भेक भाटी सिंगार पाव रो गरज सामनी । यू कर मित्र र बारें मोई रो न गो बवण स हगी । हमें ॥ घारो बी पट चुकी हो ई वास्त हारचाडा यवन, रात भर १ नवी घारिलियो

## ( ३१ )

राव र पीटण र मौल सू सर मा तनी र गरभग्रह साई भक गुपत मारण हो । हमस कृताई राव पत्रा देवी रा दरसण करता पछ वारा नण फेर की देखता । वा रो मुख साकळ ई पता देवी रो मृत्ति करतो पछ वे णिणी सू मोलता । श्री राव रो नितनेम हो ।

राव न गढ दूटण रो ठा पट चुकी हो । इवें भाखरी जुद् हेणी बाकी हो । राव घापण सारी सगती लगा चुका हा । इव वा न सिरफ मा तनी रो भासणे ही । भर वा नै पक्की भगेगी हो क मा वा री मसा पूरी करला । इ वास्त सारी बाता सोच विचार, व भावी रात म मा तनी र मिदर, बी गुपत मारण सू वहीर हिया ।

क्याह मेर सुनियाड हो । दूतोडा मौला रा खण्डा खुदर सण्डण रो काणी कवण सारु सतावळा हा । कठई भळग सू निवाळिया रो दरद भरघोडो दूक डरपा जावती । जागा जागा हाडका रा रिचा चोर दाई लुक्छिप न घापस मे वतळ करता हा । या र दार रो टीसा सू ऊठीयोडी दुरासीसा, पवन न गि दा बी । इ काळस रो कृळण रात मे विधवा र सवाग दाई उभडियोडी इ नगरी रो रूप डाकण दाई डरा वणी हगी हो । मसाला घर दीवडा कदकी खूट चुकी हो । कोई कोई तारा घण चुनर हा भर व इ डाकण न डरावण सारु दात काटना रता । मळव माथ पडती वा री दीठ सू कोड रा दागा उघड जावना । उभडियोडी वागीचो पाखियां विनां भूता गे हेगे नै ज्यू लागती ।

गरभग्रह रा निवाड बन हा । हळकी सो घड्डी दिया सू निवाड राजा रो मान करण सारु छंदा पडग्या । राव विजय राज गरभग्रह म घुसंर भेक जोत जगाई । अरर वे क्यारु भर निजरा दोहाय न सका मेटण री करी क उठ, वा र इलावा दूजो कोई जीव ना है । वे देवी र सांभी सीस मुकाय न नण मूद लिया ।

अब विषयमा इ मित्र ने तीडण मारु हजारों मोल से जानरा कर, येय घायो है ।

मित्र म सपनागी चक्कर लगावती ही ई आम्हें हलकी सीक साथ माय र एनावा कोर् उवाज नी ही । घर मा माय माय मायत जाना से मूजता रैवण से घात र कीरण है । केर् दिना पछे राव ने अडी सुनियाड घर सानो मिळी ही । निस से मूब बी ग्यात यूनी देतो । यू प्रकृति सान हो । अडी लतावनी क प्रकृति पिर हेगी है, बबतीडी वमत मुस्तावण लाग्यो है । राव माय सू किवाड बर कर दिया ।

ब लठ सू मिहार से मोडो म गया घर लठे सू टाळ र देवी रा बढिया सू श्रिया आभूषण घर वेप लियो । देवी र सिणगार से पूरी सामग्री र साथ अतर पसप, धूप दीप, इत्याद लेवन धाछा गरभग्रह से आयग्या । सिणगार से मोडी मूरतो से पूठ में ही घर गरभग्रह र माय सू, इ से प्रवम करणी पढनी । राव जुदरे हाथा सू दवी से पूरग मूरत से बड चाब सू सिणगार कियो, अतर, धूप घर पुमपा से भळी मैक सू गरभग्रह सुगन सू भरग्यो । राव मूरत रै केसर घर चदण रचायो, अर मि दूर अर काजने बी जागा मर लग्या आभूषणा सू सिणगार कियो अर चूडी परायो । अतर चढाय ने पुमपा से हार चढायो अर गजरा गूथ न देवी र हाथा म परास । धी से दियो कियो धूप की अर माय ऊपर मुगट परायो । पूरी सिणगार कियो पछे व अेक चितराम माडलिये कलाकार दाई भावर बलायोडे चितराम न निश्रियो । देवी से मूरत आण सजाव रहेगी । देवी र हाटा अर नणा सू धूटतो हलकी सीक मुळकण सू, राव न अचाणचक यसोधरा से टस्मरण हे आयो व सीकयो क देवी से मूरत न दख ने ई बिजाता यसोधरा ने घडी है ? व मन ई मन तरक करण लाग व मोघजे सामो यसोधरा दवी है क देवी यसोधरा ? व आपगे आखिया मसळ न भरम सू मुगट रहेण रा चेटा करी पण आट्या कोलता पाछो वा र उलभग साम हो । वा न विचार आयो क अडी बिछिया वारी चित्त कठ ई भटक्यो है । वा ने सनाप रहेण लागो । ई पावतर काम म विघन हल व धवरायग्या । व सीच तो अस आ ई क वा म आ कमजोगी कद वयू अर क्यान धुमगी ? अट्टा रा जागर मैह वयू उरड पड्यो ? प्री कितो भारी पाप है क दवी माथ कोर् माणस आसक्त ह जाव ? वा से मन खिन्न होगो माथो चक्रावण लागो अर सरीर पसीन सू तर रहेगी । वारी आग्या माग म पारी छायण नागो अर आवय म व खुदगी तलवार ग्यान सू बार काडला । जोवण से अक भक दिन वा न भार लायण लागो । वा से माथो नीच भुक्यो अर तलवार तणगी । भागत दिन म वे भारी माथो काट ग्यो ने भरपण करण से पळी तवडनी । बबळूजा से आखरी चरण मो ई हो । वा र निश्च र साग ई वा

री तलवार वाळी हाथ, काठी तणुग्या घर हाथ न वेग देवणु सारु ज्यू ई तलवार ऊपर ऊठी घर अचारुवक सुणीज्यो मों मों ।

हडबडाय न राव अक दम मूण्डी ऊचो कर च्यारु मेर निजर दोडाई । वा न की नी दीस्यो । देवी री मूरत पला दाई मुठकती हो । राव मन म सोचियो ' प्रा, मन री कमजोरी धोंई जी सू काना न भरम न्हैगो घर मन धजू सुद नी न्हियोई इ खातर वो मोघज सकळप सू मन डिगावणी चाव । व घापर निस्व न केर पळो कियो घर पाछो माचो भुजाय तलवार ताणली । केरु वा ई धुनी वा र काना न देव दिया ।

तीजी वार, राव घापर निस्व न पूरण करणु साव माचो भुजायो ई हो क हसी री सुर, वा न केरु रोक दियो । हमें वा न ससायो क ठै नो न्है कोई चमत्कार है क पछ देवी, वा री परीकसा सेव ई । वा न लागी जाणे वा र काना नै काई कवई 'विजयराज' भू ताम्भी पूजा मान ली । इव तन कवळपूजा करणु री अरुत कोनी' । पण वा री विवेक वा नै आ ई तथक्कावनी रयो क मन री कमजोरी र हलावा की कोनी । समार रा जजाळ भरम र रुर में प्रगट घर घादमी र सकळप नै तोडणु सारु मावा घापरा न्यारा पारा खेल रच । इ वास्त साची पारल री कठण घडी में बी, घादमी खरी उतर सक वो ई, सकळप पूरी कर सक । आ सोव वे अकर केरु च्यारु मेर निजर फकी । जाणे प्रकृति बिर न्हैगी । वा र हाथ सू, तलव र छूटणी अक छिन सारु वा री सासा निजरा, देही, मन, विवेक इत्याद बिर न्हैगा । घडी घडी हरक री जीवणु मे भाव जद आ लखावै क स की प्रक माग बिर न्हैगी है, काई प्रकृति काई जड घर काइ चेतन । काई वीठी काई भणदीठी । सग सग्या हीण अंधारी । अंधारी घर अंधाव अंधारी ।

'ओ काई न्हैगी ? इ बिछिया यसोधरा अठ क्यान घायनी ? तो काई पा यसोधरा ई ती नी ही जकी घडी घडी मों मों कवती हो । कै पछ कठ ई चोर दाई यसोधरा र प्रति नेह ती नी लुकयोडी हो जी खातर देवी इण न अठ भेजो । अकर यसोधरा रा दरसणु करणु सारु ई ती देवी न्हैन नी रोक न्यो ?' पण दिये र चानणे म यसोधरा र आता ई वा री ओ भश्म कूडो पडग्यो । यसोधरा माघ निजर पडता ई राव री अकूल चकरायगी । वे दवी र जकी वेप घर भाभूपणा सू सिएगार कियो हो साग वो ई सिएगार यसोधरा र कियोडी हो अेडो सू ले र चोटो तक सिएगार मे कोई फरक कोनी हो । जठ केसर येवडी उठ केसर जठ नदणु चपडियो उठ च दणु वो ई मोतियां री हार, व ई बिछिया वो ई दणी घर वा ई चमक-दमक रती री बी कठ ई वाई फरक नी । राव गौर नू देखियो निजरा गाठ न देखियो । देवी री मूरत घर यसोधरा में, कठ ई कोई फरक वा री तीखी निजर नी सोव

सका । व पही पही देवी घर यमोघरा ने बारी बागी सर निरखी पण वे कोई भेद  
 दोयू म नी कर सकया । अठे तक वं दोयू रं होठा री मुळकण, नैला घर मुळकं रा  
 माव बी साग वे ही । वे इत्ती पुरती सू निजरा दवी घर यमोघरा रं बिर्घे धुमावता  
 रया क रण क्रम म व आ ई भूल वठा क किसी जठ मूरत है, घर कुण चेतन  
 पूतळा ? व चितवशना हेगा । हळक मूलग्यो, सासा री वय बधग्यो व हाफण  
 लाग्या । लिमाड माथ पमीने रा मोती उमरग्या । दिमाग मोचण री प्रवस्था त्याग  
 जठ 'हणी । ज्ञान, माय री माय खींचीजणो सरू व्हणी । वा न मलायी क व हर्म  
 नो घग्ता माये है नो आभे में । व घरर मे भूलग्या है । कोई वा न मार न नाखग्यो  
 है । व बालणी घर मोचणो चावता । पण खुदरी झोळवाण बी भूल बंठा । व  
 बघाटी ह्याय ज्यू ई घरती माय गुडण सागा क यमोघरा रा कोमळ हाथ, वा नै  
 साभम लिया । यमोघरा आपरें भाबळ सू वा रं हवा करी घर पावती पही भारी मे  
 स गगाजळ रा छाटा दिया वा र गळें में गगाजळ उतारयो । छोडी ताळ राव  
 वसुध फेडियोड बवूतर दाई यमोघरा रं खोळें मे बिपियोडा रया । जाणे डाकण  
 सू डरियाडी टावर सासा खोखोडी मा री गोदी में छिपनं दुश्क ग्यो है । जद वा  
 न चतो आयो तो यमोघरा झळगी 'है, आपरी साय पली बाटा जागा कमी 'हणी ।  
 वे, भजता देवी घर यसाधरा म कोई फरक करण म मिसरय नी हा । वा रं मूण्डे  
 सू बीन ई दोरी निकळियो म सो ध रा ' । यमोघरा घर देवी री मूरत  
 दोयू मुळकण लागी । राव बघटपूजा री जात बिसर न इण दुबधा मे झळू मग्या क  
 दोयू म सू किसी मा है घर किसी नेह री नाव ? ओकर फेरू इ री भेन लेवण सात  
 व पलका भूनी, सग इद्रिया नै बस मे कर चित्त न ओकाग्र किसी घर सीजी बाँध  
 सू झोळण री बेण्टा करी । पण थारा ध्यान ध्यान घर तरक सग पीका पडग्या ।  
 हाड मौस री ओक पूतळी वा र माय ऊपर सवार 'हणी । यमोघरा, यसाधरा,  
 यमोघरा वा र क र मे फुरकण लागी, वा री ओक ओक सास में यमोघरा धुळगी ।  
 वा री बुद्धि वा न घरर म सटकाय विमूमगी । विवेक जाणे कुण खोम न लेवग्यो ।  
 पण कुळंबी तशी साभ वा री श्रद्धा म कठई फरक नी आयो । इ वास्त ई वा नै  
 कम सू कम इ बात री चि ता कहर हणी क साध मी सू देवी र घरपण 'हण री  
 कामना रावता यकी बी, वा र मन मे समार री माह कठें छिपियोडी हो ? स्थान  
 आदमी जद भणूती मज्जानावा र निभाव म आपरी मसावा न दबाव ऊपर दबाव  
 देवती जावें ती ओक दिन या तो वो आदमी टूट जाव या पछ इ दबाव सू भ्रक  
 भटो घमाकी यहे क सागे मरजादावा रा किरचा किरचा व्हे जाव । सगार घर  
 समाज री मरजादावा री पसण सुद या मरजादावा र शोधणे नै सजागर कर  
 समाज न घरपण कियाही आपरी ममोसियोडी मसावा री बदळी लेव । छालियोड  
 तीतर दाई, वो तरफती जरूर रैव, पण बदळी लेवणी री वा घर



उड़ण री मसावा भर कोनी । इ मात रै उचट मीध तग्का र जजाल सू मुगत हंग  
सारु वे घापरी घातमा न फेक टगोलण री कोसित करा, पख जद भावनावा भर  
पिरतख री मेळ व्हे जाव तद घातमा री दग्गण फोको पड जाव ।

यमोयरा ! देवदामी ? यमोघरा अक श्रष्ट कलाकार ? यसाधरा ! नह री  
माव ? यमोघरा ! दुख री दरियाव ? यमोघरा रूप जोवन भर कोमलता री सरूप ?  
यमोघरा ! जुद् री घाग म भुळमियोडी भर मस मीजियोडी अक घातमा ? यसाधरा !  
गगा र जळ मू निरमळ भर पवितर ? यमोघरा ! देवी र रूप दया भर माया री  
दग्गण ? समरपण री जागती ओड, मसावा न मार न विजोग री घाग म बळनी  
मारवणी री मून । जाण किता किता अन्कार भर उपमावा यमोघरा तामी फोकी  
पडगी । घडी यमोघरा भर राव विजयराज री ससग अक नुव लाक न जलम द  
सकती पण विजयराज सू मिळिया पला ई वा दवी र चग्णा मे चढ चुकी ही भर  
देवदासी बणागी यमोघरा आज जीवण री अन् मातर साच है, अक मातर मधारथ ।  
वा न याद घायो क रिपि विश्वामित्र री मनका माथ माहित हणो समाधी न  
तोडणो भगवान सकर री मोवणो रूप माथ हुठणो जीवन री साच ही यमोघरा  
मे मदक्षकिय जोवन री चचळता ही । भरद री हिवडी छळण री चुतराई भर चप  
ळता ही । यमोघरा र रूप भर जीवन मे देवतावा र मयम न बी ललकारण जाग  
सिमरथ ही । बी र नणा री घबळीपण भर वां सू अगती नेह कियो नी बी मान  
भर गरब हुळावण जोग ही । बिजयराज कनै सता ही रूप भर जीवन ही सूरता र  
साथ ई तीखी बुद्दि ही । पराक्रम र साग ई तज ही, नेह रै साग रै निष्ठा ही  
घास्था भर समरपण ही, हुठ भर निवळाई ही भर भाव विलास रा सग साधन भर  
सुबधावा ही । वा म सिमरथ र साग ई समती ही, नगर री भाषा सू जावा लुगाया  
वा ऊपर जीव हुळावती ।

×

×

×

पिरतख म ती यमोघरा र हाव भाव सू राव विजयराज माह कोन लगाव  
कै सोम, थठ ई नी लखावती पण पैलपोत राव र साम निरत करता हुया अन् बी  
वी री निजरी राव री निजरा सू मिळी ती बी रै मरीर मे थड्यन्नी दृगण लाग  
जावती भर सासा री घडवणा, गाम्हरिया दाई अणकार बग्गो सारु व्हे जाती । बी  
रै सरीर मे अक उजब उद्वेग सौ भर जावती । राव बी सायन यमोघरा र सरीर री  
इ उदबुद भापा र अक अक धाखर री भरथ समक तवता भर वा रै सरीर मे बी इ  
भरथ री उयेळी देवण सारु गरमास वापर जाती ।

यमोघरा र भावा म समरपण री व्याख्या ही क्रिया नी प्रेम न भरघावण  
री घाडी, बी र साम उलभ जावती भर घाडी री भरथ अणुसमझो ई र जावती ।

वा र मन म स्वामी श्री सारू अयाग अहा ही । राव सारू बी र हिय मे काई ही? इ न र मोवण, समझणुं घर प्रगट करणुं म अत्रलाई ही । स्वामी श्री री मनेह, आचरण घर तपस्या री तेज यमोधरा सारू लिखमण री वार ही । देवा री घरचना, पवितरता री पाया फनायोही बी माय छया करती घर बी नै इम्मरण कराती रैती, कैं छया छोड, तावड में गई नी घर बल जावेली, नुम्मळा जावलो वा देवद सी बण चुकी हो । बी री पराधना, जीवण री भोग, नेह री नागर सिरफ देव र घरपण व्हेणी हो । बी न दखे री पराधना मे ई जीवण री सुख सोधणुं ही । ससार रा मुखा सू वा नी ती घरजाण ही नो बिमुख बी व्हेणी चावती । समय, साधना री मारग जरू ही पण ईष्ट नी । जीवण नै रुखी राकणी बी न घणी घरसरती । वा मुलतान री राजकवरी बी ही इ बात न वा बिसरी कोनी हो । ई सारू राव विजयरज बानी बी रा सस्कार लीख न भे जावना । समय री घांच सू वा माय री माय समझनी वा तिरमी ही अतिरपत घर बिना कोई ठायें ठिकाण वासनावा र समदर म छोडियोही अही किस्ती ही जकी चलाळा रै समध घाय नै बिनारा सू टकरीजती तोफाण में भव जाती फेरू बिनारा सू टकरावती पण बी नै, उबारण सारू कोई तिराकू, कठ ई निजर नी आवती । स्वामी श्री री मानसी ई किस्ती न, ई समदर री छोळा म छपटावण सारू दबावती । मगदूर है कैं कीइ खेवइयी कैं तिराकू ई म बीचइचाव कर ? आ ई तो स्वामी श्री बी नै सरूपीन म दीक्षा दिवी ही कैं भोग विलास री सारी सामग्री, वातावरण घर साधन व्हेता थका बी, बी नै वण चौकण पड दाइ रणी पडती जकी तिरसा भोगा ऊपर पाणी चढल पण खुद तिरमी ई रव । स्वामी श्री रैं खुद र रूप, तेज भरय घर घरुवाग ग्यान घर समय सांभी यमोधरा री अछोटी कामनावां भसासीज न मिसकती रैती । पण भावनावा रैं ज्वाळा मुखा र काटण री भी बी नै बण्णी रती । वा पयबिष्ट ना व्हेणी चावनी पण जीवण री अपूरणता म घर खोललपण री सखाव बी नै खाया जाती । वा जलम सू राजकवरी ही देवनासी नी । राजकवरी सू, देवनासी बण वा भगता घर पराधना मे जीवण री सुख हेरण सारू निहळ पही ही । मुगती री मसा बी नै मुलतान मू बीच म तथीट तक लियाई ।

×

×

×

राव फेरू बीसण मागा दवी यमोधरा !

‘देवा ना राजन् ! दासी । देवनामी । देवता पुरख माटी राजा विजयरज रै करणा री गूह ।

‘की ? ओ की बचै ?

‘मैं ठीक ई कर राजन् ! भाप नारेल पाछी भेज दिवो बी गू ग्हारें काई फाग पड़पी । मैं ती मन ई मन में खेद देवना रैं चड पुत्री ही ।’

‘मा तप्री साची माता श्री । साच मन सून कियोडी पूजा घर भगती रो मा,  
परची धवस देवई ।

“मा म्है जाणू राजन् ! ई साच ई ती मुलतान छोड र ”

मुलतान ?” राव थोड झबूझ सून बोल्या ।

हां, राजन् ! मुलतान सून ”

मुलतान रा लगा यू तौ मोघजा, बरी धीई पग देनी यसोघरा । आप  
माटी राज री सरकति र घरब न बघावण मे जकी सवीग दियोई वो पूजतीक  
धीई ।’

‘राजन् ! घग्ती री घूड न माथ चढाया सून वा किणी काम री नी रथ ।  
घूड जद तक घूड रवै तद तक वा रौ कोई र पग टिकावण री घघार ॐ पण माथ  
चाडियाडी घूड न भेलण री सामरथ बी धरती में ई म्है बस घरती में ई ।’

‘देवी ! आप घेक बळाकार इज मी पण गुणवान घर भ्यानी बी धीई ।’

‘नी राजन् ! श्री आपरो भरम है ।’

अ मोघजी घातमा सून निकळियोडा बोल धीई देवी यमोघरा ।

घातमा तौ दगो बी दिया कर राजन् ! बयू क घातमा रा घणकग निरणे  
बी सरीर र पल मे ई गिह्या कर जी सरीर मे घातमा रो बानी ॐ ।

“श्री आपन भरम धीई देवी ! दगो, घातमा नी, मन भर नण दिया कर ।’

“जद म्है चात्रु ला राजन् ! क आपरी घातमा, आपन घोखी देव ।’

“देवी ! आप म्हैन समभण मे भूल करोई ।’

आप घडी घडी म्हार नाव भाग देवी जाड र मन घिणा जोग बयू  
बणावी राजन् ।’

‘हा देवी ! जे म्हैन श्री इधकार हेतो क म्है आपन बस यमोघरा ई  
क’र बतळा सकती ।’

“माटी राज रा सिरे मीठ भर समर घर भ्यान मे माटा हेणे र काशे श्री  
इधकार तौ आपन है, राजन ।

“श्री ई ती मोघजी दुरभाग धीई क म्है राजा हौ । प्रजा री पाळणहार  
म्हेणी सून म्हैन सैम माणसी, राजमी, घरम भर समाज री मरजादावा मे बघियोडी  
रवणी पडई । खुद र मन री बात बी किणी न बतावना सकी भर पढदो राकणो  
पडई ।’

‘श्री तौ भारी त्याग है विजयराज , राजन ! खिमा करो । सेवट तौ  
लुगई जात ई हू । बोली भर करमा दोभू सून दोसीसी ।’

नो यमोधरा ! जाकारे घर राव र सम्बोधण सू म्हे बोन भारी हे जावू ।  
तूकार मे जकी रस घोंई सनह घर अपणायन घोंई, वा जीकारे म केत ? अडो  
साग व जीवण मे पलढो बार, म्हे धरती माथ ऊभो हू जीव कर व इ भेक तू कारे  
ऊर जीवण निछरावळ कर दू ”

जीवण तो बोन प्रमोल है राजन् ! जीवण ई सबसू माटी साच है ।  
जीवण ई रस है, जीवण ई चेतन घर गत है । जीवण रो गत म ई इ रो रमे है ।  
जद तक जीवण है तद तक ससार है स की है । इ वास्त ई राजन् आपन म्हारी  
प्राज है व एण प्रमोल जीवण नै यू स्वतम करणो ठीक नी । घरम, सस्फर्ति, घरती  
मुलक, जाती, सग जीवण रा अधार है । या माथ जीवण ऊभो है । जद भ छतम  
हे जाव तद जीवण आप ई स्वतम म्हे जाव । पण जद जीवण नै ई स्वतम कर दियो  
जाव तद भ मारा अधार कूडा पड जावै, जद म्हे जाव । ”

घर भा मयू नो यमोधरा, कं जीवण रो अधार ताम्रजे सरोखी भेक देवो,  
देवदासी, कळाकार घर लुगाई जात वो घोंई ।’

‘म्हे तो राजन् ! भेक नीच घर अधम लुगाई जात हू ।

‘म्हे समक चुकी हों कं देवदासी र रूप में, भा भक राजकवरी बोलैई ।  
मुलतान रो राजकवरी ।’

“राजन् ! म्हे आपसू की नी छिपावू वा । केवू वा अर जरूर कवू ला,  
राजन् ! यमोधरा आपसू नेह राख । यमोधरा आप माथ आज सू नी बरमा सू प्राण  
निछरावळ करण रो हूम लियोडी बढी है । आपन याद म्हे तो मुलतान सू म्हारी,  
आपसू सपण करण सारू, भेकर नारेळ आयो हो जी न आपर घटे सू पाछो भेग  
दियो । यमोधरा तो वो दिन ई मर चुकी हो सीमाग सू व दुःभाग सू आपरी ई  
छतरछया म देवदामो बण जीवण रो जीत जोत जागती राखण रो मोह पाछो  
जागरयो । यमोधरा तो जुद्ध रो लाय सू बढती घरती रो दूख र परस सू ई मर  
चुकी हो, जद क वा मुलतान मे हजारो बेकसूर मरदा लुगाया, टाबरा इ याद नै  
भरता देखा हा । राजन् रो नेह म्हार जीवण रो अधार बणयो घर घटे वो जुद्ध  
रो इण प्रलकारी घर विकराळ विनास लोला न रोखण सारू यमोधरा रो काळजी  
बढतो रयो । पण वा जीव भरन रो बी नी सकी । हर घडो वो ई हर हो व इण  
रावणे कळपणे सू पूजा मे विघन नी पड जाव । घरम, सस्फर्ति घर घरता साग  
लुगाई जात वो ज वण रो अधार म्हे । पण या न बचावण सारू जुद्ध ई जरूरी म्हे  
भा कम सू कम म्हे नी मानू । जद जीवण ई स्वतम म्हे जावै तो अधार रो रवणो  
नी रवणो की मर्तनी राख । जठ जीवण है उठ अधार तो आपे ई पनप जासो,  
पण खानी अधार में भा सगती कोनी क वो जीवण नै पैदा कर सके । वो जीवण न

पाळ सक ह्वाळ सकें पण पदा नी कर सक । यसोघरा उण जीवण री रक्ता खातर रोई हो राजन् । जद क सार गढ म जुद् री भूत सवार हो । यसोघरा आपरें नेह र जोर सू बी जुद् टाळण री उपाव करती, पण स्वामी थो री तेज घर ताप इ सताप न दवा दियो । यसोघरा आपर हिवडें री कोर न खाण्डो कर उहत मन पाखी री भेक भेक पास खुद है हाथा सू सोड फकी । बस भेक ई कामणा जीवण री बचियोडो घघार हो क आपर चरणा री धूड बण न नी तो कम स कम आपरी छग र परस सू ई जीवण री गरमास घर मोठास सभोवती रवू । मा तन्नी री किरपा सू आज आपसू मिळखो हे ई नथो । म्हारो जीवण आज आपसू दो बाता कर पूरण रहेगो । हमें कोई कामणा बी मन में रेंवी कोनी । जीवण म, जिण चाज री लगन ही घर जित्ती कुछ बी प्राप्त ज्हेण री ओग हो बी सू घणी सजो लियो । हमें जीवण री मूळ तो हासल हेगो, म्याज री कोई इच्छा बी नी हो, नी है । इ वास्त जे आपन कवळपूजा करणी ई है राजन् । ती ह्यो म्हारो माघो हाजग है देवी न भरपण करदो । इ सू बडो मनमान तो आप मन म्हाणणी बणा न बी कद द सकता हा ? आपन अजु घणी जीवणी है राजन् । राजा घरनी री क्वाळ म्है । मुलतान री राजा तो भिष्ट है चुको है । यवन, पजाब न बी सैस नस कर उठ र गरब न गाळ दियो है । आप वीर जोधा हो । बुद्धिमान राजनीतिक कुसळ राजा घर वयालु दाता हो । इ वास्त, इ मुलक म आप इ भेक जागती ओत हो, जो सू ससार स चमण है ।

यसोघरा, आपर चरणा री धूड माथ ऊपर चढाली है । आपरी नेह बी न मिळग्यो । अरु बी न कोई ओज ? सुरग ती बी न मठ ई प्राप्त है चुको ।

देवी यसोघरा । आप म्है न मोमजा वचना री पाळण करण सू रोकन, ठीक नी करीई ।

‘म्हारा देवता । काई आप या चावी क आपरें बलिदान पछ यवन मळेंछ घर चाराड ई घस्ती माघ विनास करण सारु बच जाव । आपरी यसोघरा री सीळ भग कर न यवन बी री जीवण बरबाद कर द ?

‘देवी यसोघरा । ’ गव विजयराज री म यो पाछी चकरावणी सरु ‘ह्यो घर वे नु बी उळमण में मळूमग्या ।’

‘हा राजन् । सारा हिंदू राजा आपस रा राम द्वेय घर कुळ री घोयी मरजादावा लारें यवना री इमदाद कर है । अ ई यवन या लोवा री इमदाद स आपा र धरम, सस्त्रति घर सुततरता माथ धाडो पाड घर आपा न लूट । इणी वास्त मुलक कमजोर ह्यो है । जीवण री मोल कीडो सू बी गयो बीतो हेग्यो है । भेक भेक जुद् में, हजारो मडल लुगार्या मरें लूटीज, वा री मरजादावा लूटीज धरम

नष्ट है और इतिहास पीढ़ियाँ ही जीवण बरबाद करण सारू, याँ गाथावा सूर रोज जाव । इली जुद्ध में लगा, वाराह और दूजा राजपूत लोग, भापरें खिलाफ घेक विधरमी और विदेमी मुनतान ही पल लियो । बी ही हमदाद करी खातिर क्यू ? क्यू नी घठ ही ई कोई राजा या लोग न घेक डोर म बाध सकै ? विदेमी और विधरमी मू तो जादा नजीक ही गिस्ती घठ रा रवासियाँ, घठे रे धरम, सस्कृति, भाज दावा और धरती ही है । भाप मे ऊजळी तेज, पराक्रम, बुद्धि, राजनीतिक दीठ, मानवी और समदर सूर बी गैरी दिहयो है । भाप या नै भ्रक डोर में बाध नै जीवण ही भापरी सारथकता ही परचो दे सकी ।”

‘देवी यसोधरा ! जे भाप साचांणी मौमजी हेताळू, घोंई ती भाप घेक मडद रा भावनावा नै घाछी तरिया पचाण सकोई, खास कर न बी मडद ही जकी घुन भापरें नेह ही बी घोंई ।’ राव नणा में च माद भर बोल्या ।

‘राजन ! म्हे भापरी भावनावा नै सिर घाँल्या ऊपर राकू और वी ही पूरी सममान करू पण म्हारें कुळ ही मरजादा ही उळ घण करण मे, म्हे बी समरपहीण हू । लगा भापरा दूसयण है । म्हे सभा ही कबरी है । काई भाप समझी क भापसू ध्याव कर न म्हे सुखी रे सकू ला । म्हे राजपूत कया हू । ध्याव सूर पैला समरपण करण न तयार कोनी ।’

उलटी पासो पकता पका राव विजयराज घोडा कठोर सुर मे बोल्या “ती पद झूठी ई नेह ही नाटक क्यू रचा राखी है ? काई तू बी धार कुळ भर जात र लोग दाई पिरणा ओग भर कूही नी घोंई ? म्हे सूर प्रेम ही झूठी नाटक कर नै मारण सूर भटकावण सारू ई ती तू जेय नी घाई ? जाणें ? विजयराज न बी रे सक्ळप सूर डिगावण ही सगती देवतावा म बी कोनी ।’

‘जाणू राजन ! भा सगती देवा मे कोनी । पण मिनस्वजूण ही हाड-मास ही, घेक पूनळी मे जरूर है । पण म्हे भापन मक्ळप सूर डिगावण ही नीत सूर नी, भापसू भील मागण न घाई हू ।’

‘कडी भील ? घेक बिखकया हे न मन डसण ही भील माव रेंया है ?’

म्हे देखी लग्नी ही भील मागण नै घाई हू राजन ! मुनक, दम, सस्कृति, धरम समाज जलमओय ही रक्सा ही भील । म्हे नी ती पच सूर बिछग हई हू ही भापन ई कण्णी चावू । पण भाप जुद मारण सूर भटक रेंया हो । भापन याद है ? भाप घठ इली टोड घेक दिन देव धरम, सस्कृति और मिंदरा ही रक्सा करण ही प्रतिग्या ली ही ।’

हां ! उण प्रतिग्या न पूरी करण र साथ म्हे भी मक्ळप बी कियो हो क या ही ह्वाळी दिवा, म्हे कवळपूजा करू ला ।’

“रुखाळा वठ हुई राजन ! गढ टूट चुकी है । दुसमण भापर मलां तक पूग चुकी है । किल्ली पळ वो घठ बी पूगण वाळी है । भापरी सेना बिस्तरमी है । गट म बचिवाडा भाटी सिरदार, जद आपन नी देखना, तो वा मे वा सरदा, हीमन घर भगतो बंद र सकेला कै वे इ मिटर री घर भा री मुरत री रुखाळ कर सक ? ई बिळिया कवळ पूजा करणी अधरम है कायरता है अणसमभी है हीमन हारणो है ।

“बस, यसोधरा हम नी मत के । मौघजी माघी चकराई । म्हैन की नी सूक्त ।”

राज न केरु चक्रर आषण लागा घर वे जमो माघ लुक्कण लागा । पण यसोधरा, वा नै भापरी नरम कळाइयां र सार सू थाम न भापरी गोनी मे वा री माघी धर, भाषळ री हवा करी । वा केरु बोलणी सरु व्ही—

राजन् ! बस आप घर आप म ई वा सगती है क या सगा सू भिड सकी घर दुसमण न मान दे सकी । आप मे वा बुद्दि है क आप जुद् न टाळ बी सकी । आपन जीवती रखणी है राजन् । यसोधरा सारु नी सही भावण वाळी पीटिया सारु क वे जुद् री भाळ सू नी भुळस । प्रेम री सत्तार बसावे घर दुनभी नै मनेह सू जीतण री सामर्थ्य उपजा सक । राजन् ! अब बात घर बता द क सबळ गिह्या ई सनेह री जीत व्ही । सबळ सू रींग डर । ई वास्त सुख करण री गरज वा म रव । सबळ व्हेणी ई जुद् टाळण री उपाय है समरपण तो आतमहित्या है । भापरी भी बलिदान आतमहित्या ई नी पण सगा री भेळी हित्या री घरपाय है । अणजलमी पीटिया री भी हित्या री घरपाय ।”

‘यसोधरा ! तू म्हैन आज मात देदी है म्हैन धरम-सकट में पटक दियो है । म्हैन काई करणी जीवज काई नी आ सोचण समझण री समर्थ भी तू खोस ली । म्है गजनी रै सुसत्तान सोम नी पण ताम्रज साम हार कबूल करू इण र पला तू सिरफ भीमज मन घर मोह न जीत सकी ही पण आज तू म्हैन पूरण मरद नै जीत लियोई । बुद्दि तर्क बिबक आतमबळ सग ताम्रज साम सस्तर पटक न हार मानतो भौई । अब तू ई म्हैन मारण बता । तू ई चानणी कर ”

‘राजन् ! इसी भारी बम पाळन म्है जीवती नी र सकू ला । म्है काई हू ? आ म्है खुद आखी तरिया जाणू । स्वामी भी सू म्है भी ई गुण हासल कियो है क खुदन मोळख सकू । देवी तनी री आ ई मसा है क आप जीवता रवो । सग देसी राजावा सू आप मेळ करी । वाराह घर लगान वेलो बणावो घर हमेस सारु बिपेसी रा इण मुलक न जीतण रा मनसुवा माथे पाणी केरदी । आप भापरी तागत बढ़ावो कुमळ राजनीत सू रींग पाडोसिया सू आइपो करो घर जुद् री हमेस हमस सारु काळी भूण्डो करो ”

“पण मीघजो सकळप ?”

“हा, आपरी सकळप, लो ! इ न फेरू मजवूत करो !”

मा न र यसोघरा आपरें चूडें माय मू भेज चूड उतार न राव विजयराज र हाथा में खुन र हाथा मू पराई घर बोली इण चूड न घगोकार करी राजन् । माय मू आप चूडाला ! मा चूड म्हारी सवाग है, मा चूड लिप्टी री आदि मत हैं, मा चूड जीवण री परधें है मा चूड सारी मण्डळ है, मा चूड ई मत है, मा चूड ई घनन है । चूड ई प्रमाण्ड घर चूड ई घरती री रूप है । चूड, बळ घर सनेह, मर-जाण घर सनमान गरब घर समरपण है । म्हारी तपस्या घर सनीपणी आपरी ललाळो करला । मा चूड आपनं अस्तवीर आपर सकळप री ध्यान दिरावती रवैला घर इ र सागै ई, कदैइ जे दासी री बी ध्यान घाजाव ती नाराज मत भिह्या । बी न विमा कर दीजी ।

देवी यसोघरा !”

‘राजन् ! आप फेरू मर्ग देवी ”

‘हा यसोघरा ! तू यसोघरा नी, देवा घोंई । मा ! ताम्रजा काई काई रूप घोंई ? मा तू घट घट में विराजें । मा म्है तीन की की नावा मू पुकारु ? तमोट राय ? यसोघरा ? यमोघरा ? त नोट राय ?”

राव पुरा मायुक्त ह जुका हा । यसोघरा रें नणा मू इत्ती देर सकयीडी मासुवा री मोटी पलका रा बाग तोड र ववणी सरू हेगयी । घोडी ताल दोयू बिच सुनियाड बापरणी । मून री भाखर तोडती यसोघरा बोली—‘राजन् ! आप पघारी दूणें जोस घर हीमत मू दुममण न मार भगावी । आप जद जीत न पघा रीला बी दिन, यसोघरा आप मू ब्याव रचावला । बी दिन म्हारी सवाग रात हैला बी रात आप कवळपूजा करीला घर म्है सती हैला । म्है उमर मर आपरी बाट जोडू ला राजन् । उमर ई ते जलम जलम तरु जोडू ला ।”

“देवी यसोघरा ! म्है आपन मा र रूप में देखी घोंई । मा र रूप म ई आप म्हैम भ्यान नियो, मीघज हिहद रा किवाड खोल दिया । म्है इव नी डिगू नी डिगू । इव तू मा घोंई । मा मा मा ’

गरभग्रह में मां मा री लला घुनिया गूजल लागणी । राव, तमवार म आपर अगोठ माय बीरी लगायी । लोई री घर पूरण लागी । राव बी लोई मरय अगोठ मू यसोघरा र तिलक लगायी घर मायी निवाय सारी मगती उडळ दी । देवी तमो री मूरत मू मुळकण रा फून भरल लागी ।

वाक्सी स्यात खुनी सारु आपरी मगोन छेन दियो । दूजा मिदग रा टिकोरा



श्रेष्ठ साग ल नी राय रै मित्र रा टिकीरा साग सुर मिळाय बाजण मरु व्हेया ।  
गायां घर बाछडा रम्भावणा सरु व्हेया ।

पूरव मे माय फूटी घर सोन री मिरगी, ब घणा तुढाय भाग छूटी । क्यारु  
मेर हुवा म सुगन वापरगी । राव विजयराज न परम घान द सचिन्तन री अनुभव  
हियो । वे नण भूत न बी घान द रस मे ह्व्योडा हा । जद बाभ्या खोली ती देवी  
री मूरत नी ही ।



## ( ३२ )

राव, ज्यू ई गरभग्रह री किवाड खोलियो घर एक कटिपीडी माथी माय  
न उछळ'र आयी । साम ऊभो सिपाई बी माय न ठाकर लगाय उछळायी ही ।  
कपाट खुलता ई चार सिपाई राव बानी भपटिया । सो सारी इत्ती बग मे हियो कै  
राव हचरज में पडग्या । वा रै हाथ मे नागो तलवार घजू ही वे श्रेष्ठ दो बार ती  
बचाया घर पछ भूज मेर दाई या क्यारु सिपाइया माथे दूट पडपा । यसोधरा  
श्रेष्ठानी ऊभी, घग घग घुजती ही । वा भीत री सारी सवण ज्यू ई हाथ, भीत र  
मडी लेजावण लागी घर श्रेष्ठ तलवार बी री बाव न थीगती निकळगी । बी र श्रेष्ठ  
शेही री लोपी, पच करतो भागण पडियो घर बाव लटकगी । लोई सू बी री सारी  
देही भरीजगी । वा चकराय नै नीच पडी । ई बिच्च दो मूडकिया खिर चुकी ही ।  
सारला दो सिपाइया रा सरीर बी जागा जागा सू भूवण लागग्या हा । राव र  
सरीर माथ बी पाच सात भाव हेग्या हा । श्रेष्ठ हाथ सू वे सोन सू बबल लोई र  
डाची दियो घर दूज हाथ सू तलवार चलाता रया । राव री तलवार री तीखी घार  
घर पलटमी मार साम, सारला दोयू सिपाई बी नी टिक सकिया । वे जीव बचाय,  
उठ सू भागण लाग । पण राव री तलवार सू श्रेष्ठ री सरीर फाडी है ज्यू  
हेग्यो घर दूजाड री टांगो लटकगी । वे दोयू देवी र भागण लुटाया । हन राव  
गरभग्रह र माय पडिय माथ न हाथ मे सठाय, ओळखाण करी । स्वामी श्री री घड  
बार पडियो ही । राव एक छिन सारु नैण मूद स्वामी श्री री ई मरण कियो । वा  
र नणा ॥ मोनी सिरग्यो । इत्त म निरा सारा भागी सिरदार माय पूगा । राव वा  
मे सू दो सिरदारा नै स्वामी श्री र सरीर री ~~नी~~ री भार सूप दियो ।  
माय स टसकण री उवाज सुण, राव माय गज्जर हुकम ॥  
यसोधरा री उपचार तीन सिरदारा न सूप ॥ मोह  
राव, सारला भाटी सिरदारा न साथ ॥ ज  
रा भोल गूजण लाग । राव घर भाटी ।

बुझा रया । भाटी सिरदार, राव नै उपचार घर प्राराम करण सारु ताकीद की पण राव किली रो नो मानी ।

मुलतान यह चाव घर समीप सू गढ़ म घुमियो पण गढ़ नो राखी पड़यो हो । सेनापति घर पूनम रो कोई बावड नो ही । सुसतार मील मे घुसण सारु मील रो भाना बी घुडवा हो । पण उठ बी न नो तो खजानी ई मिलियो, नो राख ।

मुलतान नै हण बात रो घणी अफमोस शिद्वी कँ इसी मुतोबता ठठाया पछ बी बी र की हाथ नो लायो । राजा सू बी बी रो मुकाबली नो रहे सवियो । मुलतान रा सारा सुपना खूर रहेगा । बी रा सिपाई बी, किल रँ पाली दू डा सू मबीडा छाव घाया, पण वा र हाथ की नी लागी । पैला र सूट्योड घन मान म सू पानी करण सारु, वे सिपाई, मुलतान न ताकीद करी । वे लोग दूज ई तिन उठ सू जावण रो भलाण कर चुका हा ।

रात मुलतान रो कीज रा तीन चौपाई सिपाई गढ़ सू बार जावण सारु नीच उतरया । प्रीळ माथ पुगठा ई जोर रो मार काट पचयो । बेई सिपाई मारया गया घर बेई भाग छूटा । बी सिपाई हकबडावता सा पाछा भाग नै ऊपर घाया घर मुलतान न खबर की ।

मुलतान न आवरे डेर में पछ खजाने रो हवाल घायी घर बी रो जालजी भा साव न बैठयो क जरूर लगा घर धाराह खजानी छूट लियो रईला । तो फुरती सू खबर लेवण सारु अफमरा न बीडाया । पण वे ती मुलतान न लाय न कोई दूजी रक्की ई दियो । गजनी सू समचार लेय नै हलजारा घाया हा । गजनी माथ, कागजर रो तुरक राजा इलेक खा हमली कर दियो हो । गजनवी नै घोरा में फल्योडी जाण, इलेक खा गजनी माथ बढ घायी । जीत न पक्की करण सारु बी चीन र कादर खा री इमदाद सी । वो जहून (घाकसस) नदी नै पार कर, तोफाला र बेग सू भाग बच रयी हो । वा पुगाण घर री, बदली लेवण सारु मोक री ताक में ई हो ।

गजनी माथ इलेक खा रँ हमल री खबर सुण नै मुलतान रँ पण हैरली घरती सिसकयो । वो समझयो क हमें बी रा छोटा दिन आयया है । वो अफमरा न हुकम दियो कँ फुरती सू बूच करण री तयारी की जाव । ई समचार सू खचिपा खुचिपा भाटी सिरदारा री होसली बघयो । भाटी सावधेत रहेगा । वे पला ती सोच्यो क किल में ई जग करु करद पण पछ वा, त करी क गढ़ सू बार निकळियो पछ ई मुलतान माथ हमली कियो जाव । गढ़ री प्रीळ सू मुलतान रो बार निकळणी मुसकिल रहेगी । बार घटा री घमसाण र पछ दो किल सू बार निकळ सवियो ।

व्याह मर मार फाट मच्याडो ही । सुलतान न तो गजनी जावण री उतावळ लागोडो हो ई वास्त वो कियो तर सू भेस बदळ न उठ सू जान बचा न भागो । बी र पला तो भागला वाळा न भाटी नी छोडिया पण बोडो ताळ मू र्वा न पत्तो लागो क सुलतान बी भेस बळ न भाग्यो है तद वे बी री पीछो करता घणी दूर तक लार गया । मारण म सुलतान री जिकी वो सिपाई धक पडियो बी न व घरतो माथ बिछावता गया सुलतान री सारी फौज खतम व्हंगो । पण की प्रफमरा भर सिपाया साथ सुलतान, जीवती भागण म कामयाब हेगो हालाक सुलतान मारण म फोडा पाया । केई तकलीफा उठाई । कठ ई पाळो, कठ ई ऊ माथ कठ ई घोड माथ वो भूली तिरसो दिन रात सफर त करतो, सेवट भाटो राज री सीध सू जीवती भाग निकळण में कामयाब हेगो । बी र साथ रा बी कई प्रफसर भूख तिरस गरमी भर लू सू मर छूटा । इत भारी लस्कर न सुलतान लय न घायो हो , पण जावती बिछिया वो, साव श्रेकलो हो भर प्राणा री रक्सा छानर बी कन सिरफ शक कटार ही ।

×

×

×

इ बिर्च पूनम, राव र मौल म राव न खुदरी जुगन रा समचार देवण सारु गयो तो मौल तस नस हियोडो लाखी पडियो हो । जागा जागा कटियोडा हाथ पगा रा किरवा, चौधियोडा घट भर जान कटियोडा माथा रळता हा । जागा जागा मास रा लोषा भर लोई रा चिंगना हा । वो राव र बी मौल मे पूगो जत वो राव र साग दारु पियो हो भर वा सू वतळ करी । मौल रा किवाड माय सू जुडियोडा हा । वो किवाडा र सात री मक्काई भर माय सू जुडियोडी आगळ दूटगो । वा मौल में घुसियो । माय न सारी चीजा साग ठीड ही । बी न कद सू तिरस लागोडो ही । वो दार पीवण सारु इलमारी रा कपाट खोलिया तो बी न माय उतरता पागोतिया निजर आया । वा पांच सत पागोतिया उतरियो भर जोवणे हाथ र गल कानी मुडग्यो । येथ ई राव री पीवण री मौल हो । वो माय घुसियो । राव री पगरखिया आय पडी हो । पूनम र सरीर में बोडो सी भरणाटो चाल्यो । श्रेक धम बी र मन म घुसग्यो । वा री मायो चक्रावण लागी । वो राव र पिलग ऊपर पडग्यो । लाखी ताळ गया बी न चेतो घायो । पूनम भीत माथ खुदरी छया देख भवरायग्यो । वो भीत माथ श्रेक मुक्की भडियो । भीत खिसक्यो । बी न लागो क वो, भीत र माय घुसग्यो है । वो चालतो रयो । सेवट, वो बी मारण सू देवी र मि दर माय पूगग्यो । साथ, श्रेक लोष ऊपर रातो मुगटो ओढायोडो हो भर दो सिरदार, हाथ में नागो तलवारा लियोडा, मूढा लटकायोडा ऊभा हा । वो देख्यो अकानी शक लुगाई पडी

पढी टसकती हो । वा रै पाखती बठा दो सिरदार हवा करता हा । लुगाई रै सरीर  
सू लोई बवती हो । घोष सगा रै चरा माथै उदामी घर काळम दल, पूनम रो  
काळजी धक धक करण लागी । जाणे कुण धों र कान में वयो 'राव...ईमै...नी ...'  
वा नी नी नी नी कर जोर सू बोबाहा किया । वो रोंग भावा फाट लिपा । वसा  
न लाव लाव न गुच्छा रा गुच्छा ताड लिया घर हाथा रै जागा जागा डाचा भरने  
मास रा लाया, बार लटका दिया । माघ न गरमग्रह र तलपल सू भवीडा व दन  
भगनाळ छोन ली । ग्रेक सिरदार धों नै समभायो पण वो धरुचेन ही । पाटी नाळ  
सू जग वी न चेतो धावो तो मिन्दर सूनो हो । दो पोताम्बर घावणे म छीदा हा ।  
वो दोयू पोताम्बरा नै उपाहा किया । ग्रेक पोताम्बर हट यसोधरा री लाय पढी  
हा । वी री भव बावो कट चुको हो घर वो जागा घोष व्हेगी ही । पूनम जोर जोर  
सू नूका करण लागी 'यसोधरा ' 'यसाधरा ' यसोधरा '

'पूनम ।'

'कुण मीई ? यसोधरा ?'

यसोधरा नी, काता, म्है चम्पा हों चम्पा ।'

है ?'

'हवे, चम्पा, है चम्पा मीई'

'तो यसोधरा ?'

'यसाधरा तो काता, कद की मरी ।'

है ?

'हव ।

'पूनम ।'

'हव ।'

'का ल ।'

'को ? केत ?'

'वा वा सामे इ खुणे वी खुणे चोफर । ह, वीवाई ।'

काली 'हेगी काई ?'

'काली म्है नी त व्हीई पया ।'

घो म्हेन वी नी सुभ ।'

पूनम घालिवा पाड न च्याव भर खोजण लागो । वी न की नी सुभती वी  
री घालिवा फाटी रो फाटी रमो । चम्पा वी रो हाथ एकद'र बोरो—

'हुडी करो हुडी—वो भावई ।'

'की ?'

“काळ”

म्हैत की नो मूर्क ।”

हा, पूनम ! शो काळ रो चक्र अढीई व्हिया करै । शो बाता मे बिलमाय  
नै मिनस नै खुद नै मिट जाव । सों की मिट जाव । पगल्या रा सनाए बी । माख  
रो ओळख मिटाद, शो काळ ।”

पूनमो !”

“पूनम ! म्है इव नो ठैर सकू । मीमजो वादो पूरो व्हियो । इव म्है अक  
पढी नो ठैर सका । तू जा तू जा भागजा ..”

अर पूनम न जद चेतो मायो तद तक बी रो नीचलो माथी सरीर, धूँ में  
दय चुनी ही । वो हाथा न बारै निकळण रो करतो पण बी र चौकेरु घुड जमा  
म्हैण लागगो । बतुळियो बावळो व्हियोडी गोळ गोळ धूमनी, पइड दाई । काळ र  
चक्र दाई । जद तक बी र बाक न घुड नी बूर तियो तद तक वो सगोलग हाट  
हिलावतो रयो । अक धुनीविहीण बोन—

हू काळ सूं फो बीवानी ।”

फस फस कर, होठां सू निकळण लागी । बी न खुँर पगल्या रा सनाए  
मिटता दीसण लागी ।

